मो कहँ रहा महा अभिमाना । मोर लाल सौंदर्य निधाना ।।
मिलहिन दुलहिन सुत अनुरूपा । त्रिभुवन मोहनश्याम अनूपा
सो अभिमान चूर हुइ गयऊ । सुत सो बधू अधिक भल भयऊ।
सब विधि सियाराम शुभजोरी । देति सुआनँद सिन्धु हिलोरी
सिय मुख सुन्दर अधिक लखाई । देखिलाल रहिहैं रसछाई ।।
दो०-यहि प्रकार मनमोद भरि माता करति विचार ।
मुख देखराई नेग महँ, काह देउँ सुखसार ।।

।। छन्द ।।

लखि सासु शोभा सीय मुख तन पुलक हिय हरषित भई ।
निज लाल छवि कहँ वारि कह धनि जननि जिन सियजई ।
मुख देखि चाहति नेग दिय कहुँ खोजि नहिं पावत भई ।
सत इन्द्र भूतिहुँ भूप की कण छुद्र सम मन गिन लई ।
गुरु नारि सो कह मोद भरि निज बधुहिं देऊँ अब कहा ।
मान सोच चाहति देन जेहि सो लगति मो कहँ लघुमहा ।
कह देबि सीतहिं राम दे मन महँ परम सुख छाइ के ।
सुनुमात कौशिल लाल कर हरषित सियहिं पकराय के ।।
दो०-रघुवर कर सिय हाँथ धरि, भई प्रसन्न महान ।
चिरंजीव जोरी जयति हरषित करति बखान ।।

।। दशरथ वशिष्ठ जी को लेकर रनिवास को जाना ।।

चलो नाथ मम संग रनिवासा । देहु दुलहिनिन सुन्दर बासा ।।
दो०-अस कहि भूप बशिष्ठ लै, गयो आसु रनिवास ।
मचि रह्यो जहँ आनन्द सुन्दर, हाँस विलास ।।

गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगलदराजा
भीतर जाय हृदय हरषाये । पूत पतोहुन लखि सुख पाये ।।
नृपति मुदित तीनों पटरानी । बैठाये सिंहासन आनी ।।
चारिहुँ कुअँर चारि कुँवरानी । बैठायो आसन सुखमानी ।।
चलै चारु चामर चहुँओरा । छजत छत्र मनि खचित करोरा
रतन दीप फैली उजियारी । नाचि रहीं सन्मुख सुरनारी ।।
तेहि अवसर अपार आनंदा । केहि विधि बरणौ मैं मतिमंदा
गुरु उठि अर्घ्य पात्रकर लीन्हा । वेदमंत्र अभिमंत्रित कीन्हा ।।
किये वर वधु सविधि अभिषेका । अधिष्ठान करियथा बिवेका

दो०-बस्तु कर्म करि भवन को, गवन कियो गुरुगेह ।
भूप कहन लागे कथा, यथा विदेह सनेह ।।
यहि विधि कौशल्या मुदित, आई कोहबर द्वार ।
साँता श्रृंगी रिषि बड़े, द्वारे तेज अपार ।।
विविध नेग सांता लई, पुनि श्रृंगीऋषि लीन्ह ।
कौशल्या प्रमुदित दई, छोर द्वार तब दीन्ह ।।
कोहबर गे दूलह सकल, सब दुलहिन तेहि साथ ।
रानीपुर नारी सहित, लखि बर दुलहि सनाथ ।।
लोकबेद विधि करि सकल, दुलहा दुलहि समेत ।
बैठी सकल समाज तहँ, बनत न उपमा देत ।।

।। न्योतारी सबको बिदा करना ।।

उठे बसिष्ठ सहित महराजा । गये बाहर जहँ भूप दराजा ।।
बैठउ सभा भवन महँ जाई । राज समाज सहित छबिछाई ।।

न्योतारी भूपति सब आये। यथा योग सब कहँ बैठाये ॥
भूपति कियो सबन सतकारा। विनय किए अतिजन अगारा।
देन लगे तिन नृपहिं विदाई। रथ तुरंग मातंग मँगाई ॥
वरणत दशरथ सुयश नृपाला। निज निज देसन चले उताला
भूपति बोलि वराती लीन्हे। मान वसन मणि भूषण दीन्हे ॥
आयसुपाइ राखिउर रामहिं। मुदित गये सब निज-२ धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये। घर घर वाजन लगे बधाये ॥
जाचक जन जाचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ दिये सोइ सोई
सेवक सकल बजनियाँ नाना। पूरण किये दान सनमाना ॥
दो०-देहि अशीश जुहारि सब, गावहिं गुण गण गाथ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गवन कीन्ह नरनाथ।
जो बशिष्ठ अनुशासन दीन्ही। लोक वेद विधि सादर कीन्हीं
भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठी भाग बड़ जानी ॥
पायँ पखारि सकल अन्हवाये। पूजि भली विधि भूप जेवाये ॥
आदर दान प्रेम परितोषे। देत अशीश चले मन तोषे ॥
बहु विधि कीन्ह गाधि सुत पूजा। नाथ मोहि सम धन्यन दूजा
कीन्ह प्रशंशा भूपति भूरी। रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह वर वासू। मन जोगवत रह नृप रनिवासू।
पूजे गुरु पद कमल बहोरी। कीन्ह विनय उर प्रति न थोरी।
दो०-बधुन्ह समेत कुमार सब, रानिन्ह सहित महीश।
पुनि पुनि बंदत गुरु चरन, देत अशीष मुनीश ॥
बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे। सुत सम्पदा राखि सब आगे

नेग माँगि सुनि नायक लीन्हा । आर्शीवाद बहुत विधि दीन्ही
उर धरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता
विप्र वधू सब भूप बोलाई । चेल चारु भूषण पहिराई ।।
बहुरि बुलाइसुवासिनि लीन्हीं । रुचिविचारि पहिरावनदीन्ही
नेगी नेग जोग सब लेही । रुचि अनुरुप भूप मनि देहीं ।।
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भाँति सनमाने ।।
देव देखि रघुवीर विवाहू । वरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ।।
दो०-चले निसान बजाइ सुर,निजनिज पुर सुख पाइ ।
कहत परस्पर रामयश, प्रेम न हृदय समाइ ।।
सब विधि सबहिं समदि नरनाहू । रहा हृदय भरिपूर उछाहू ।
अस कहि भूपति उठे समाजा । लै बशिष्ठ गयो महराजा ।।
चलो नाथ मम संग रनिवासा । देहु दुलहिनि न सुन्दर बासा।
गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगल दराजा
भयो विराजमान अवधेशा । गुरु बसिष्ठ तब दियो निदेशा ।।
भीतर जाय हृदय हरषाये । पूत पतोहन लखि सुख पाए ।।
नृपति मुदित तीनहुँ पटरानी । बैठायो सिंहासन आनी ।।
चारिउ कुँवर चारि कुँवरानी । बैठायो आसन सुखमानी ।।
लिए गोद करि मोद समेता । को कहि सकै भयो सुख जेता ।।
बधू सप्रेम गोद बैठारी । वार वार हिय हरषि दुलारी ।।
देखि समाज मुदित रनिवासू । सबके उर आनँद कियो बासू ।
कहेउ भूप जिमि भयउ विवाहू । सुनि-२ हरष होत सबकाहूं।
जनकराज गुणशील बड़ाई । प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ।।

बहुविधि भूपभाटजिमि बरनी । रानी सब प्रमुदित सुनिकरनी
कोउ नहिं जनक सरिस सत्कारी । मैंलीन्ही सब भुवननिहारी
गइ बरात सुख पाइ अनूपा । को कह जनक सत्कार सरूपा ।।
सुनि सुनि सकल हर्षही रानी । कौशल्या बोली तब वानी ।।
सुनहु नाथ मम मति अकुलानी । जिय संदेह न जाइ बखानी ।
डरत रहे गवनत अँधियारी । कुंवरकौन विधि निशिचरमारी
थकत उठाबत भाजन हाँथा । हर धनु किमि तोरयो रघुनाथा
बिहँसि भूप बोल्यो तब वानी । औरहुँ अचरज सुनु महरानी ।
गौतम को आश्रम रह सूना । कौशिक गे लिवाय दोउ सूना ।।
रही श्राप बस अन्तर्धाना । प्रगट भई पूज्यों विधि नाना ।।
जनक नगर ते आवत माँही । मिले कोपि भृगुपति मुहि काँही
दो०-धनुष भंग अपराध गुनि, कीन्हों कोप अपार ।
करन चहत संहार जनु, कंधहि धरे कुठार ।।
तहाँ जाय यह लाल तुम्हारा । कोमल कठिनहुँ बचन उचारा
छीनी सरासन भृगु पति केरा । दीन्ही शांती कोप घनेरा ।।
यह बशिष्ठ कौशिक प्रभुताई । ओर हेतु नहिं परे जनाई ।।
सुनि रानी मन अचरज मानै । राखे कुँवर मेरे भगवानै ।।
भूपति कह्यो सुनो सब रानी । पुत्र वधुन्ह प्राणहुँ प्रियमानी ।।
नयन पलक सम राखहु नीके । दिनदिन दून उछाहन जीके ।।
रंच विशंच होइ नहिं पावै । नेक विषम तिनके नहिं आवै ।।
जनकराय अरु रानि सुनैना । चलत समैं मोसे कह बैना ।।
सौपौ तुमहि कुमारी चारी । तुमहि मातु पितु परहु निहारी

दून होत सुख नैहर केरे । तब मम बचन सत्य जे टेरे ॥
दो०-पलक पुतरि सम राखि नित, रामहुँ ते बड़ प्यार ।
जोगवत छन छन प्रेम युत, करबि सकल संभार ॥
केकय सुता कही करजोरी । होई यहि गिरा सति मोरी ॥
दो०-पुत्रवधू अरु पुत्र मम, सबके प्राण पियार ।
औंघाते सुत नींद बस, सुनहु करहुँ जेवनारि ॥
महा मृदुल यह जनक दुलारी । बैठि लखौ कबकी बिचारी ॥
पुनि सुकुमार कुमार तुम्हारे । इनने अवलौं असन निहारे ॥
सबके सहित सनेह जिमावहु । रही नेग पर दिवस करावहु ।
असकहिं उठी सकल महरानी । पट नवीन चेरी बहु आनी ॥
भोजन बसन पहिरि महराजा । कुमर समेत महाछविछाजा ।
रानिन पुत्र वधू लै आई । निज निज संग सकल बैठाई ॥
भूप संग बैठे सब भाई । होन लगी ज्योनार सुहाई ॥
मंगलगान करहिंबर भामिनी । भइ सुख मूल मवोहरजामिनि
अचय पान सब काहू पाये । स्रग सुगंध भूषित छबि छाए ॥
रामहिं दे खिरजायसु पाई । निज-२ भवन चले सिरनाई ॥
नृप सब भाँति सबै सनमानी । कहि मृदु बचन बुलाई रानी ।
बधू लरिकनी पर घर आई । राखेउ नयन पलक की नाई ॥
दो०-लरिका श्रमित उनींद बस, शयन करावहु जाइ ।
अस कहि गे विश्राम गृह, रामचरन चित लाइ ॥
भूप बचन सुनि सहज सुहाये । जडित कनकमणि पंलग डसाये
सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥

उपबरहन बर बरनि न जाई। स्रग सुगंध मणि मन्दिरमाही
रतन दीप सुठि चारु चँदोबा। कहत न वनइ जान जेहिजोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये। प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये ॥
आज्ञा पुनिपुनि भाइन्ह दीन्ही। निज-२ सेजसयन तिन्हकीन्ही
नींदहुँ बदन सोह सुठि लोना। मनहुँ साँझ सर सीरुह सोना।
घर घर करहि जागरन नारी। देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरी विराजत राजत रजनी। रानी कहहिं विलोकहु सजनी।
सुन्दर बधुन्ह सासु लै सोई। फनिकन्ह जनु सिरमनिउरगोई।
बधुन्ह सबहिं लै पौढी माता। महामोद मन पुलकित गाता ॥
उरमि लहि उर महँ मीलाई। पौढ़ी प्यार करी सुख पाई ॥
श्रुति कीरतिहिं दुलारत भई। किय विराम प्रमुदित कैकेई ॥
तिमि माँडविहिं सुमित्रा रानी। पौढ़ी सुख नहि जाइ नखानी।
सो सुख मोपे बरनि न जाई। जानहिं जननि न सकै वताई ॥
सो रजनी सब नगर मँझारी। अवध प्रजन को कियो सुखारी
घर घर बाजहि वाद्य बधाऊ। राम आगमन भयो उराऊ ॥
तेहि रजनी सोये नहिं कोऊ। रहयो जो भीतर बाहर सोऊ ॥
चारि दंड निशि रहिगै बाँकी। लालशिषाधुनि भय सुखछाकी
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुण चूड़ बर बोलन लागे ॥
सुप्रभात बाजन बर बाजे। जागे सबहिं मोद मन छाजे ॥
बंदि माग धन्हि गुनगन गाये। पुरजन द्वार जोहारन आये ॥
बंदि विप्र सुर गुरु पितु माता। पाइ अशीष मुदित सबभ्राता।
जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दो०-कीन्ह सौच सब सहज सुचि, सरित पुनीत नहाइ।
प्रात कृया करि तात पहिं, आये चारिउ भाइ ॥

महाभोज नृप कियो अगारा। पुर नर नारी प्रजा परिवारा ॥
आये नृप पद मनुज अनेका। आश्रमचारी चारवहु वरनका ॥
विविध भाँति भोजन सब कीन्हे। तृप्त होत बहुआशीष दीन्हे

दो०-गुरु बशिष्ठ कौशिक कृपया वामदेव जावाली।
औरहु मुनिगण हुलसी हिय पुजे नृप सुखशाली ॥

धेनु वसन मणिगन उपहारा। दीन्हे नृपति अनेक प्रकारा ॥
दशरथराय भवन मधि आई। सबहि आपन नारि बुलाई ॥
कहवसि यहि गुणि प्रानन प्राना। सुखी करेहु सनेह विधाना।
पितु घर छोरि श्वसुर घर आई। बालमोरि सुकुमारी सुहाई।
पिय पितु मात वधुन प्यारी। पालन करेहु सनेह सुकुमारी ॥
सो पति किह्यो पतोहुन केरी। रंचनहि विसंच जेहि हेरी ॥
ये नव वधु विदेह दुलारी। नैन पुतरिसम करि रखवारी ॥
याम याम महँ सुधि सब लैके। किन्हौ सोपत सब सुख दैके ॥

दो०-पलक पुतरि सम राखि नित, रामहू ते बहु प्यार।
योगवत छनछन प्रेम युत, करवि सकल सँभार ॥

भूप बिलोकि लिये उरलाई। बैठे हरषि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी। लोचन लाभ अवधि अनुमानी।
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये। सुभग आसनन्हि मुनिबैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे। निरखि राम दोउ गुरुअनुरागे।
कहहिं बसिष्ठ धर्म इतिहासा। सुनिहिं महीश सहितरनिवासा

मुनिमनअगमगाधीसुतकरनी । मुदितबशिष्ठविपुलबिधिवरनी
बोले बामदेव सब साँची । कीरति कलित लोकतिहुँ माँची ।
सुनि आनंद भयो सब काहू । रामलखन उर अधिक उछाहू।
दो०-मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस यहि भाँति ।
उमगी अवध आनंद भरि,अधिक अधिक अधिकाति ।
मंगल करेउ समय अनुकूला । सनमुख लसहिं दूलहिन दूला
राम श्याम तन मेघ समाना । तड़ित विनिन्दक सिय श्रीमाना
व्याहवसन भूषण बहुभाती । साजे विराजहिं सहित सुभ्राता
दम्पति दिव्य सिर मौंर सुसोहैं । कज्जलयुत तहँकमल विमोहैं
सोहैं पनरथ रत्न जड़ाई । चरण अरुण जावक छबि छाई ।
कौशिल्यादिक दशरथ दारा । बैठी गोतनिन बृन्द मझारा ।।
देखहिं बधुवन छबि मधुराई । पियत दृगन मगनाहिं अघाई ।
यहि विधि उत्सव भयो महाना । अति आनन्द न जाइबखाना
नित नव उत्सव आनन्द मूला । होहि सरस सब सुर अनुकुला
शुभ दिन शुभ मुनि आयसु पाई । दशरथसहित रानिसुखछाई
रानी मनोवाछितशुभ कारनी । करि देव पूजानृप सहितरानी
बधुन सहित चारो सुत लीन्हे । आए राजभवन छबि छीने ।।
पूजन हित सिय प्यारी लाई । बैठारे सानुज रघुराई ।।
मंगल करेउसमय अनुकूला । सन्मुख लसहिं दुलहिन दूला ।
देखहिं बरहिं बधुन मधुराई । पियत दृगन मग नाहिं अघाई ।
तिय व्यवहार निपुण ढिगआनी । कह दूलह प्रतिकोमलवानी
कंगन जनक नन्दिनी केरो । छोरहु समय सुहावन हेरो ।।

दो०-कीन्हे तन को सकुच बस, मन सिय रूप लुभान।
छोरत लागे मृदुकरन, कंगन भयो सुहान ॥

सुदिन सोधि कल कंगन छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे ॥
बंकचितवन चितईरसमाहीं। कहिकै ईमिभुरि मुरि मुसुकाही
सुखी नृपति दारन मुद लूटी। हाँस सकल रघुवंश बधूटी ॥
विश्वामित्र चलन नित चहहीं। राम सप्रेम विनयवश रहहीं।
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महामुनि राऊ ॥
माँगत विदा राउ अनुरागे। सुतन समेत ठाढ़ भे आगे ॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी। मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहि राउ सहित सुतरानी। परेउ चरन मुख आवनबानी
दीन्ह अशीष विप्र बहुभाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती
राम सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाय फिर पहुँचाई ॥

कौशिल्याजी बधुन को आज्ञा देना पाक बनाने के लिये

दो०-रामरूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनन्द।
जात सराहत मनहिं मन, मुदित गाधिकल चन्द ॥

॥ पाक रसोई बना ॥

सुदिनविलोकिकौशिल्यारानी। सीतहिंभगिनिनसहितबखानी
सब मिलि पाकशाल तुम जावहु। रंगनाथ के भोग बनावहु ॥
सकल बहिन युत चली सुजानी। गई सुपरम मनोहर ठानी।
सिय परिचर्या हित ह्वै राजी। अन्नपूरणा आनि बिराजी ॥
निज सामर्थहिं गुणबहु भारी। पाकसुविधा क्रिया विस्तारी।

युत अनुजनि सीया तहँ आनी। करन लगी ब्यंजन मुदसानी।
जबहि करत आरम्भ दिखाई। नहिंलखि परहिं कबै वनिजाई
केसरिया इमि भात बनाई। दाल स्वर्ण युत लगे सुहाई।।
विविध सुगंध मेवा बहु भाँता। मिश्रित करि मीठी सुखदाता।
ब्यंजन बहु तहँ लगे कतारा। केतिक गनि न सके अपारा।।
अगनित चरनि अचार बनाये। मधुर के अलग थार सजाये।।
भाँति भाँतिके साग रुचिकारी। षटरसमधुर स्वाद बहुकारी
पूरण पुरी कचौरी बनाये। मधुरक लगल कतार सुहाये।।
छरसचारि बिधिकिएकमनीया। नहिसंख्या तिनकी गणनीया
दो०-सकल पदारथ थार महँ, सची अनेकन थार।
राजभोग श्रीरंग को, अरपो कर अनुहार।।
द्विज कुल जन सम्बन्ध सनेही। तोषे असन समय बैदेही।।
पंगत महँ बैठे भूपाला। पुरजन युत छबि लगत विशाला।।
भेद रहित ब्यंजन सुपुनीता। परसे अगनित संयुत सीता।।
अमित राज कन्या तेहि साथा। लिए करहिं सामाग्रिनहाथा।
लै लै तिन करते शुभ धारन। परसत निपुन किये सिंगारन।।
परसन नेग सीय कहँ होई। करत विचार नृपति सुख भोई।।
सिय अनुकूल न पावत राजा। यदपि इन्द्रसत सम्पति भ्राजा
बहुरिनृपतिनिजमनहिबिचारा। प्रबलमणीदिब्य जनकभुवारा
सोइ सिर भूषण सिय कहँहोई। मनहर दिव्य सुभग छबि सोइ
चूड़ामणि जेहि सम बिच नाहीं। लई इन्द्र ते जो मखमाहीं।।
दुलहिन सुखहिंतुल्यनहिंचीन्ही। सकुचिसहितसोसियकहँदीन्ही

दो०-अस उर आनि सो कौशिला, दियो तुरंत बताइ ।
सुनतहिं सिय मन मुस्कनि, नेग लीन्ह हरषाय ।।
बार बार परसति हैं ब्यजन । अति रुचिकारी नइनइ भाँतिन
दई माण्डविहिं हिमकर माला । उर्मिलाहिं किंकिनी बिशाला
श्रुति कीरति कहँनूपुर नीके । सुवरण रचितजड़ित मणिठीके
सिय सँग नृपजा छबिवाना । तोषीं नृपति बधुन्ह समाना ।।
औरउ भूषण बसन सोहाना । दीन्हे मणि गन नृपति बिधाना
स्वाद एक ते यक सुखमानी । अमित स्वादनहिं सकियबखानी
पाये सबहीं दुगुन अहारा । अपरै रुचि न घटी तेहिं बारा ।।
नव रुचि होय मोद उपजाहीं । हृदय प्रमोद होत सब काहीं ।
पाय नृपति तबअचमन कीन्हा । मगनमोद छणछणहिं नवीना
दो०-चली बात मिथिलेन्द्र की, जस उन प्रेम जेमाय ।
जब लगि पायउ नृपति बर, वही वात सुखछाय ।।
कौशिल्यादि बहु नृपतिय ज्ञाता । करत भई भोजन यहि भाँता
सिय वय देखि अरु निपुनाई । करहिं बखान रानि मनभाई ।
सखा सखी दासी अरुदासा । लहेउ असन कर परम हुलासा ।।
सब बहिनिन युत भोजनकीन्ही । अचवन करि बीड़ासबलीन्ही
यहि विधि उत्सव भयो महाना । अतिआनन्द न जाय बखाना
सुन्दर सदन सहज सुखरासी । मधुर अनंत सुगंध सुभासी ।।
दिव्यअनंत गुनआकरसीता । कियेस्ववसप्रियपियहिसहपुनिता
राम सियाशुचि सुन्दर प्रीति । कहेन शारद शेष श्रुतिअमिती
छनसम समय जात दिन रैन । प्रीतिरीति रस सहज सुख दैना

सुनहु सखि भैया भलभावा। मन बुधि अगम नव रनत बुझना
प्राण-२ मानत जिय जीना। करहि दुलार सुभाव अतीवा॥
मोविन भोजन कबहु न करही। देखि-२ मोहि आनंद भरही।
कहतकहत सियप्रेम विभोरी। श्रवत नयनजल सुधिहोननवेली
राम सिया कर नितनव प्यारा। कोकहि सकैको जानन हारा
नितभलिरहनिसबहिबसकीनी। पतिसुप्यारलहिसरस सुखिनी
दो०-दरस परस रघुलाल के, सिय सुख रुप लखाया।
तदपि विरह मिथिलान के, डूवत नित दिखाय॥
सब गोतिनिन आशीषै देई। निज-२ महल गई सब कोई॥
सियहिं व्याह घर जब ते आई। नितनव बजत अनन्दबधाई।
ऋधि सिधिवैभवबिपुल दिखाती। छाइ अवध सियसेवसुभाँती
सिय पग धरत अयोध्या केरा। भाग विभव नित बढ़त घनेरा
सास ससुर कहँ प्राणन प्यारी। सीता लगति अमित सुखकारी
सिय सुख रुचि रघुबर निजमानै। तैसहिं सिया भावहियआनै
दिब्यअनन्त गुणआकरसीता। किये स्वबस प्रिय पियहिंपुनीता
राम सिया सुचि सुन्दर प्रीती। कहैं कवि शारद शेष अमीती।
छन समसमय जात दिन रैना। प्रीति रीति रस रहज सुखैना
दो०-ताकी महिमा कहत महँ, सुख समृद्धि रस रूप।
कौन बिना अनुभव बके, अमित अनादि अनूप॥

॥ चारो दूलह दुलहिनों को महल देना॥

कनक भवन सीता कहँ देहू। माण्डवी को मणि मंदिर गेहू॥
देहु उर्मिला को सुख बासू। सौरभ सदनहिं काह निवासू॥

श्रुति कीरति कहुँ प्रीति विलासु । सीफिलित सदन सुदेह वासु

॥ छप्पय ॥

महरानी नृप बचन सुनत निज सखी बुलाई ।
तृतिय उच्चता महल चतुर्दिशि योग लगाई ॥
चारि महल में विबिध भाँति के पलँग डसाई ।
तोषक उपबरन अनूप छबि बरनि न जाई ॥
स्त्रग सुगन्ध अगनित विधी, मणि दीपक अगनित बरे ।
मनहुँ मदन रति की भवन, सर्व सुभोग नितै भरे ॥
सब सवाँरि रानी समीप आई सो सहेली ।
उठी सकल रनिवास फली मन की जनुबेलीं ॥
दुलहा दुलहि लिवाय चली सब साज सजाई ।
निज निज महलन गये मुदित मन चारो भाई ॥
अस कहि सिय हिय भाव भरी नयन वहावति नीर ।
तुरत कौशिला गोद लै, दुलरावती धरि धीर ॥

महा विभूति भूरि जिन माहीं । सपनेहु सक्र लखेउ जो नाही ।
शील स्वभाव सहजसुख सीता । सासू स्वसूर प्रतिभाव पुनीता
सीय चरित लखि नृपयूत रानी । आनँद मगन रहितमुदमानी
नेहर सूधि आवत मन माही । ढारति नयन प्रेम अवगाही ॥
जननीजनक सूप्यार बिचारी । होती मगन विरह अतिभारी ।
करि-२ सूरतिहिं ढारत आँसू । अति दुलार समझावहिं सासू ।
कबहुँ सयन बिच सपनेहुँ देखी । मैया भनति अधीर बिशेषी ।
लेहिं कौशिला हृदय लगाई । पुनि पुचूकारी देहिं सुताई ॥

प्रिय पितुमातुबंधु अरु भाभी। प्यार सुरति सुइहिय कहँडाभी
दो०-सखिन्ह मध्य में बैठि नित, बरनत नैहर प्यार।
धनि धनि सीता लाड़िली, जनन हिये निजधार।
एक दिवश मिथिलेश किशोरी। भोजन करति सुधा रसबोरीं
करि दुलार सिय सासु पवाती। आई मैंया शुधि कसकाती॥
पूछति पुत्रि कहा तुहि भयऊ। देखि-२ मम मन दुख छयऊ॥
कहति सीय मोहि गोद बिठाई। मातु पवावति रही सदाई॥
जननी जनक सुदिब्य दुलारी। नित्य खेलावत अंक बिठारी।
सो सुख सालत हृदय हमारा। कबमिलिहैं मोंहि नैहर प्यारा
बहु पुचकारि धीर दै सीतहिं। निजकर दियो पवाय सुप्रीतहि
भूप जानि जिय कहत कौशलहिं। बहू प्यारबहुकरेव मोदलहि
दो०-पितु पुर बिरह विलास जेहि, करहु जतन अनुसारि।
सिय सुख मो सुख जानि जिय, सेयहु पुतरि सम्हारि॥
एकदिवस सियकनकभवनमहँ। सहरघुलाल राजतिचैननिजहँ
चहुदिशि अलिगण अनुपम राजै। सकल सजे सेवाशुभसाजै॥
रिझवहिं युगल किशोर किशोरी। प्रेमपगी सुख सिन्धुहिलोरी
मैथिलप्रेम परमप्रिय चरिता। गावहि सखी महामुद भरिता
कहहु प्रिया निज दशा बखानी। कारण कवन करुण रससानी

॥ कवित्त ॥

महरानी माथ सुधि कहि सदा सुहागिनी हो।
अचल अहिवात रहै तेरो तिहुलोक में॥

चुचकारी धरी पोछी गोद में बैठारि अंक ।
बोली हमें विधिना फल दिन्हसु विशोक में ।।
इतनेहि मै आये लाल निरखि निहाल मातु ।
देखि अंक सिया रहै सकुचि थोक में ।।
कहत ठाम हमरों पे दखल करि लीन्ह ।
ओपै रहि बैठि हमहु तो बैठे जोक सौक में ।।
सुनिकै समाज सब मन में आनन्द होत ।
सौत सुख बाढ़यो महरानीजी के उर में ।।
लालकहि सुधी मांथ माता लै बैठारी गोद मोद भरे ।
देखि जोरी पुनि पुनि प्राण तरु रूप में ।।
एक गोद सिया एक गोद लालजी विराजे ।
याफल पाय नैन कहै ओर सुखधूर में ।।
गुरुतिया पुरतिया महरानि सब कहै ।
ऐसो ऐ समाज ऐसो नाही तीहपुर लोक में ।।
पौढ़ा सखी सियाजु कौ सासु पै लिवाय जात ।
बुझयत दोउ कुलरिति सुख सव साज है ।।
आवत है माण्डबी अरु श्रुति कीर्ति उर मिलाहु ।
राज महल आये जुरि सकल समाज है ।।
अलिराज रीति पांय लागने सिखावै ।
साशु आशीश दै बुझै वहु निकेतो मिजाज है ।
शील की समूह सिया सकुचात सासु पास ।
सुनै सनै बोले जैसे भारीवसी लाज है ।।

पितु पुर सुरति कहति बैदेही। बढ़त ब्यथा सुनु प्राण सनेही।
जननि जनकमोहिंप्राणकी नाई। जोगवहिं सदा कृपालुगोसाई
दै धीरज पुनि प्रीतम बोले। प्रीति पगे निज बचन अमोले॥
प्रियासुनहुमिथिलाजिमिप्यारी। आपुहिं अहैं मोहितिमिसारी
सासु ससुर शुचिभाव सुप्यारा। सुरतिकरत नहिं होयसम्हारा
अस लागत मोहिं जाय उड़ाऊ। सासु ससुर कहँ प्यारहिं पाऊ
दो०-सिद्धि कुँवरि शुचि प्रेम सुधि, कसक करै हिय मोहि।
कबहुँ सो दिन आइहै, देखिहौ नयनन ताहिं॥
बहुविधिसियपियसुमिरनकरही। आवैलक्ष्मीनिधि सोइकहहीं
दूत संत ब्राह्मण व्यौंपारी। मिथिला होत अवध पगु धारी॥
जानि राम निज निकट बुलाई। पूछहिं श्वसुर पुरी कुशलाई।
दो०-कुँवर दरश चष चाह बहु, छिन छिन छावत जाय।
भये विरह दशरथ कुँवर, मनही मन अकुलाय॥
रसिक राम हिय जानिबिहाला। गुरु निदेश दशरथ महिपाला
चतुर दूत दै पत्र अनूपा। भाव भरा रस रीति स्वरूपा॥
पठयो तिरहुत जनक ठिकाना। कुँवर बुलावन हेतु सुजाना॥

॥ श्रीसुनैना अम्बाजी का प्रेम॥

जाके कोख सुता भइ सीता। जगत जननि छबि छई पुनीता।
प्रेम सनी सो मातु सुनैना। लली विरह कशकत उर ऐना॥
कबहुँ सबेर होत सिय माता। सियहिं जगावति हियहुलसाता
पुत्रि पलँग जब पावत नाहीं। सिया सिया कहि रुदति तहाँहीं
कबहू सखिन सँगबैठ सुनैना। सिय सुभाग वरणति सुखअयना

सब सुख सदन श्याम पतिपाई । अमित तेज गुण सुन्दरताई ।।
भई भाग्यकी सबविधिअधिका । लालप्रेम प्रियनितनवलधिका
चक्रवर्ति नृप श्वसुर सिया के । होहि लाज लखि शचीपियाके
धाम अयोध्या शुचि ससुरारी । प्रेम प्रवाहिन सरयू धारी ।।
कबहुँ कहति सिय सकुच स्वरूपा । निज दुखकहीन चाहअनूपा
को नित लाल कहँ जाय जगाई । गावत लोरी प्यार पवाई ।।
को तेहि दइहै समय कलेवा । प्रेम पगे सरसाइ सुसेवा ।।
को नहवाय अनूप सिगारी । खेलन साज कौन सजि सारी ।।
लाल अवधन्य मिथिला राजै । कहुकहु जाति भूल भ्रम भ्राजै
कुँवरहि कबहु कहति अतुराई । भ्रातन युत द्रुत लाल बुलाई।
लखहु करन कलेवा काजा । बेर भई बड़ि थार सु साजा ।।
कहत कुंवर सुनुरी मम मइया । अवध गये सियराम भुलइया
दो०-कोमल पलँग डसाय नित,करत तत्र पुचकार ।
सीतहिं शयन करावई,होवत सभी खभार ।
भूप सने सियराम वियोगा । भाव समधि मगन रस भोगा ।।
जेवन जबहिं जाहिं जहँ राजा । बोलत सियहिं जिवावनकाजा
कोउ कह सीता अवध सिधारी । सुनत सूख बड़ विरहविदारी
तैसहिं सुरति राम के आवत । भूलि अपनयौं विरह समावत।।
दो०-अम्ब विरह सिय श्याम की, रटति नाम यश पाँति ।
राम सिया सुख समुझि शुचि,कहुँ कहु धीरज शाँति ।
तैसेहि सुरति लाल के आवत । भुलि अपनपौ विरह समावत
कबहुँ मानत मिथिला मधि राम । रहहि सदानहि गयेस्वधाम

विरह सनी श्रीमिथिला धरती । नित्य-२ नयनन जलढरती ।
कोमल कलित सुखद रसभीगी । अबलौ दिखत प्रेमजल पीगी
सुरति करति सिय समय विकाई । अवहुदरार होतजनुभाई ।।
दो०-लता बृक्ष बड़भाग जे, लहे परश सिय राम ।
मुरझि मुरझि महि सूखहीं, ग्रसे विरह रुजधाम ।।
छं०-पशु योनि देखे सीय निज शुक मोर मैंन खगावली ।
बहु नैन नित्यहि अश्रु अति,बहुविरह बोल वचावली ।
सियराम उचरहि शोकभरि, नहि बनत वरणत सो दशा ।
सुनि देखि मैथिल आतुरन, अतिसय पगे विरहहि रसा ।।
।। श्रीमिथिलाजी सखी बिरह वर्णन ।।
मिथिला चरित सुनहु अब आगे । मैथिल यथा प्रेम रस पागे ।
जनकपुरी सब नर अरु नारी । रहहि वियोग सने हियभारी ।
अहनिशि पगे प्रेम के भावा । चित्त भयो लय रामहि पावा ।।
घरघर छनछन इकइक प्राणी । कहहिसुनहिसिय मधुरकहानीं
एक सखी कह सुनु सखी मोरी । श्याम बनाय गयो मोहि बैरी
जालिम जुलुफ नागिनी पाली । निठुर कटाय निबुकगो आली
कहै एक सखि सततब बयना । मोहन मधुर रसिक रस दयना
केश पाँस दृढ़ फाँसि किशोरा । गयो अबध लै सखि मन मोरा
कही एक मुस्क्यान रसीली । बशीकरण की कोमल कीली ।
लखिमम मुखहि मधुरमुस्काई । वशी कियो अब अनत नजाई
दुसर कही हँसनि रस घोली । श्याम पियाय लेय बिनमोली ।
दुलहा रसिक रसहिं लै आलीं । गयो अबध हँसिमोहनी डाली

एक कही सखि चितवनि मीठी । तिरछि मधुर मनोहरदीठी ।
दो०-बोली अपर सुप्रेम भरि विह्वल सी अकुलाय ।
रसिक राम अंखियान की बात कही नहीं जाय ।।
चितवनि तीर करेजेहि मारी । करै चोट रसमई शिकारी ।।
मधुर तकनि डारेव सखि टोना । कीन्हे स्ववससबहिं महँमौना
सोहन श्याम सलोने नैना । बड़े-बड़े विशद मदीले पैना ।।
अपर कहैं हलकति मनिनासा । पियै अधर रसनित्य सुवासा ।
एक कहै सखि सुनहु अलोला । कुण्डल हलनि सुसोह कपोला
चिक्कन सुखद सुकोमल ऐना । गोदिखाय रसिया रस दैना ।।
दो०-कवहुँ भाग खुलिहैं अरी, बनि कुण्डल बर राम ।
परसि चूमि सुख पाइहैं, मिथिलापुर की बाम ।।
एक कहि सखि मौर ललामा । रघुवर धरे माथ अभिरामा ।।
मोहिलियोसबहिनबनिबनरा । मंत्र कियोधरि मणिमयसिहरा
एक कहै बड़भागी हारा । लपट रामउर पावतप्यारा ।।
हिय हुलास सखि होय महानी । बनि सुहार रहतेउ लपटानी
अपर कहै कटि केहरि रामा । शोभनीय सुख करन ललामा ।
कहा एक सखि छनि-२ नूपुर । पायन लगीं रहै करमृदु सुर ।।
असमन होत मुदरीबनी प्यारी । पानि परसलहि रहौं सुखारी
कोउकह सखिसतश्यामसुहावन । धरिपीताम्बरमनहिंलुभावन
दो०-सुनत अपर बोलत भई, हृदय होत अति चाह ।
बनि पीताम्बर लिपटि तन लेवहिं सुख सियनाह ।
मिथिलाहिअवधसहित तिहुलोका । दुलहराम प्रथमअवलोका

समय पाई कछु सबहु कीन्ही । वीरी गंध माल शुभ दीन्ही ।।
हंस निवत्त राम सुहाई । दुलह राम कृपाल अधिकाई ।।
सब विधि भाग पुज रसबोरी । अहैं नित्य मिथिलेश किशोरी
दो०-प्रथम युगल झँकी सखी, रसमय रसहिं हलोर ।
मिथिलहि देखे लोग सब आनन्द अतिहि बिभोर ।
प्रेम पुरी यह मिथिला नगरी । लौटे मुक्ति जहाँ प्रति डगरी ।।
तदपि सखी रघुवर घनश्यामा । मिथिलहि पगे भूलतन धामा
सियहु केर ममता अधिकानी । पुरतृन मानहि प्राण समानी ।।
निमिकुल पूषण भूपसुनैना । यशवरणहि सुर मुनिदिन रैना ।।
तिनके भाग्य कहौ किमि गाई । राम सिया निज अंक बिठाई।
किन्हे प्यार विविध विधि तेरे । प्रेम भाव भरि सरस सुखेरे ।।
प्रीती पगे तिन श्यामहु श्यामा । रहहिं नित मिथिल अठयामा
ताते विरह विकल नृप नैना । ललचत लखन भरे जल अयना
कोहबर हँसिहँसायसखितिनही । बहुविधि छकीछकायो उनही
जब तब जाय राज गृह माही । कीनही बात मधुर तिनपाही ।
बारबार मिथिला मधि अइहैं । कुंअर प्रेम रह अवध न पइहै ।
जनक नेह वश राम वोलाहीं । सहित सीय सुख मूरि सोहाही।
सीय कृपा सबविधि सब पाई । भई भाग भालन अमिताई ।।
करि सम्बन्ध अचल सिय प्यारी । दीन्ह डुबायसवहिं रसधारी
तिनकी कृपा राम की आसू । लगती सारी सरहज सासू ।।
कहैं एक सखि मिथिला धन्या । विहरति जहाँ सिया सुरमन्या
बाल केलि जहँ कीन्ह सुभाँती । उमा रमा शारद ललचाती ।।

सहि शक्ति शिव अज सनकादि । लोजधूरि ललिहि गुनिमादी
वस्क बिरह दुखसहिहोआली । निज प्रतिकुल न चलिहोआली
नीके रहैं अवध सखि दोउ । नीको सुनै नीक पुनि जोउ ।।

।। जनकजी का विरह ।।

कहौं जनक कर प्रेम बखानी । सहित सुनैना सुनु सुखमानी ।।
कहु मानत मिथिला मधिरामा । रहहि सदा नहिगये स्वधामा
दो०-नयन नीर हिय तपत नृप, मधुरि होत अधीर ।
तदपि धैर्य हित स्वजन के भोजन करत प्रवीर ।।
मातु सुनैना दशा दुखानी । सुनहु विरह के सिन्धु समानी ।।
प्राकृत मातु प्राकृति बाला । पति गृह जात विरह उरशाला ।
जनित वियोग दुःख मतिमोई । पगली बनै रात दिन रोई ।।
तासु अकर्षण लाल लोभायो । आये मिथिलहि बिना बुलायो
किन्ही विविध भाँति भलि लीला । मनहर बनराबनेउरसीला

श्रीमाताजी के प्रेम वर्णन

अब लौ ललि किशोरी मोरी । भोजन कियो नही बड़ी मोरीं
तुम्हरे साथ पाय सुख मानै । ताते लाल ललिहिं अब जानै ।।
भ्रात भगिनि पावहु सुख छाई । बैठि जिवावहु जीव जुड़ाई ।।
दो०-कछुक कहति कहि जात कछु करति औंर करिजाय ।
सुनती और सुनति कछुक, लखति और लखि पाय ।।
कबहु सबेर होत सिय माता । सियहि जगावति हिय हुलसाता
पुत्रि पलंग जब पावत नाहीं । सिया सिया कहि रुदति तहाँही
कबहुँ सखिन संगबैठ सुनैना । सियसुभाग वरराति सुखअयना

सब सुख सदन श्यामपति पाई । अमित तेजगुण सुँदर ताई ॥
भइ भाग्यकीसबविधिअधिका । रामप्रेम प्रिय नितनवलधिका
चक्रवर्ति नृप श्वसुर सिया के । होहिं लाज लखि शची पियाके
को नित तेहि कहँजाय जगाई । गावत लोरी प्यारी पवाई ॥
को तेहि दइहें समय कलेवा । प्रेम पगे सरसाइ सुसेवा ॥
को नहवाय अनूप सिंगारी । खेलन साज कौन सजि सारी ॥
राम अवध या मिथिला राजै । कहू कहू जाति भूलि भ्रमभाजै
कुअँरहि कबहु कहति अतुराई । भ्रातन युत द्रुत राम बुलाई ।
लावहु करन कलेउ काजा । वेर भइ बड़ थार सो साजा ॥

दो०-अम्ब बिरह सिय श्याम की रटति नाम यश पाँति ।
राम सिया सुख समुझि सुचि कहुँकहुँ धीरज शांति ॥

ताते सुनहु सखि सतवाता । मिथिला गुनहु सकल सुखदाता ।
रहै वसत सिय राम सुभाये । रखिहै निज रस रहसि दवाये ॥
प्रभु रस सदा रँगे सब रहिहौ । तदराम सिय निकटहि रहिहै।

दो०-यहि प्रकार मिथिलापुरी, विरह सनि सब बाम ।
नित्यहिं ढ़ारत नयन जल, करहि सुरत अठोयाम ॥
धनि धनि खगमृग विरह रस, पगे रहत दिन रात ।
राम राम सिय सिय रटत, कहत देव पुलकात ॥

सीय राममय चलत सुश्वासा । हृदय बनेउ सिय रघुवरवासा
सुमिरन चिंतन मनन महाई । निदिध्यासन दूलह रघुराई ॥
सीयराम महँ लीन सुप्रज्ञा । अहं गयो नशि प्रीति सुतज्ञा ॥

दो०-प्रकृति सरिस नित कर्म करि, सुमिरत सीताराम।
भाव भरे गुण गान करि, दरश आश अठयाम॥

॥ सखि प्रेम ॥

विरह सने इक एकहिं भेटी। वरणत रामचरित दुख मेटी॥
यहि बिधि प्रेम पगे पुरवासी। दंपति दशा कहौं किमि भाषी।
भइया लक्ष्मीनिधि को भाऊ। सिद्धी भाभी केर स्वभाऊ॥
सिय पिय प्रेम पगे सबकोऊ। लली लाल दरशन कब होऊ॥

दशरथजी पत्रिका मिथिला में जाना

दूत पत्र अवधहि से लाये। दिये भूप कर शोक मिटाये॥
अति आनंद न जाय बखाना। पत्र बाँचि सुनि सब सुखमाना
छेम कुशल बाँची नर नाहू। गये रनिवास विशेष उछाहू॥
सकल पत्र बाँचत तब भयऊ। सुनि रनिवास महासुखलयऊ।
छेम कुशल सब भाँति सोहानी। पुर परिवार भूप अरु रानी।
भ्रात सखनयुत रघुबर श्यामा। सखीभगिनि सहसीय ललामा
आशिश प्यार कियो मनमोंदी। चाहत लखन बिठाय स्वगोदी
सब सिय सासहु प्यार सुभाषा। चहत दरश तब नयननचाखा

॥ जनकजी पत्रीका ॥

शुभ समचार सदैव उत्तके चहिये ईत अनुक्रोस सो।
जब जब पठावत पत्र पावत मोद बड़तब तोष सो॥
दो०-मम दरसन की कामना, प्रिय कर तब मात।
सुनिके मम जननिह,प्रति विनय लखि बहुभात॥

दो०-निमिकुल कन्या बधुन में, बैठव प्रमुदित पास ।
होहै हरदम नये नये, दिन प्रति वाक बिलास ।।
तुम प्रति प्यारी पित मानही । विनय लिखि बहु भातही ।।
जब कबहु ईश्वर महिपाला । विनती मान करहि कृपाला ।।
तब दोउ लक्ष्मीनिधि भ्राता । आवहि तुमहि लिवावन पाता
पितु अवध की वात चलाई । समाचार सब कहेव सुहाई ।।
दीन्ह पत्रिका कहि सिय केरी । पठय अवधनाथ हिय हेरी ।।
दोउ कहे अवध वस सिया । भेजी प्रेम पत्र निज हिया ।।
पितु निकट पाति प्रीय आई । अवध नृपति कर कृपा पठाई ।
आये अब दै दरसन भैया । होवहुँ आखिन प्यास बुझैया ।।
मोहि लिवाय जनकपुर जाई । मातु पिता भाभी दिखलाई ।।
दो०-आपुन कहि सुधि पहिल जो, होय सत्य वह नाथ ।
चलहु दुहिता मिथिला हितै, बने रहो चिरसाथ ।।
सीता सो हँसि बोले पिया, अवसि जाहु तुम जनकपुर
कछु दिन बीते आई हो, करन अभिलाष पुर ।।
पहुँची मिथिला जाई,परमानन्द प्रफुलित बदन ।
दई सब बात जनाई, अवधपुरी सुख सवन ।।
बाड़ी सुनयना प्रीति, सिया आगवन सुनतपुनी ।
करन लगि सब रीति,लक्ष्मीनिधि के विदा की ।।
आय शीघ्र दै दरसन भइया । होवहु आंखिन प्यास बुझैया ।।
मोहि लिवाय जनकपुर जाई । मातु पिता भाभी दिखराई ।।
मोरी भाभी मोहिं कस भूली । तब दरशन को मो मनफुली ।

सिद्धि सुनत प्रेमाकुल होई। विरह सनी सिसकति दुख मोई।
कहत सुनत सिय केर सुभाऊ। दम्पति मगन सुधी नहिं काऊ।
लाल दशा कहि दशरथ राऊ। दीन्हे पत्रहिं माहि जनाऊ ॥
लक्ष्मीनिधि भयेप्रेम विहाला। सिय-२ कहसिसकत बहुकाला।
पुत्र दशा लखि भइ अतिदीना। पतिसन बोली मातु प्रवीना।
नाथ कुवर सिय राम वियोगू। इनकी दशा देखि सब लोगू ॥
याते आयशु देय सुखारी। जान अवध की करै तयारी ॥
सियहिं बुलावन समयहुँ आयो। जाहि कुवर अबमो मनभायो
कुवर गये सिय आनँद मानी। लहिहैं सुख श्यामहुँ सुखखानी।
बोले जनक प्रिया सुनि लेहू। मोरे हृदय विचार सुयेहू ॥
पहुचे मिथिला जाये, परमानन्द प्रफुली बदन।
दई सब समाचार सुनाय, अवधपुरि सुख सदन की।
सुनि बाढ़ी अति प्रीत सुनैनहि, सिया आगवन की।
करन लगी सब रीति, लक्ष्मीनिधि को विदा की।
अवध नृपति की पाती पेखी। तब ते करौ बिचार बिशेषी ॥
ताते कुवर अवशि उत जाबै। सीय लाय मोहिं दरश करावै।
राउ बचन सुनि हरषी रानी। यथा मोरनी बारिद बानी ॥
कुवरहिं भयो अनन्द अपारा। प्रफुलित बदन कहै को पारा ॥
मुख प्रसन्न नव पंकज फूला। उर प्रमोद लहि पितु अनुकूला।
कुअँरहुँ मातु पिता पद बन्दी। आये अपने भवन अनंदी ॥
जनक सुवन बोले सुनु प्यारी। पितु आयसु पालौ सुखकारी।
परसो दिवस अवधपुर जैहौ। सियहिलिवाय कछुक दिनअइहौ

दो०-सब विधि भाग विभूति सुख, मोहिं पिता सब दीन ।
अवध जान आयसु दई, आनँद होइहौ लीन ।।

भ्रात सखन्ह पुनि लियो बुलाई । करि सुप्यार आसन बैठाई ।
श्रवण सुखद बोल मृदुवानी । कालि अवध गमनब सतजानी ।
सुनत कुवर के बैन सुहाए । हरषित बदन सखन मनभाए ।
सखा भ्रात सब शीश नवाई । गए सदन सुमिरत सियभाई ।
नृप बिदेह मंत्री बुलवाए । आयसु दिये हर्षहिय छाए ।।
कालि कुमार अवधपुर जैहैं । सीय बुलाय कछुक दिन अइहैं।

दो०-करहिं तैयारी मंत्री बर, हरषि हृदय अनुमानि ।
उचित सुखद जो जो रुचै, अहहु दक्ष मतिमान ।

सचिब रजायसु धरि सिरमाहीं । गयो तयारी हेतु उमाही ।
बहुरि कुमारहिं भूप बोलायो । अतिसनेह बर वचन सुनायो
भूपहि मोर प्रणाम सुनाई । यह पाती पुनि दियहु थमाई ।।
विनती विविध सुनाय सुखारी । लायहु तिन्है संग सत्कारी ।
चलति वार वियजुत सुनाय कहिहौ कौसल्याजी सो प्रीति ।
बहुत दिनविति सिया बदन विलोकी नाही रहत बिरहछाई
अज्ञा जो पावो तो लक्ष्मीनिधि जात सीता आवै सुखामई ।
कौशिल्यादिराम महतारिन । नित्यप्रणाम कहेउ सुखसारिन
भ्रातन्ह सहित लाल कहँप्यारा । कहेउ सुमंगल मोद दुलारा
भगनिन्हसह सीतहि समुझाई । अमित प्यारकहियो सरसाई

दो०-भेट विविध विधि सबहिं कहँ, यथा योग हर्षाय ।
सौपेउ अह मम रहित ह्वै,विनती मधुर सुनाय ।।

पितु आयसु सिर राखि कुवरवर । आये मातु समीप सुखदतर
राम समीप जाहुँ सुख छैंया । सीय देखि हरषी नित भैया ।।
राम मातु कहँ कहेव प्रणामा । मोर ओर करि विनय ललामा
जेहि विधिसियासुखीरहेनित्या । सोइ करणीय परै चितचित्या
नरपति सो सुत मोर सुनमना । कहेउ प्रेम युतबचन करमना
प्राण सुखद सीतहिं तुम लाला । कहेउ मोर जसदशा विहाला
बार-बार मोहिं सुरति कराई । कहेउ प्यार जननी निठुराई ।।
भगिनिन्ह सह सब सखियनकाहीं । प्यार भेटबरणेउ सुखमाहीं
दो०-चारहुँ लालन कहँ कहेउ, अमित प्यार पुनि तात ।
अँखिया प्यासी दरस बिन,अहनिशि अति अकुलात ।
सिद्धि कुवरि सुचि समयहिं पाई । पतिसन बोली बात सुहाई
नाथ लाड़ली मोर सुनन्दहिं । कहिहौमिलन प्रणाम अनन्दहिं
सिय बिन दशामोर जस होई । कहिहौ तस पिय हृदय जोई ।
सीयावर सोकुशल हमारी । मिलन प्रणाम विनयबर प्यारी
दरसप्यास अँखिया अकुलानी । कहियो समयपाइ हितसानी
सीय सासु कहँ विनय विभोरी । कहियोप्रणाम दोउकरजोरी
लाल लड़िली वेगि बुलाई । दइहै दिव्य दरश सुखदाई ।।
भेट विविध विधिसब कहँ दीजै । कृपा जाचना मो दिशिकीजै
दो०-एहि विधि मधुर विनीत वर, श्रीसिधि कहत संदेश ।
सीय श्याम सुचि सुरति सनि, भूली ज्ञान अशेष ।।
जननि जनक पदनायो माथा । माँगी विदा जोरि जुग हाथा ।
दै अशीश मिथिलेश सुनैना । रक्षामंत्र पढ़े उर चैना ।।

कछुक पवाय कहेउ अब जाहू । अवधनगर सुत सहित उछाहूं।
सुनि कुमार पद बंदन कीना । सिद्धि सदन गे प्रेम प्रवीना ।।
गये कुवर गुरु गेह वहोरी । करि प्रणाम बोले करजोरी ।।
आयसु होय नाथ अव मोही । लाल दरशहित जाँव सुसोही ।
कहेउ जाहु सुत सत सुख पागे । सुनि कुमार अतिशय अनुरागे
सकल द्विजन कहँ शीश नवाई । सुमिरिहृदय सियरामगोसाई
दो०-दिव्य रथहिं राजे मुदित, श्रीनिमिबंश कुमार ।
दुन्दुभि धुनि अकाशते, झरहिं सुपुष्प अपार ।।
लक्ष्मीनिधि अरु श्रीनिधी, धृत ब्रत औ देवदान ।
आज्ञापार पुनि सेवपर, बंश प्रवीण सुजान ।।
संग अनुज सव सखा सुखारी । सेवक सचिव सुवेष सम्हारी ।
सेनप कछुक सेन चहु भाँती । लै संग चल्यो हृदय हरषाती ।।
कहहि नारि नर इक इकयाही । लक्ष्मीनिधिहि देखि मगमाही
पये कुमार मिथिलेश दुलारी । रानि सुनैना मातु अधारा ।।
सिया भ्रात रघुनन्दन शाला । सुभग शरीर भुवि भूषणजाला
जातलिवावनभगिनि श्वभामा । दशरथपुरी अवधदि विधामा
सुनि-२ हरषहि मग नर नारी । देखि कुंअर कहँ होहि सुखारी
यहि विधि चले जात मगमाही । मध्यमध्यवास पहुचे अवधही

श्रीकिशोरीजी सखियन वार्ता

जब ते गई लिखी सिय पाती । भई खुशी सो सुनो जेहि भाँती
निज आगे सिय सखियन माही। कहति सुहृदय भाव प्रगटाहीं
चलियत अबनिमिपुर कहँ आली । आयो वरषा ऋतुघनमाली

सावन परम सुहावन धन्या । सबके पिता बोलावै कन्या ।।
पिता विनय कौशलपतिमानी । तेहिअवधि कर दिननियरानी
धरहु धीर लक्ष्मीनिधि भ्राता । आवत होहिं पथ महँ ज्ञाता ।।
जे तुमसब राजन सुकुमारी । उर्मिलादि मोहिंअधिक पियारी
सदा सुशील वती सुखदाई । जाहुँ नही मैं तिनहि बिहाई ।।
मेरो सुख आश्रिय निरधारी । बुलाववहिं सुचि जननि हमारी
पाँच लक्ष कन्यन के दाना । मोहिं निमित्त किये तात सुजाना
विदा कीन्ह मम संगहिं काहीं । चलिहैं मम सँग सुखयुत माही
दो०-जैसी अवध को आइ सब, त्यों मिथिला सब जाहि ।
चलिहै साथ प्रमोद युत, आनँद मो हित ताही ।।

श्री लक्ष्मीनिधि का आगमन

यथा योग निज रुचि अनुसारी । बसि पहुँचेसब अवध सुखारी
दई खबर नृप कँ कर वन्दन । आये जनक महीपति नन्दन ।।
शील निधान राम पहँ जाहूं । करहु निवेदन मम बपु आहा ।।
आये इतै बिदेह दुलारे । नयन अतिथि उनहूं सम प्यारे ।।
गए चहिय सानुज तिन पासा । भेट करहिं स्वागत सहुलासा ।
उचित यथा लालसा समेता । लै आवहु तिनराज निकेता ।।
दो०-पिता मुखहिं आदेश सुनि, गये राम सभ्रात ।
प्रिये परस्पर मिलन हित, वरणत प्रीति दिखात ।।
संग अनन्त चमू सुख छायो । राम राज मारग होय आयो ।।
गर्जहिं चढ़े मनमोद अपारा । सहित समाज मिलन पगुधारा ।
मध्यमहा मतंग असवारा । सोहैं राजनन्दन सुकुमारा ।।

दक्षिण राम लखन श्रीमाना। बाम भरत शत्रुहन सुजाना ।।
चमर चारु ढोरत अति राजे। उमगे पुरजन दरशन काजे ।।
रघुवंशिन के तनय अनंता। उज्वल छत्र लिए छबिवंता ।।
धामन जाय चढ़ी पिकबैनी। कहैं लषहु सिय पतिहिं सुनैनी।
चहल पहल बाजन सुनिकाना। श्रवणसुखद आवत प्रियजाना
श्याम भाम मन हरन कुमारे। लखि लखि होत सबहि सुखारे
जनक सुवन रघुनन्दन दोउ। जात वतात स्याल बहनोई ।।
सियके योग भ्रात येइ अहही। रुपशील गुण प्रेम अथाहही ।।
श्याम भाम की सुन्दर जोरी। युग युग जीय सखि रुचिमोरी।
गजहिंचढ़े मनमोदबढ़ावत। सहित समाज मिलन मोहिआवत
धाय धरेउ निमि राजकुमारा। रामहिं मिलेउ कहै को पारा ।।
राम लखन पुनि मिले कुमारा। मानि राम समभाव अपारा।
यथा योग सबहिंन सन भेटे। पुलकि पुलकि प्रिय प्रेम लपेटे।
दो०-मिथिलापुर बासी सकल, भेटे राम सुजान।
सहित भ्रात पुरजन मिलि, प्रमुदित होइ रसखान ।।
मिलन परस्पर शुचि सुखदाई। मिथिला अवधहिं भई सोहाई
कहहिं कुवर अपनी कुशलाता। रानि राय सब हर्षितगाता।
मिथिलापुरी सहज सुखधामा। हैं तेहि वासी सहित अरामा।
कुवर कहे सुनु प्राण पियारे। आप कुशलता सदा सुखारे ।।
चलहु अवध शत्रुँजय ठाढ़ो। गजन शिरोमणि शोभा बाढ़ो ।।
असकहि पकरि कुँवर करकंजा। चले लिवाय प्रीति रस रंजा
गज सोभा कछु बरणि न जाई। श्याल भाम जेहि चढ़े सुहाई

छत्र चवँरसिर शोभासुलहरत। युगलकिशोरदिव्यछबिछहरत
युगल कुंवर की अनुपम झाँकी। श्यामगौर मनहरण प्रभाकी।
दो०-यहि विधि पवमानंद पगि, अवधपुरी प्रियवाम।
बरसहिं सुमन सुमोदभरि, छाइ सुप्रेम अकाम॥
पहुचे राजभवन के द्वारे। परम सुशोभित कह को पारे॥
उतरि राम अरु जनक कुमारा। भाइन भृत्यन सहित उदारा
चले मिलन दशरथ महराजहिं। पाँवरे परे सुखद मन भ्राजहिं
सानुज राम भूप पद बंदे। लहि आशिष अति प्यारे अनन्दे।
कुंवर जाय चरनन्ह सिरनाए। लिये उठाय हृदय महँ लाये॥
भूपति पगे प्रेम रस धारी। लीन्हें कुंवर उठाय सम्हारी॥
हृदय लाइ सुख भयउ अपारा। कीन्ह प्यार वहु भाँति दुलारा
दो०-सभा सदन शोभा अतुल, कलित विपुल भूपाल।
भयो सभागम शील लख, सबहुँ भे मोद निहाल।
कुंवरहिं लीन्ह अंक बैठाई। बारबार निज हृदय लगाई॥
बहुरि धीर धरि दशरथ राई। पूछी कुशल विदेह भलाई॥
जासु कुशल पूछहू नर नाथा। सबविधि कुशल रहै तेहिसाथा
राउर जबते भयो पयाना। मिथिला दशा न जाय बखाना।
पितु तब पद प्रणाम बहु कीन्हा। विनतीं किए जोसुनहुप्रवीना
भाइन्ह सहित राम कहँप्यारा। योगिन्ह दिये वियोग सम्हारा
सीता प्राण सजीवन मूरी। ता बिनु स्वाँस चलैं नहिंपूरी॥
सचिवसहितसिगरे रघुवंशीन। तातप्रनाम सहित निमिवंशीन
कहौ कहा अब कुशल भलाई। दरस प्यास सबहि अकुलाई॥

दो०-स्वाँस सुहागिन स्वार्थ निज चहत रहूत अठयाम ।
तातें आवत जात नित, रटति रहति सियराम ।।
जनक सुवन पुनि वचन मृदु, शीशनाइ करजोरि।
बोले सब कहँ देत सुख, सुनहिं विनय प्रभु मोरि ।
भेजी भेट तात तब चरणा । स्वीकृत करहि दासगुनि शरणा ।
दशरथ कहे काह नहिं पाए । पुनि-२ जनक सुभेट पठाए ।।
धनि धनि वैभव अमित उदारा । लजत कुवेरहु देखि भुआरा
जनक सुवन लहि भूपति प्यारा । बोले बचन विनीत विचारा
आयसु होइ मातु पहँ जाऊ । करि पद परस जनम फल पाऊँ।
भूपति कहेउसकलरनिवासा । निशिदिन रहत दरशतवप्यासा
जाहुँ सबहिं प्रिय रूप दिखाई । करहु सुखी मन मोद बढ़ाई ।।
रामहिं कहा कुमार लिवाई । जावहु अन्त:पुर सुख छाई ।।
कौशिल्यादिक रानी सोहाई । करत प्रतीक्षा रहीं अवाई ।।
कौशिल्या भीतर बुलवाई । चरण परत सुत सो उर लाई ।।
बंदे सब राघव की माता । कीन्ह प्रणामहिं पुलकित गाता ।।
दो०-भरत लखन प्रिय मातु दोउ, प्रेम पगीहियलाय ।
शीश सूँघि आशीश दइ, करत प्यार सुखछाय ।।
दरश प्यास तब रही महाई । आज भई शुभ सुफल सोहाई ।।
कहहु कुशल मिथिलापुर केरी । सहित मातु पितु सुखद घनेरी
करति मोरि सुधिरानी सुनैना । आपन जानि कहहु सत बैना
मोर मातु तव चरण प्रणामा । करिवर विनय कही अभिरामा
चलत मोहिं नयनन भरिवारी । कही सँदेश सुनहु महतारी ।।

प्राण प्राणप्रिय लली सो अहई । तुमहिं सौंपि मैं निर्भय रहई ।
सुनत कौशिला प्रिय रस सानी । बोली सुखद सरल मृदुवानी
मोहिं नृप सहित सकल परिवारा । अबधकेरसिय प्राणअधारा
जीबन भूरि नित्य हिय जानी । सेवहुँ नयन पुतरिकरि मानी ।
सब गुण धाम सुआनन्द रासी । चूक दुःख सपनेहुँ नहिं भाषी ।
छन-छन चेष्टा मोरहु लालन । सिय सुख हेतु रहति सबकारन
कुँवर मातु के प्यारहिं पोषे । बोले बचन प्रेम रस तोषे ।।
पितहिं करी प्रणाम सरसाई । भेजी भेट विनय महताई ।।
दो०-मातहु भेजी भेट मम, तब चरणन के पास ।
करण कृतारथ लेहिं सब, बिनय करत यह दास ।
सुनिवर विनय राम महतारी । बोली धनि-धनि प्रीति उदारी
सियहिं पाइ मैं काह न पाई । सब विभूति तेहिं अंश लखाई ।
तापर धनि धनि जनक सुनैना । दीन अमानी बने सचैना ।।
तिनकी भेट परम प्रियमानी । स्वीकृत सदा कुंवर जियजानी ।
बहुरि कुमार जोरि युग हाथा । बोले बचन नाइ पद माथा ।।
निरखन ललिहिंनयन अकुलाई । आयसु होइ मिलौं तहँ जाई ।
कहत भरे जल नयन मझारी । सुनि सुख लही राम महतारी ।
पुनि पुनि लै लै गोद मझारा । तीनहुँ मातु कीन्ह बहु प्यारा ।
रामहिं मातु कहीं हरषाई । कनकभवन देवहु पहुँचाई ।।
कुंवरहिं कही अवशि अबभैया । जाय बनहु भगिनिन्ह सुखदैया
सकल मातु कहँ कीन्ह प्रणामा । चरण शीश धरि प्रेम प्रधाना
चले कुँवर पुनि पुनि सिरनाई । सहित राम दोनहु दल भाई ।।

॥ कवित्त ॥

बीरा जरकसी मांथ बाँधे बंधु सखा अमित साथ ।
आये रघुनाथ मिलन होन तब लागी है ॥
आस पास दास सकल चमर ब्यंजन लीन्हे ।
स्वर्ण रतन झारिन में सरयू जल मागी है ॥
बैठे सकल सावधान वचन रसखान होत ।
बाढ़ो आनन्द सिंधु निरखत बड़ भागी है ॥
दासी येक समाचार कह्यो जाई लड़ैति जुसो ।
सो सुनत चरण भूमि ना परत अनुरागी है ॥
निमिकुल कुमार सुकुमार सो प्रफुलित गात ।
चले सिया मिलन हेतु संग लखन लाल है ॥
भरत रिपु दमन संग लज्जित कोटिकाम अंग ।
अतिहिं उमंग भरे सबै आल बाल है ॥
वाक्य विलास सुख रास होत आपसू महँ ।
दास खास पास खड़े सुनि सब निहाल है ॥
कंचन मणि धाम के झरोखा लगि झाँकत है ।
चन्द्रबदनि मृग नैनी लावण्य विशाल हैं ॥
यहि विधि अति हर्षित युगवारे । रथहिं विराजे आ गये द्वारे ।
बहुरि राम श्रीनिधि रुचिजानी । दासी तुरत बुलाय बखानी ।
अंतःपुरहिं कुँवर लै जाहू । प्रेम सहित मन महा उछाहू ॥
जनक सुवन लहि प्रभु संकेता । हिलमिल गवने सिया निकेता
सहित भ्रात मन पुलकत जाही । दरस प्यास बहुसबहियमाही

दासी समाचार कहि गायो । स्वामिनि भाइ मिथिलासे आयो

दो०-दासी सब कुँवरन निकट, गई कही तब जाय ।
होत बुलाहट महल में, चलो उतै हरषाय ।।
पुनि सिय के ढिग आइके, कहि मुदमोद बढ़ाय ।
समाचार सुनि मगन सिय, भ्रात दरश को जाय ।।

दो०-महल द्वर जब गये, देखि सखिन की भीर ।
चन्द्रकला यथेश्वरी, स्वागत करि लै गये भीतर ।।
लक्ष्मीनिधि देखे सियहिं, चरण परे हरषाय ।
चरण कमल छोड़त नही, सिय तब कही बुझाय ।।

सियहु सुढ़ारति नयनन पानी । परत कुमर पदमनहु धुवानी।
बिलखि विलखि भ्रात भगिनि चरण परिगहि टेक ।
प्रेम सरोवर उमगी चली, दिया ढुवाय विवेक ।।

कछुक काललहि धैर्यकुमारा । औरहु भगिनिन मिलेव सुखरा
उरमिला माण्डवि श्रुति कीरति । प्रेम विवसन दशा विभुइति
भ्रातहि कीन्ही सकल प्रणमा । विरह सनी भुली तन धामा ।।
कुँवर उठाय हिय निजलाई । सियसम प्यार किये सुखदाई ।।
भइया तब मम प्राण सम, अस क्यों हौत अधीर ।
जननी कुशल सुनावहू, जाते मिटै सब पीर ।।

कछुक धीर धरि आशिष पाई । सब वहिनिन से मिले सुहाई।
भ्रातन कीन्ह सकल परनामा । बिरह सने भूले तन धामा ।।
सहित सीयसबभगिनि अधीरी । मिलीसकल भ्रातन्हबिरहीरी
हिलमिल सबहिं सिंहासन राजे। मैथिल प्रेमविभोर बिभ्राजे।

पुनि सिय फफकि कहै सुनु भइया । कुशल अहैं मम पिता मैंया
भाभी कुशल सुनन के काना । अतुर रहत सदा अकुलाना ॥
प्रिय परिवार पुरी के लोगा । अहैं प्रसन्न रहै रत योगा ॥
मिथिला प्रैम कहौ किमि गाई । तब वियोग तरु रहे सुखाई ॥
पशु खग मृग छोड़े जल पाना । डारत नीर नयन अकुलाना ।
सुनि तब नाम सुहेरहिं तेही । जो कह जनकलली वैदेहीं ॥
मैंया पिताजी प्यारहिं कीन्हें शीश सूघि तोहि आशीश दीन्हे
तिनकी दशा न जाइ बखानी । छन छन बीतत कल्प समानी ।
बहुरि कुँवर कछु धीरज धारी । दीन्हेउ सिद्धि पत्रिकाप्यारी ।
करि प्रिय प्यार कुमार प्रवीना । मणिगण भूषण वसननगीना
यथासियहिंतसऔरहिंदीन्हीं । सकलभगिनिभरि प्रेमहिं लीन्ही
सखी सेविका जो सिय केरी । ते सब पाई भेट घनेरी ॥
भोजन ललित सवाँरि कै जनक लाड़िली लाई ।
सब भाई सम जानि कै, हिंतसो दई खवाई ॥
अँचवन बहुरि कराय कै, वीरी ललित बनाई ।
दीन्ही सबकहँ हेतु सों, प्रिया शरण बलिजाई ॥
प्रिय भाईन के मिलन को, बैठीं सियढ़िग जाइ ।
बाते इत उत होन लगी, समुझत हिय हुलसाइ ॥
कुँवर कहे सुनु अनुजा मोरी । संध्या करन भई अब देरी ॥
प्यार पाय सिय पूछि कुमारा । चले बास जहँ सुखद अपारा ।
सबके बास अनूप सुहाए । दशरथ नृप दीन्हे मन भाए ॥
जाय कुंवर कृत्यादि निवाही । निशा भई जनु स्वागत काही

बैठ पलँग निज कच्छ सुहाहीं। राम कृपा वरणत मनमाही ।।
तेहि अवसर रघुनन्द प्यारे। मिलन इकान्तहिं आइ पधारे ।।
देखत कुँवर उठे हरषाई। हिय लगाइ कर गहि बैठाई ।।
श्याल भाम जस प्रीति सलोनी। भईन है नहिं अब कहुँ होनी
कुमर कहे मम भैया दाऊ। प्यार अशीश कहे प्रिय भाऊ ।।
आप बियोग बने विरहीले। भूले ग्यान विराग रसीले ।।
दो०-प्रेम मदीले बनि रहे, भूलि जात सब भान।
राउर मिथिला या अवध, कहाँ बसहिं नहिं जाना।
राम कहा सुनु सखा पियारे। मिथिला विसरत नाहिं बिसारे
सिद्धिकुवरि किमिजाइ बिसारी। प्रीतिरीति जेहिजगतेन्यारी
सब विधि प्रेम दोउ सुख साने। करत बात मनमोद महाने ।।
बहुरि कुवर ले राम गोसाई। ब्यारु कीन्ह मातु गृह जाई ।।
पाय अनुसासन कुँअर पुनि आये तेहि ठौर।
जहँ बैठे रघुनन्दन सकल रसिक सिर मौर ।।
रामलाल सुख पायकै, बैठे सकल कुमार।
नृत्य गान होने लगी, आयो गुणि जन अपार ।।
येहि विधि गान रंग ते, नृत्य गान सुखदीना।
बहुरि अमित वकशिश भई, अतिप्रसन मनलीन।
आए रसिक दोउ पुनि तहवाँ। सुन्दर सदन बास रह जहवां।
कुँवर कहे प्रभु सखा पियारे। जाहु शयन हित निज आगारे।
यहि विधि दोउ प्रेमरस भीने। उठे सबहिं दरशन प्रियदीने ।।
नित्यकर्म करि नेम निबाहे। गए भूप पहँ अतिहिं उछाहे ।।

करत प्रणाम दूनहूं काहीं। लीन्हे भूप लाय उरमाही ॥
कहि मृदु बैन प्यार बहुकीन्हे। सोहहिं भूप गोद दोउ लीन्हे ॥
यहि विधि कुंअर राम के साथा। भोगहि भोग नित्यसुखपाथा
कहुँसियनिकटकबहुँसियरामा। कुंवरजहहिंसुखशान्तिललामा
कवहुँक भरतकबहुँ रामानुज। कबहुँक रिपुहन भेटहिंभरिभुज
कुवरहिं अपने भवन लिवाई। अतिसत्कार करहिं सुखछाई ॥
दो०-यथा राम बहु प्रीति युत, करहिं कुँवर सन्मान।
तथा करत सिगरे अनुज, सखा सरिस मतिमान।
भगिनि उर्मिला माण्डवी आवै। श्रुति कीरतिसहहिय हरषावै
भवन आपने भ्रात बुलाई। करहिं प्रेम सत्कार सुहाई ॥
यथा सीय सेवहिं निज भैया। तथा भगिनि सिगरी सुखदैया
कबहु बुलावैं नृप परिवारा। कबहुँ सचिव सरसत सुखसारा
गवनहिं कुबर प्रीति सरसाने। पावहिं सुख सतकार महाने ॥
कबहु लाल सहअवध मझारा। रथचढ़िकरहिं सुखदसुविहारा
भोजन को दशरथ नरनाथा। लै बैठे सबको निज साथा ॥

॥ कवित्त ॥

कौशिल्या महल राजभोग करि तैयार भई,
एक सुकुमारी आइ कह्यो रामलाल सों।
भूषण बसन कछु उतार सकल सुकुमार खड़े,
सुषमा अपार चले मत्तगज चाल सों ॥
महल प्रवेश कीन्हो दासी चरण धोइ लीन्हो,
बैठे मणि पीढ़न पर परम शोभाल सों ॥

सोना मणि जड़े थार भोजन विधि चार सर्बं,
भोजन परोस्यो आनि पावत रसाल सों ।।
देन लागी गारी सुकुमारी सकल नाम लै लै,
बढ़यो अति विनोद मोद सुन्दर सदन में ।
चहू ओर चन्द्रमुखी चपला युत नयन भरि,
देखति वर शोभा सब लागी परदन में ।।
व्यंजन परोसत में मंद मुसुकि एक सखी,
दधी लपटाई जनक नन्दन के बदन में ।
यह देख सब सुकुमार अट्ठहास करे,
दामिनि सी चपल होत सर्ब के रदन में ।।
दो०-भोजन करि करि आचमन, पान अतर पुनिपाय ।
सब कुमार गे सयन हित, निज निज सेज सोहाय ।।
कबहु कन्दुक कहु जल केली । करहि कुअर राम संग मेली ।।
क्रीड़ा होति अनेक अगारा । रसमय पावन प्रेम अपारा ।।
दो०-बन प्रमोद रघुनाथ संग, विरहि कुंअर ललाम ।
देखि देखि पुरवासी सब, कहत धन्य सुखधाम ।।
नित अवधेश सभामहँ आवै । अपनेहि ढिगहि बैंठावै ।।
भौजन को दशरथ नर नाथा । लै बैठे सबको निज साथा ।।
अमितराज राजसुत सुराजा । अमित सचिव प्रिय लै भाजा ।
बैठि पंगते अजिर विशाला । बड़ें हर्ष अंतहपुर वाला ।।
जनक सुवन कहँमनअनुरागी । जिनहियोगतेगारी गावनलागी
नव नव पाक अनेक प्रकारा । बनवै शुचि रुचि अनुसारा ।।

सब कह अचमन करवाई । पान अतर माल दै सुख पाई ।।
लक्ष्मीनिधि पटुनिति निधाना । नितहि विदामांगहिं नृपालना
राखे राउ अधिक करनेहु । कछु दिन हमहि नैन सुखदेहु ।।
दो०-यहि विधि सो कछु दिन रहे, लक्ष्मीनिधि पुरमाहिं ।
जो जों सुखपुर लोग लहि, कहिबे की कछु नाहि ।।

।। छप्पय ।।

निकट विदा की दिवश जानि कौशिल्या रानी ।
निसि में राजा सो सुनाइ कहि मधुर सुबानी ।।
सुनहु प्राण पति वधू सकल मन को हर लीना ।
सुन्दरि अति सुकुमारि सर्व गुण माहिं प्रवीना ।।
बिदा करत में मोहि अति पुनि समधिन रुख राखनो ।
उचित जानि मन बोध करि अब कछुबनत न भाषनो ।
राजा कहि सुनु प्रिया बिमल मति नेह सागरी ।
तुरत बोलयब बधुन शोच जनि करहु नागरी ।।
रचहु सिगार अनूप बधुन हित, अतिमन हारी ।
जेहि पहिरत मन मगन होहिं सब जनकदुलारी ।।
समधिन की भूषन बसन रचहु बिचित्र बनाइके ।
बिदा करण में उचित जसतस करहू मन लाइके ।।
दो०-पिय आज्ञा सुनि कौशिला, भइ मन हर्ष अपार ।
प्रात भई सजने लगी, वस्तु अनेक प्रकार ।।
सो रचना को कहत में, कविवर बुद्धि लजात ।
जहाँ प्रगट सियाराम हैं, तहँ सब अदभुत बात ।।

बिदा होन की दिवश शुभ, और लगन शुभ आय ।
सासुन जनक कुमारि को, करहिं शृंगार बनाय ।।
अमित सखी कैकर्य में, मन रुचि जाननिहार ।
ठाढ़ी सब सेवा लिये, होन लगी शृंगार ।।
प्रथमहि सरयू जल ललित तामहँ मेलि सुगंध ।
मज्जन वधुन कराय के, कीन्ही केश प्रबन्ध ।।
सारी कीनारीं मणि जरित, गतमुक्ता चहु फेर ।
मध्य लाल बैली कनक, मणिय बुटे घनेर ।।
लसत विसद नख अवली कोटि चन्द को होत ।
नखशिख छवि लखि, सहचरि वीरिकरखर देत ।।
मुकुर दिखावती हर्षते, निरखि वलैया लेत ।
राई लोन उतारहि,बारबार नोछा वर करिदेत ।।
यहि विधि माण्डवि उर्मिला अरु आई संग राजकुमारि
श्रुति कीरती आदि सिंगार करि सहचरि भई तैयारी ।
दिब्य अनूप अमोल सुची, भुषन वसन नवीन ।
पहिराय अति प्रीति सो, सीताहि युत भगनिन ।।
जब मुहूंत शुभ आयऊ, सीता वहिनि समेत ।
करि शृंगार मन मोहनी, लखहिं वलैया लेत ।।

।। छप्पय ।।

कोशिल्यादिक रानी सकल तेहिछन तहँ सोहैं ।
बधुन माधुरी देखि सकल सासुन मन मोहैं ।।

ब्यंजन अमित प्रकार थार वहु सादर लाई ।
बधुन खवाइ सप्रेम सहचरी दइ अँचवाई ।।
पान अतर सबहीं लई सुचित्त महल बिहरन लगी ।
कौशिल्या सजने लगी करनी बिविध सो जगमगी ।।

दो०-राम लाल आए महल, मिलि सिय नेह बढ़ाय ।
चलन समय में प्रेम की, को छबि वरणि सिराय ।
प्रियन दृगन जलझरत लखि,पिय नैनन झरनीर ।
पुनि धीरज धरि प्रियन ते, बोले श्रीरघुबीर ।।
मधुर बचन प्रीतम कह्यो, जनि मनकरहु उदास ।
तुरतहिं हम आउब उहाँ, मिलन हेतु तब पास ।।
सो सुनि सीतादिक मुदित, चली सासु के गेह ।
मिलन परस्पर होन लगि, बाढ़ेउ अधिक सनेह ।।
कौशिल्यादि आशिष दई, बहुरि कही मृदुबयन ।
तुरतहिं लेब हम बुलाइ हम,तुमबिन पलहुँन चैन ।
यहि बिधि सबसों मिलन भई, जानि लगन शुभमूल ।
सकल कुंवरि चढ़ि पालकी, सब सुख बरषत फूल ।।
अवधनाथ सब कुंवरि को, विदा कीन्ह हरषाय ।
भूषण वसन अनेक मणि, दयउसो वरणि न जाय ।
मिथिला ते जो आयऊ, सब कर करि सनमान ।
बिदा कीन्ह राजा मुदित, चले सब करत बखान ।

कन्या जे मिथिला ते आई । बिदा सब की सुविधा कराई ।।
कुंअर जाय भूपति सिरनाई । पितु संदेस वर विनय सुनाई ।।

मिथिला हेत करन पहुनाई । सानुज साजसकल अबजाई ॥

लक्ष्मीनिधि सब बंधु युत, रामहिं कीन्ह जोहार ।
सब भाइन ते विनय करि, बोले बचन उदार ॥
माघ शुक्ल में आइहो, मिथिला विहरन हेत ।
करि कबूल रघुवंश मणि, हर्षित आशिष देत ॥

दो०-चौड़ोला सिवकन रथन यथा उचित आसीन ।
चलि जानकी सखिनयुत, विलहि करि वन्दि प्रबीन ।

सखा जे मिथिलापुर ते आये । बिदा किये सब सुविधा कराये
पूज्य अनुग बर्गन की भीरा । चले लिवाय जनक सुत धीरा ॥
सुखहि सुखी मारग महँ जाहीं । बरसहिं सुमन करैं नभछाहीं
तैसहिं बसत चलें सुख जाहीं । पहुँचि गये मिथिलापुर माहीं।
शुभ मुहूर्त में महँ भयउ प्रवेसा । अगनित मंगल करेउ नरेसा
आगे ते सब कहँ लै आये । लागे बाजन वजत सुहाये ॥
फल्यो सुकृत तरु बहुरि कियारी । देखन को उमगे नरनारी॥
मंगल वस्तु करन महँ लीन्हें । आवै दरश मनोरथ कीन्हें ॥
यहि विधि सब पुरजन सुख देता । पहुँचे सुन्दर राजनिकेता ।

॥ छन्द ॥

उत मातु आवति जानि सिय हरषित हृदय आनँद भारी ।
सखि बोली आरति साज सजि,परिछन चली पग लरखरी ।
जल फेरि अपर पालकिहिं पढ़ि मन्त्र रक्षा रस हिये ।
करि बार बारहिं आरती प्रिय मातु हरषित अति हिये ॥

सो०-सीयहिं लई उतारि, मातु सुनैना मोद भरि ।
हिय महँ हर्ष अपार, नयन नीर अबिरल बहत ।।
उतरी सीतदिक सुकुमारी । आगे आनि मिली महतारी ।।
बार बार हिय हरषि लगाई । चूमि कपोल बहुत सुखदाई ।।
जनकलली प्रिय पाइ स्वमाता । महामोद मन पुलकितगाता ।
इहै भाँति सब पुत्रिन काहीं । मातु उतारत पुलकत जाहीं ।।
सखी सेविका बीचहिं सीता । पूर्णचन्द्र समशोभ पुनीता ।।
सादरमिलेउसकल रनिवासा । लहिस्वाती जलपियहिंपियासा
सिद्धि कुंवरि अति आतुर आई । मिली सप्रेम ननद भौजाई ।
दो०-सियहिं भगिनि युत लेइ करि, माता निज गृह जाय ।
बैठाई सब कहँ मुदित, देखि सिया सुख पाय ।।
सियहिं गोद लैं भोग पवाई । अनुजा सहित सेविका पाई ।।
अचवन दै पुनि पान पवाई । माल पिन्हासु इत्र लगाई ।।
सिद्धिकुंवरि मुख लखि-२ सीता । होति सुखी प्रिय प्रेमपुनीता
आवन उत्सव सदनहिं छायो । नृत्यगान बर बाद्य सुहायो ।।
सिया दरस हित मैथिल नारी । अमित सुरी अंतःपुर भारी ।
जानि सबहिं शुचिप्रेमपियासी । धरीअमित तनसिय सुखरासी
छनमहँ मिली सबहिं सुख दीनी । मर्म लखे नहिं कोउ प्रवीनी।
सब कहँ सवहिं भाँति सुख देई । छेम कुशल पूछी सब कोई ।।
जनक महराज कुशध्वज आये । मिले सकल कुंवरिन मनभाये
देखत सिया बिलख उठि धाई । नयन नीर ढारत लपटाई ।।
गोद उठाय लीन्ह हिय भूपा । भूले तन मन बुद्धि स्वरुपा ।।

शीश सूंघि जल ढारत नैना । सिय अभिषेक किये अतिचैना

दो०-बहुविधि सीतहिं प्यार करि, बोलेव भूप महान ।
आज प्रकाश्यो भवन मम, तब पग धरत सुहान ॥

मिथिला अब लौ रहिं अँधियारी । ललीविरह तबदीनदुखारी
सब विधि सुखी पुरी भै आजु । आनंद रूप रही सब भ्राजू ॥
भूपति वैन सुनत सकुचाई । पितु तन लिपट सिया सुखपाई ।
पुत्रिन सकल मिले नृपराई । शीश सूंघि अतिसय दुलराई ॥
बहुरि भूप रानिहि समुझाया । भोजन शीघ्र करावहु भावा ॥
सेज सुलावहु थककर आये । असकहि भूप शयन गृह भाये ।
सीय राम पद सुमिरत चाऊ । शयन कीन्ह अतिसुन्दर भाऊ।

दो०-बहुरि सुनैना हरषि हिय, कुंवरिन सकल खवाय ।
प्रिया शरण अचवाय के, पान दई बलिजाय ॥

सिद्धि कुंवरि सासुहि ढिग आई । पाँय पलोटि प्रेम उर छाई ।
करि बिनती सीतहि लै साथा । शयन कक्ष गइ भरि रसपाथा
कीन्ही बातै विविध प्रकारा । भाभी ननद सुप्रेम प्रसारा ॥
हाव भाव युत शयन कराई । पाँय पलोटि बहूंत सुखपाई ॥
कहत सुनत पुनि आलस भीनी । सोई दूनहू साथ प्रवीनी ॥

दो०-चन्द्रकलादिक कुंवरि सब, गइ निज जननी गेह ।
जात भई अतिमोद मय, वरणि को सकै सनेह ॥
नित आवहि सिय के निकट,सब कुँवरिन सुखधाम ।
एकै मन एकै दशा, जननिहि लखि विश्राम ॥

जनक महूंल दिन दिन सरस, परमानंद सुख होत ।
नवल नेह नित नित बढ़त, छन छन प्रेम निसोत ।।

ऐक दिना सुनैना रानी । बैठी हर्ष सहित दोउ रानी ।।
क्रीड़ति सखियन में तेहि धन्या । आई निकट सियादिक कन्या
बाहु पसारि लाइ उर लीन्ही । पुलके अंग अंक धरि लीन्ही ।।
चिबुक पकरि निजकरमुखजोहीं । चूमिकपोल अधिकसुखलेहीं
केश सुगंध तैल सन ओछे । महा मृदुल अंचल सो पोछे ।।
बिविधभाँति मिष्ठान मँगावा । करिकरि प्यार सुपाणिपवावा
दासिन पान दान लिये आगे । बीरा दिये सुचित अनुरागे ।।
बिद्रुम अधर रदन लघु नीके । लगे सोहावन मोहन जीके ।।

।। अम्बाजी ललीजू से पुछना ।।

दो०-निरखि निरखि छबि माधुरी, अकथ प्रेम महँबोरि ।
बाते ससुर निकेत की, पूछन लगि मृदु सोरि ।।

सासु तुम्हारी बहुत प्रवीना । ताते लाड़ अधिक तेहि कीना ।।
राजविभव केहि भाँति निहारी । दियो कहाँ मुखदेखितुम्हारी
तब कर असन तुम्हार रसोई । दिए जो ससुर बतावहु सोई ।।
देख्यो केतिक कुटुम बिपुलाई । हीय कौन की बहुत बड़ाई ।।
कैसी सौंज व्यवहार बिशेषा । श्रीयुत अवधनगर किमिलेखा ।
ननद कितेक भानुकुल माहीं । जानै हम शृगीऋषि व्याही ।।
कहोबातबधुननकिमिमाना । कियो तुमकिमिपरिजनकी काना
कहौ बहुरि किते सासु निकेता । रहतहती अनुजनहिं समेता ।

॥ छन्द ॥

तुम सासु गृह की बात सकल न छिपाउ कछु सकुचाइ कै ।
प्रिय परमनिमि महाराज की स्तुति करहुँ न कछू बनाइ कै ।
बहुराज दारन मध्य मुदयुत धरै पुत्रि निज गोद में ।
हृदिलाइ पुनि पुनि कहैं हँसि हँसि उत्कंठा बचन विनोद में ।
सो०-सुमती नैन बनाइ, शील पताका ते सकल ।
जितै तितै मुस्क्याय, हेरे युवति विलास युत ॥

॥ धाई जोगई रहि साथ बताती है ॥

दो०-दासी चतुरि सुतान की, लसै पास जोरि पानि ।
बोली हँसि हँसि वर सुमति,सब में गौरव बानि ।
मम स्वामिनि बातन पटु अहई । सकुचति हैं उतको नहिंकहई
पूछत अति लालसा ते जोई । सुनिये करहु निवेदन सोई ॥
सासू इनकी सब श्रीमाना । शीलबती सब सुमति निधाना ।
सो तृभुवन सुनी नहिं ऐसी । देखी बिमल हृदय की जैसी ॥
जानै निज रामादि कुमारा । करै बधुन को इक सम प्यारा ॥
सब ते लघु समधिनी तुम्हारी । तरुणि स्ववस पति रुपकुमारी
विदित नाम जिनकी कैकेई । उर्मिलाहिं लाड़ लड़ावहिं तेई।
नितही राखहिं प्रान की नाई । वहुत जानकी देखि सिहाई ॥
दो०-श्रुति कीरति अरु माण्डवहिं, कौशिल्या महरानि ।
लै बैठहिं ढिग लै उठहिं, लै पौढ़हि प्रिय मानि ॥
देखी परम सुमित्रा ज्ञाता । लषन शत्रुहन की जो माता ॥
अपनो सुत व बधुवन केरा । रही इतै दिन मैं नहिं हेरा ॥

प्यारे मातु की अतिसर लाई। नहीं येक मुख करै बड़ाई ।।
जिनके उचित जे नेग पठाये। ते मुनि पतिनिहिं सो करवाये।
जदपि प्रवर जेठी महरानी। सब नृपतिय आगे निज आनी।
तऊ बंश मंडन मतिवाना। सीतहिं लाड़ लड़ावहि माना ।।
कवहुँ मोर अनुमोदन हेता। दरसै प्रेम इकत्र निकेता ।।
छनछनसुधिभूपतिमगवावहिं। बहुतदुलारहिं जबभवनहिंआवहिं

दो०-लोकप जिनके बिभव को, सुनियत करै प्रकाश।
देखौं मैं सबते अधिक, कौशलपति आबास ।।

जबते बधुन विलोकन कीन्हा। सरबस इनही को कर दीना ।।
लोकरीति भूषण पहिराये। देखे अस न कहाँ बनि आये ।।
विविध अनूप अपूरब माता। पहिरि रेशमी बस्त्र सुगाता ।।
भौंजन समय अवधपति दीनो। ते तुरंत ये धारण कीनो ।।
देखियत दुती वरनि नहिं जाई। अहो लड़ैती देहु दिखाई ।।
धरि कर कमल शीश परप्रीता। दिय बतायचूड़ामणि सीता।

दो०-हार मांडवी उर्मिला किंकिन कल द्यु ुतिमान।
श्र ुति कीरति नूपुर रुचिर, रव अनूप छबिखान।

देखे दुहुँ नृप तियन सराहे। बड़े महीप सुरन जिन चाहे ।।
बहुरि सुमति धाई सायनी। लागी कहन श्रवन रुचिजानी ।।
सूर्यबंश समजग में उदारा। दूजौं नहिं जानिय संसारा ।।
तेहि के नृप सेवन महँ रहई। दशरथ छत्र छाँह सुख करई ।।
सुरन समान ऐश्वर्य सँवारी। लखी महाछवि युत वर नारी।
अगनित पट भूषण नृप दीन्हें। बचे शेष बहुधारण कीन्हे ।।

पहुँची तेहि कुल में वैदेही । अस कुटुम्व हरि सब कहँदेही ।।
चहियतहू तो सासुरो जैसो । तब पुत्रिन को मिलो उतैसों ।।

दो०-रति रति पति से तिय पुरुष, भोग की मूरतिवंत ।
राजै अतुल समृद्धि सौं, रंग रूप श्रीकंत ।।

पहिले गर्भ कौशिल्या रानी । जन्मी शान्ता नृप कल्यानी ।।
मित्रभाव में दशरथ राजा । रोमपाद नृपपुत्री काजा ।।
प्रजा कुशलचहिपुण्यवढ़ावन । शृंगिऋषिहिं ब्याही अतिपावन
शान्ति ननद लागे इन केरी । जेठी गोरी बरण वड़ेरी ।।
बंधु व्याह पूजन जो गावा । सो विशेष उनही सव पावा ।।
विविध विनोद सो लाड़ लड़ावहिं । भोजनअपने संगकरावहिं
और विपुल रविवंश कुमारी । सुता समान महीप की प्यारी ।

दो०-जैसो उचित सुवासिनिन, समय समय परमान ।
कौशिल्यादेवी निपुन, राखै वधुन प्रिय प्रान ।।

सव रविवंश वधू मतिमाना । जानिय निजवर वहिन समाना
नीकी अनुवर्तन महँ भासी । लगै मोहिं निमिकुल दुहितासी ।
जैसे मोहिं माता ये माने । तौनहु भाव सकल वे जाने ।।
वोलचाल विहरन महरानी । इनही सो सवको प्रियमानी ।।
देखे तिन आचरन विसाला । चले यथा कुलरीति वे वाला ।।
तिमि तुम्हार तनया बड़भागी । रहत वहाँ सवको प्रियलागी।
शुशीलादि गुण सौं वसकीनी । रहे सराहत सुहृद प्रबीनी ।।
मरयादा वर्तें अनुमानीं । नृप किंकरी सुप्रेम भुलानी ।।

दो०-मन्दिर कौशलनाथ को, लसै परम विस्तार ।
कौशिल्या रानिन से सदा, भूषित रहत अपार
देखन को उत सब अभिरामा । बनी रहैं निशिदिन बड़बामा
सीतादिक पुनि कियो तहँबासा । करी अनेक विधान विलासा
उत्सव करे कौशिल्या रानी । करहिं विधान बधाइन आनी ।।
लै बैठे मुद युतनिज पाहीं । रुचिर कुतूहल विविध दिखाही ।
बदन विलोकि बिलोकि सिहावै । इनके हाथन सौज दिखावै ।
पुलकित तन सबकी बलि लेही । दृष्टि न लगै दिठौननि देहीं।
।। कौशिल्या दशरथजी बारता ।।
इक दिवस दसर लौ श्रीमाना । बैठे करत रहे मृदु वातना ।।
वात्सल्यलै रति बड़ि जानी । पिता इच्छा कर जो बखानी ।
नाथ प्रभु से मैंथिलेश विनय कराई । पठवै ईत सानुजरघुराई
रहै व्याह मै बहु सुख छायो । रहि सुछन्द दरसन न पायो ।।
बनै अतृप्ती नैन अकुलाही । त्यौ अभिलाष भोगपुर माही ।।
जेते दिनवास उत करहि । ते दिन शुभ आयुस मह परही ।।
सुन प्रसन्न मन नृपति उचारा । निज पुत्रन मैंकवन बिचारा ।।
जाहिराम लक्ष्मन तबसाथा । लाड़ लियावहिनीका निमनाथा
भरत शत्रुहन इहाँ रहिहै । तेहिंसन लाड़ल्या अनुसारेही ।।
देहि उभय नुतन सुख दोऊ । दृगनसम लागै रस रुप सोऊ ।।
शयन भवन मह भूपति ग्याता । कहि कौशिल्या सो यह बाता
अहो प्राननी तिय सुचिचारनी । कहिमोहि इमजनकदुलारीनी
निमकी प्रीतिभाव मइ जानौ । तथा सुनैना को अनुमानौ ।।

सब सुख धाम राम अभिरामा । प्यारे महि प्राणते लागे रामा
उन विनहित न लखौ महिमाहीं । प्रेम बंधे उकहिसकत नाही
सुमिर सुमिर शुभवास समधिके । रहे पठावन जीवन जिके ।
हर दिन पुत्र तुमरिन केरी । दरसन ईच्छा लिखहि बड़ेरी ।।
दो०-आपुन कहत तैसे ही, कौशिल्या जुर हाथा ।
समधिन की पाँति सकल, रहि सुनावत नाथ ।।
रहै भरत रिपुदन इहाँही । भल सुमंत कहेऊ गुसाही ।।
युगल युगल ए रूप निधाना । होइ इतै उतै सुखद समाना ।।
नेह मुख्य कर सोचन ल्यावहु दुर्लभ नहि जब चहहु बुलावहु
यहि प्रकार दम्पतिपरविना । विमल बुद्धि सो बोधन कीना ।।
छबि लखि दृगन तोर तृनडारै । पुनि पुनि राई लोन उतारै ।
नाना मणिन निछावर करहीं । हृदय लगाय गोद में धरहीं ।।
दो०-हम सौ सुभगादिकन सो, करै सुबचन विनोद ।
कौन कौन गुण बरनिये, अतुलित देहिं प्रमोद ।।
लाड़ लड़ावति बधु छबि लहई । तुम वियोग टरई सो करई ।।
सुनि निमिराजहिं कह मुस्क्याई । चतुर बिधाता योग लगाई
कबहुँ तहाँ दशरथ महराजा । आवइ देखन बधुन समाजा ।।
आगम जानि बधुन सब बाला । भीतर गृहन जाहिं तेहिकाला
आगे होइ लीन्हे इन सासुन । पैठहिं राम मातु की आसन ।।
तिनको वातसल्य स्वाभावा । देखत वनहिं जाहि नहि गावा ।
नित आपन पुत्रिन की नाई । लाड़ लड़ावहिं अवध गोसाई ।।
संजीवनि सम लेखहिंदुलारी । हिय में बसहु श्रीरूप हमारी ।।

इमि सुदासि मुखते सुखकारी । सुनै प्रसंग सकल निमि नारी
रही घरिक लौ प्रेम समाई । गदगद कंठ पुलकि तन जाई ।।
बोली प्रमुदित बचन विनीता । मो सुमती बड़ भागिनि सीता
उर्मिलादि इहै भाग प्रभावा । भव में अलभ सुलभ गृहपावा ।
रहिहैं सदा समोद कुमामी । हम ते उनहिं अधिक तर प्यारी
फीकी करहि हमहिं सो नीकी । करहिकृपा समधिन समधीकी
दो०-जैसो वास हम सीय को, चाहत रही अनूप ।
तैसे सब दुहिताभने, पायो सब अनुरूप ।।
निज कृतकृत्य जान निमिभामा । भई रहे नित पूरण कामा ।
इक दिन जनकसुता कल्यानी । गई सिद्धिवर सदन भवानी ।
अमित सखी दासी सुखदाई । आई सब नृप गृही सोहाई ।।
सिद्धिजु धर्म धीर बड़प्यारी । पहुँची तहँ शुभ समय बिचारी।
निमिकुल वधू अपर श्रीमाना । राजै नव नय रूप निधाना ।।
लक्ष्मीनिधि की रानि प्रवीना । आवत उठि दूरहिते लीना ।।
परम सुभग आसन बैंटारी । करै यथा विधि शुभ सतकारी ।।
दो०-बोली मृदु बहू दिनन में, आगम भयो तुम्हार ।
अहो भानुकुल कुमुदिनी, लागी प्रिय ससुरारि ।।
ऐसो कौन विलास विशाला । लगै ईहाँ ते अधिक सुखशाला ।
कीन्ह ननँद संग विनोद अपारा । सोमनमहँ जानहु विस्तारा
इन आरंभ व्यंग को कीना । गई विहँसि सब कुँवरि प्रवीना ।
पूछी कुशल विदेह किशोरी । हसि तब सिद्ध कहा करजोरी ।
सदा क्षेम विधि रूप तुम्हारे । भई सुअवते नैन निहारे ।।

सिद्धि चरण गहि वैन उचारीं। सुनहु अवधिपति वधुनहमारी
बूझीबात दइ सब हराई। पढ़ी उतहु यह नव निपुनाई ।।
अवहीं सास सदन तै आई। तह की बाते कहव सुहाई ।।
दो०-श्रीनिनिमिकुल स्वामिनि निकट कही धाईजू जोई।
सुनी सुहम नीकै सकल, बहुरन पुछहि सोई ।।
करै भलै वस सारंग पानी। पति निकेत वरते उजानी ।।
जब हम अवधि पुरि कौ जाही। कहिषौ करै चलव संगमाही।
चलते समय न चलव चलावा। रहै बइत नही हमही बुलावा
अपने वपु निज भक्त बताई। परिचर्जा सुलिषाई पठाई ।।
कृपा पात्र हम जेउ न केरी। जहा कृपा रहती तह वेरी ।।
विवस करही भाषहि वेजैसी। तुमहि परंतन चाहिए एसी ।।
छोंटे ते हम संग सुजाना। खेली हंसि परी इकवाना ।।
असन करे पाये मुखवासा। चरचे गंध करे सुविलासा ।।
।। छन्द ।।
भोगे सुखे कतकंत सब हमकौ लै कछु आवती।
कहती कछु बतियाँ मनोसर श्रवन तै सुष पावती ।।
नव वैसतिपुर बिमोहनी कहुँ लाडपुन कै सैकरौ।
बड़ रसिक कामकलांन में निकलनमन तुम रौहरौ ।।
सो०-सुनसींता मुसक्याई, गुरुजनभइ इत उत चितई।
बोली नैन चलाइ, बचन मृदुल मधु ते मधुर ।।
दो०-गोंरे सुवरन कुसुम से, छबिसर कुसुम समान।
आयइत तुम संतोष कौ, लक्ष्मणइत श्रीमान ।।

सकल सुलक्षनवान विख्याता । विविध कलान विचक्षन ज्ञाता
हम सो जो मागहूं बड़ भागा । अपुमुहु देहि सहित अनुरागा ।
रिद्धि कहा जह कौन डराई । सुबन सुमित्रा के सुखदाई ।।
हमैं उनै पर है जिही माता । कर लैहैं जानै नव नाता ।।
सजल जलदसम श्याम शरीरा । नयन विसाल गुनन गंभीरा
हमसौ वाक बंध जे आही । रूची न प्रीनी करत तिनमाही ।
सुभगा तब लज्जा बस जानी । बोली तिन प्रति परमसयानी।
रिद्धि सिद्धि सुभाव तुमहारा । इनही न सकुचावहु इहिवारा ।
दो०-रहव सदा निश्चय किये, गुणागार श्रीराम ।
तेहूं अब आये ईहाँ, कीजै रुचिही सनमान ।।
उपालभ समुचित जो होई । पाइ अकेलै दीजहु सोई ।।
पुछहु तुम कीन्ह कस प्यारा । सव जानहु भव के व्यवहारा
इन सिय के बंधुन को वाला । जैसौ तुम प्यारी सब काला ।।
तैसे जेहू हई निज धामा । यह सुहाग भूषण अभिरामा ।।
हुलसी कहा हँसि सिद्धि प्रवीना । भल विवेक तुम ने करदीना
निज पूछहु येजू मतिवाना । निज मैं होकर नेह प्रमाना ।।
इन भाइन प्यारी हम रहईं । तिमि हमरे भाइन जे अहई ।।
फिरौ अर्थ आसय अनुमानी । निपुन सिया सखि वहुरिबखानी
दो०-आज काल निसि दिवस मै, मिलौ उनै जिहिबेर ।
वे मानही तुम सौ सघहि, ना तो लेहु निवेर ।।
सुनकै रोम सकल तन छाये । भाषिउ भरत काहि नही आये
नील कमल सम मंजुल अंगा । लसै तड़ित लौ वसन विसंगा ।

नयन कमल लावन्य निधाना । पीन हृदय वरभूज आजाना ।।
मोहै मनहि मधुर मुसुक्याई । रामहि सम अनुहार सुहाई ।।
ननद माँडवी के मन मंडन । सोहै भाल विसाल सिषंडन ।।
करशर धनु कटि मैं असिमाथा । देखे ब्याह समय महसाथा ।
अरु अरि दमन रमविन बेऊ । सील नियट लहुरे ननदेऊ ।।
चंपक बरन गौर मृदुगाता । सायुध वीर धर्म मह ज्ञाता ।।

दो०-श्रुति कीरति रतिसुखद,मति अतिविचित्र विसेष ।
विहसत अग्रज अग्रमृदु छकै, चित्र छवि देष ।।

जानत हतिहम सब संग आवही । अवधिनरेश कृपालपठावही
चारो बन्धु भानुकुल टीका । औरौ अधिक लगतेउ नीका ।।
सहचरि कहेउ सुनहु मृगनैनी । प्रींति तुमारि सबहि सुखदैनी।
चहती अपुन समागम जैसे । तरसत बहु दरस कह ऐसे ।।
ईनहि जथा रुचि मुदित रमावी । तोष लहै तिहि मै समभावी
श्याम गौर छवि के आधारा । रहै सुषित अवधेश उदारा ।।
इतै उतै सुख देन सुहाये । राखउ नहि इनहि पठवाये ।।
अब आगे जब कौनहु काला । दुरागवन करिहै महिपाला ।।
तब इन सीतादिकन लिवावन । अहै उभय कुँवरमन भावन ।
बहुत दिनन हुहोइ पहुनाई । तव करियौ अपनी मनभाई ।।

॥ छन्द ॥

इम सरस प्रीति उत्तर वचन विलास वहु भातिन भयौ ।
सियलोक बृति लिये अधोचित भाभियन पुजन दयो ।।

रघुवंसिनी निमवंसिनी सब वैस की हिल मिल हँसी ।
सविनीति संयुत रीति प्रीति बृद्धि मैं अतिही लसी ॥
सो०-ऐसे सुचि परिहास, भेट होत नव बधुन प्रति ।
होत रहैस विलास गान कथन तिनको सुभदा ॥

॥ कवित्त ॥

एक दिवस माताजी करिके शृंगार चारु,
हेतु सो दुलाय निकट निरखति मुख कंज को ।
सीता नेह हँसति मंद दूरिक करति द्वन्द्व सकल,
ताही छण आई ध्यान लालन रस रँज को ॥
माता हेतु पाई तब मनोरथ चित आई श्याम,
राम को बोलावो आवें विरह दुख भंज को ।
जीवन कर लाभ एहि निरखे अभिराम श्याम,
पूरणकाम राम छबि काम मद गंज को ॥
राजा सों एकान्त पाय कही जा सुनैना जी ने,
मेरी अभिलाष एही सीता वर आवहीं ।
पावे विविध सुख पुरवासी सो अपनी मति,
जाकी असगती और मैं हूँ सुख पावही ॥
चिट्टी महाराज श्रीदशरथ को सिघ्र जाय,
बिनै पाय विदा करे राम मन भावही ।
दुख दहाय सुख बढ़ाय बेली मन की फुलाय,
करहीं संतुष्ट मेरे सकल चित चावहीं ॥

रात भई बात प्रातदूत युगल भेजेव राज्व-,
चीठी में लिखायो प्रेम जायो जो बचत है।
दिन बहु वित्यो मैंन राघव मुख देख्यो है,
आसा बहु लागी रहत देखो कब बदन हैं॥
आवे रघुनंदन सत्रू सूदन भरत लखन लाल,
पावे सब लोंग दरस परस जे सजन है।
मेरे तो चाह एहि देख्यो सिघ्र सियानाथ,
हाथ में तुम्हारे राव याहो सो करण है॥
अवधपुरी पावन जब धावन पहुँचे जाय,
नगर सोहावन देखि हर्ष चित्त आयो है।
किला में प्रवेश कीन्हो बैठे जहँ दशरथजू,
रूप को निहारी भाव सहित माथनायो है॥
पत्री प्रेम यंत्री जो लीखी है राजा जनकजू ने दीन्हो,
प्रेम सहित लीन्हो बांचि नेह छायो हैं।
अपर बाते दूत के मुखाते सब सुनन लागे,
जनक नृप समाचार सकल वासुनायो है॥
रामलाल समाचार पाय पिता पास आये हैं,
भरत लखन रिपुसूदन सुनत दौरि आये हैं।
राम अज्ञा पाय रामलाल कर चीठी लीन्हों,
मधुर मुसुकाय बांचि भ्रातन को सुनायो है॥
बाहर संकोच भीतर आनंद की मिति नाहिं,
राजा हेतु पाय श्रीवशिष्ठ को बोलाये हैं॥

आये सन्मान पाये बैठे ऋषि सावधान,
जनक नृप पाती जो लिखि है सो जनाये है ॥
येक वार उत्तम आप शोधि के बताय दीजे,
आनन्द अरु मंगल सब भाँति सुखधान हो ।
सब समाज साज सकल निजनिज रुचिसाज,
साज होइके तयार रामलाल संग प्रस्थान हो ॥
दीन्ही मुनि भाषि माघशुक्ल पछ जबहिं जाव,
पखभर अनूप दिवस काहू ते नहान हो ।
राजा सुनि अज्ञा दई चारो सुतमान लइ जेही,
विधि तयार भये कोन ये बखान हो ॥
दो०-माघ शुक्ल की आदि तिथि, मंगल मोद विधान ।
सुख सागर रघुवंशमणि, कीन्ह जनकपुर पयान ॥
सुनि भुआल अधिक सुखमाने । मंत्रीन आये सुदिये सुहाने ॥
मिथिला हेत राम करन पहुनाई । साजहु साज सकलअबजाई
सचिवसुआयसुनि निजसिरधारी । किन्ह सबविधितुरततैयारी
करत पिता वय राम कृपाला । करहि विचारन कौनहिकाला
सानुज मातु पिता उरलाये । मुदित सूंघी शीर आशीष पाये ।
नाई चरणपंकज महँ माथा । चले शीलनिधि लछुमन लैसाथा
मुनि विप्रन ते आशिष लीनी । चढ़े सिंधुरन अतिदुतिदीनी ॥
भ्रात सखन कह रामहु गवने । चले मुदित मन आनन्द भीने ।
वाहन चढ़ि चढ़ि रुचिअनुसारी । चलत समाज सोहअतिभारी
प्रतिवास रतैदिन प्रतिजाई । निमिहीनिवेदनकरहि दूतआवई

वासहि वसत चले सुख सुजाही । पहुचि गये मिथिलापुरमाही
दो०-जेहि जेहि मग रघुलाल संग चलत चतुर दलयुथा ।
तेहि तेहि मंगवासी मुदित, निरखत छवि बरुथा ।।
बीच बीच विश्राम करी, आये तिरहुत सुख देत ।
युगल अनुचर बुधविनय करि, जायनिम नृप पास ।।
रघुकुलमणि की आगवन कीन सविनय प्रकास ।
सुनत सभासद सहित नृप, हर्षन हृदय समाय ।
पुनि धीरज धरि वेगहि, लक्ष्मीनिधिह बुलाय ।।
कहि शीघ्र तैयार होय, जाहु सखा सब लै साथ ।
आदर सहित सनमान करि, लै आवहु रघुनाथ ।।
पितु अनुसासन पाय कैं, सजि सब साज समाज ।
गये मिलन प्रमुदित वदन, जहाँ आवत रघुराज ।
श्रीनिधि हृदय आनंद अमित, मिलन रघुनन्दन समीप ।
सोउ सुठि सुख हिय रहे अकथ अगाथ अनूप ।।
बंहुरि राम निज बन्धु समेता । लक्ष्मीनिधि भेटे सपुनीता ।।
हरषि नयन भरि पुलकित गाता । हिय लगाय भेटे सरसाता
लक्ष्मीनिधि भये अमित आनंदा । देखी राम मुख पूर्ण चन्दा ।
मिथिला वासिन दरस के हेता । आप रहे सुप्रीति समेता ।।
सब हिय प्रेम रामसब जाना । यथा मिलन तलफत अकुलाना
अमित रूपकरि आपुहि श्यामा । सुन्दर सुखद स्वरुप ललामा
सकल मैथिलन हृदय लगाई । मिले सप्रेम पुरजन सुखदाई ।।
जेहिकेजियजसभाव रहावा । तेहिते मिलतरामलालतसभावा

प्रति मैथिल ढिग इक इक रामा। देवहिं आनंदअतिसुखधामा
लखा न काहू रघुपति देखा। अपने ढिग श्यामहि सब पेखा।।
निजनिज हियसब अनुभव करहीं।आनंद महाभाव हियधरही।
सबते अधिक लाल मोहि माने। सबहि छोड़मम हिय लपटाने

दो०-आनन्द मगन विभोर अति, तेहि छन मैथिल लोग।
सो सुख अकथ अगाध अति, रघुवर मिलन सुयोग।।

जय जय कहत इत्र की वर्षा। करत सुमाग सबहि सुर सरषा
दुहुँ दिशिदल महँ बाजत बाजे। वन्दी विरद बजत बहुराजे

दो०-जनकपुरी सुखसदन महँ, पहुचे रघुकुल चंद।
निरखि नगर नरनारि नभ,सुरसब परमानंद।।
देवन दीन्ही दुन्दुभी, वरषि फूल सुखपाय।
पुर नर नारिन सहित, कहत अति हर्षाय।।
विधिसन याचत देव सब, जनकपुरी को वास।
जहँ त्रिभुवन के सकल सुख कीन्हों आय निवास।
जनकपुरी सुख सदन महँ पहुचे रघुकुल चन्द।
निरखि नगर नर नारि सब, नभसुर परमानन्द।
देवन दीन्हीं दुदुंभि मुद भरी,लखे फूल सुखपाय।
पुर नर नारिन भाग को, बरनत अति हर्षाय।।

पितु आयसु लहि पद सिरनाई। भ्रातन सहित राम रघुराई।
रथ चढ़ि चले कुंवर के साथा। दरसन देत सबहि मुद पाथा।
उत्सव सहित कुँवर लै आयेऊ। मातु महलमहँ पहुँचत भयऊ।

॥ कवित्त ॥

दूरहिं ते दोउ समाज परस्पर मिलाप काल,
चले अति प्रहर्ष चित्त मिलन होन लागी है।
लक्ष्मीनिधि रामलाल भरतलाल लखनलाल,
सखन सहित मिले बिमल नेह पागी है॥
नाना विधि करि जौहार इत उत पुरवासी,
सब चले जनकपुरी महँ रविकुल कुमुदचन्द है।
महल के झरोखन ते नागरी निहारति हैं,
नाना श्रृंगार कीन्हे अतिहिं आनन्दे हैं॥
मातु सुनैना सुनत अति हर्षाई। आरति साजि सखिन सहधाई
मंगल गावहिं प्रिय सब नारी। प्रेम प्रवाह बढ़त हिय भारी।
आरति करिमुदित सबमाता। नयन सजल अतिपुलकितगाता
भ्रात सहित लाल कीन्ह प्रणामा। मातु कही जीयोमँगलरामा
शीश सूंघि दृग डारति पानी। कीन्ह प्यार विविध विधिरानी
दो०-तृप्त न होहि मातु मन, रूप माधुरि दृग चाख।
सुनहु हे कृपायतन, करौ सफल अभिलाष॥
सिद्धि कुँवरि कह रामहि देखी। पगी प्रेमरस हृदय विशेषी।
सहित भ्रात रघुवर पग लागी। नयन नीर धोयउ रस पागी।
लालहि चली लिवाय सुनैना। प्रेम भरी कछु पूछ सकैना॥
वास रुचिर महलन मैं दीना। लाल नैनहिअति शोभितकीना
राजन के राजा श्रीसीरध्वज कुशध्वजादि,
संग सचिव समाज साथ हर्षचित्त आये हैं।

अनुज सखा सहित रामलाल होइके निहाल,
अति सप्रेम चरण बंदी मिलत सुख पाये हैं।
कुशल प्रश्न करत सव बाढ़ी है सनेह,
चाव भाव सहित भेट प्रेम मै बिकाये हैं ॥
बहुरि उठि गये जहाँ बैठे श्रीवशिष्ठ मुनि,
देखि के सरूप प्रेम सहित माथनाये हैं ॥
रुचिर सिहासन सजिकर आनी। बैठारे रघुवर सुखसानी ॥
पूजि सविधि पुनि आरति कीनी। कुशल क्षेम सब पूछप्रवीनी
ललकति रही दरस तब रामा। आज भई मैं पूरण सुखधामा
बोले राम हमऊ सुनु माई। दरस प्यास तब रहे दुखाई ॥
देखत मिथिलहिभयो प्रसन्ना। भेटि व्याधि चितभयो अखिन्ना
दो०-सुखद राम निज मातु की, भेट कुशल कह गाय।
सुनत सुनैना हर्षयुत, रही प्रेम जल छाय ॥
बहुरि मातु बोली मृदुवानी। पावहु व्यंजन लाल सुखमानी ॥
सासु विनय सुनि राम उदारा। पाये भोजनविविध प्रकारा।
सहित कुँवर सब भ्रातन साथा। अचवन कियेमुदित रघुनाथा
सिद्धि कुंअरि करवीड़ा पाये। दोनोंहु भाई मोद उरछाये ॥
बैठ सिहासन सोहत मोदभरे। मैथिल प्रेम पगे सब सिगरे ॥
तेहि अवसर पहुँचे निमिराऊ।देख दरस लहि अतिचितचाऊ॥
भ्रातन सहित लालमुख पेखी। पाये आनन्द हृदय विशेषी ॥
पुनि पुनि लेवै हृदय लगाई। करि वात्सल्य अधिक सरसाई।
अव लगि तात जोदिन गयेऊ। सो सब तात अनल प्रद भयेऊ

होहुन कवहु नयन के बाहर। होयहु नहि रघुवंश उजागर ।।
राम सासुर मुख सुनि मृदु वैना। बोले बचन मनोहर ऐना ।।
करि प्रिय प्यार भल तोषी। भये मुदित मनआनन्द पेखी ।।
आपु सरिस निज पुज्यहि पाई। मममन कवहुअलग नहिजाई
राउर दरश नयन नित चहै। छन छन बढ़ति अधिक उभाहै।
दो०-पगे प्रेम गदगद गिरा, बोले निमि भूपाल।

आज सुखी सब बिधि भयो, तुमहि निरखि रघुलाल।

सीतावर राम स्याम सुन्दर सुखद अंग,
चले नृप महल में किसोरी जहँ राजहीं।
दास सब पाछे अरु प्रिय अनुज आस पास,
मन में हुलास बहुत सुखमा अंग भ्राजहीं ।।
कानन में कनक फूल नाक में बुलाक,
मधुरमय मयनमद मान गलित देखत कवि लाजहीं।
कौस्तुभ उपवीत पीत सोहत मधुर अंग,
मोतिन मणिहार उरसि नूपुर पग बाजहीं ।।
किंकिन करि राजे लर तीन मधुर बाजे,
उपराजे सब नाना सुख भूषण जे अंग हैं।
पनहीं चित हनहीं जे जराव मनि मोतिन,
करि चलत छवि देत मन मोहन अंग हैं ।।
दोउ दिशि झरोखन ते चन्द्रमुखी झाँकति हैं,
प्राण नेवछावर करि भीनी रस रंग हैं।

नयन फेरि देखत मुसुक्यान सहित रामरसिक,
दुहुँ बोर नेह कीं उमंग कीत रंग है ॥
दो०-एहि विधि रघुकुल कुमुदशशि, आय महल के द्वार ।
महरानी महली सवे, आरती लीन्ह उतार ॥
बहुरि अर्ध दै फेरि पट, चलीं लवाइ निकेत ।
करत दुलार अनेक विधि, बनत न उपमादेत ॥
पग धोआइ दासी मुदित, बैठे सब सुकुमार ।
परूसन लागी सरहज सकल,षटरष चारि प्रकार ॥
एक थारमें अमित विधि, व्यंजन बहु सुस्वाद ।
जेवत राघव रसिक मणि, गारि होत मृदु नाद ॥
लावति ब्यंजन मधुरअली,करि-२ मृदु मुसुक्यान ।
बजत चरण करिकर मधुर,भूषण रसमय सान ॥
परुसत शोभित कर कमल, कंचन मणिमय थार ।
लेहु लाल अच्छी बनी, व्यंजन मसाले दार ॥
तब बोले सीतारमन, छबिमय मृदु मुसुक्याय ।
मन दीन्हो तिन्ह सब दई,देहु जो तुम कहँभाय ॥
लेत सियावर रसभरे, देति जो नागरि नारि ।
मुखमें लेत वरणन करत, प्रीतिरीति अनुसारि ॥
तब सिद्धा ल्याई दही, मिश्री ता महँ डारि ।
कछु परुसती कछु हास्यमिस,देत कपोल निसारि ॥
एहि विधि हास्य विलासयुत, पावत राजकुमार ।
निरखत मुख की माधुरी, सबहि हर्ष अपार ॥

मधुर स्वर गारी गान करति नागरी,
सुजान बाजत मृदंग वीण उठत तरंगतान ।
प्रीतम नवकुमार सुकुमार रामलाल सन,
सरहज परोसति ते करति अर्थ को बखान ।
ताहि मिसु नाना रसरंग उमगाय चित,
हित सों बताव भावकीयो है अजान जान ।
तेहि सुख समाज को बखाने कौन प्रिया शरण,
परमानन्द रासि मानो तेहि महँ समान प्राण ।
दो०-सीता नेह अरु प्रेम युत, निरखति लालन बोर ।
जननी घर खिरकिन लगी कोटिन रति चितचोंर ।
किंकरी सँवारि साज सकल अँचवावन हित,
बहुतन कर झारी सो सुधारी मणिहीर सो ।
बहुतन कर खरचा बहुत शुक्ल वस्त्र लिए,
ठाढ़ी कोई पादुका फेरी राखयो मतिधीर सो ।
जनक नृप महल सकल भुवन सुख,
उमड़ि आयो दासी रूपखड़ी सखी आनंद शरीर सो ।
अचवन कराय पान अतर मगाय दीन्हो,
लींन्हो चले नृत्य भूमि महल कुटीर सो ॥

॥ छप्पय ॥

अनुज सखन संग नृत्य भूमि रघुराज विराजत ।
कोटि पुरंदर सम विलास वरणत कवि लाजत ॥

नाना रसमय गुणिन गान करि प्रभुहिं रिझावत ।
रघुपति सकल समाज संग नाना सुख पावत ।।
वरखत आनंद मेंह देह सुधि सबहिं भुलाने ।
परानंद सुख राशि कहत कविमति सकुचाने ।।
उहाँ सहचरि महल की सिया नागरिहिं सँवारही ।
करि अनमोल सिंगार सुठि तनमनधन सब बारहीं ।।
सीतारमन को तेज भानु कोटि के दुतिहि लजावत ।
करन लगी गुणगान तान वहु मुर्छनि संयुत ।
नृत्यन लगी प्रवीण नायका शोभा अदभुत ।
लक्ष्मीनिधि सखन युत रामलाल संग राजहीं ।
भेजेशुचित जब सकल महल वासी सुखराशी ।
कह्यो सुनैना शयन वैन उठि चलि एक दासी ।
नृत्य महल तिन जाय लक्ष्मीनिधि दास प्रति खबर जनाई ।
श्रीरघुनन्दन प्राणनाथ को महल में होत बोलाई ।।
चतुराई ते लावहु रसिक सिरोमणि लाल को ।
अतिनागर सुखसागर नखशिष सुखधाम को ।।
चले दासी जहँ सुख विलास में राजत लाल है ।
उठत तान तरंग की आनन्द सरस सुमाल है ।।
कहा जाय अति प्रीति रीतो सो लक्ष्मीनिध को ।
होत वोलाहठ सीतारमन महल दरशन हीत को ।।
गुनिन निछावर पांय के गये सकल निज सदन ।
राघव भ्रातन सहित आये राजमहल प्रमुदित वदन ।

अनुज सहित सीतारमण सासुन सकल जोहारि ।
प्रमुदित मन आशीष लहि, ठाढ़े मनमोद भारि ।
पिया आये सब हुलसही आनंद उरन समात ।
फूली कंज विलोचन वाल निहाल पिय और निहारत ।
चतुर सखी आई हरषि एक राजकुमार के संग ।
ठढ़ भई बतलाते मृदु पानि पकरि रस अंग ।।
मंद विहँसि निजनिज भवन गई सुनैना आद ।
सानुज निजनिज महल गै सखि संग अह्लवाद ।।
राम रसिक रसिकिनों भेटि भे परम सुखारी ।
अति सन्मायो प्राणनाथ कहँ जनक दुलारी ।।
नवनागर नवनागरी भई परम आनंद मय ।
मन बुद्धि चित अहमित विसरि गई भये परसुखहिलय

।। कवित्त ।।

शोभा सुन्दरता महल की बखाने कौन,
जनकपुर महल में विशेष अनुमान हैं ।
हाटक मणि नाना रंग रचित हैं निकुज,
सकलता में प्रयक नवल सुखमा रसखान हैं।
मणिन को दीप चहुँओर ते विराजत है,
पान अतर पुष्पमाल सर्व शोभामान हैं ।
नेह प्रेम वहिन सब संग में विराजे प्यारी,
राम रसिक राजे संग सकल गुणमान हैं।

हरित नील मणिन की कलीत करधनी,

पेन्हेत कंचन गौरांगी सीता सुकुमारी री।

राघव मनभावन शोहावन सब भूषण छवि,

अंग अंग माधुरी पैकोटिन रति बारी री।

कोटि चंद दामिनि दुति लज्जित मणिहार,

सोहे कनक सूत्र सारी दरदामिनी किनारी री।

अधर सुकुमारी पखेसर दुतिकारी,

मुसुक्यान मनहारी रघुनंदन बलिहारी री।

दो०-कहहु लाल माधुर्य मय, वचन सुखद रसबोर।
अंतर जनि कछु राखहु, प्राणनाथ चित चोर॥
कबहूँ नेहते सुरत करि, तुम देख्यो मम अंग।
कबहू हमारे मिलन की, आयत रहे उतरंग॥
हमें तोक्षण क्षम सुरतिते,बिसरयो नहि तुमप्राण।
कमल नयन हे चन्दमुख, जिमिचकोरि को ध्यान।
असकहि भरि आई सिया, सजल नयन भइआइ।
प्राण पियारे रसिकमणि, लियो हिय में लाइ॥

॥ श्रीकौशल्यानंदन कोकिल वयन को बचन॥

जेहि दिनते प्यारी तुम पिता भवन आय रही,

ता दिन ते सरयू पुलिन कुँजनहिं भावेरी।

क्षण-क्षण विरह तेरी मेरी हिय को बिदारे,

रहत भावतन कवनो वस्तु निरखि बिरह छावेरे।

चन्द्रमा अंगार लागे निशिमें न पलक लागे,
सुधि आये प्यारी तब अधिक व्यथा आवेरी ।
कहते न बनत प्यारी जाने सकल मानस मोर,
चन्द विनु जैसे हीं चकोर दुख पावेरी ।
जा दिन ते पाती जनकरायजू की अवध आई,
पिता मोहि बांचन को दई अनुराग में ।
बाचत सुखपायो सब भ्रातन को सुनायो हिये,
प्रेम उमड़ि आयो तब दरस परस लाग में ।
ता दिन ते कछुक अहलादमन आयो प्यारी,
आज तब दरसनविधि लीन्हो मम भाग में ।
विहरहु विहरावहु मन व्यथा कोमिटावहु तुम,
अतिसुख पावहुगी मेरे अंग राग में ।
महल छविकारी तामें सेज सुख अधिक भारी,
चहुँदिशि सुकुमारी सब सेवा विधि लीन्ही है ।
पान दान को ऊकर कोउ हाथ अतरदान,
पीकदान लीन्हे कोऊ तन मन वारी दीनी है ।
मंद हँसि खवावे पान युगल सखी नेह भरी,
शोभा सुन्दरता सब अंगते नवीनी है ।
नुपूर बजावे कोऊ मधुर मधुर गावे कोऊ,
रस उपजावे स्वर ताल में प्रवीनी हैं ।
जनक सुनयना सम न भाग कोउ देव अरुदेव वधु सुकुचाती
जा घर युगल बिहार मनोहर रस सागर अधिकाती ॥

यहि विधि दूलहा दुलहिनी विहरत राजनिकेत।
अमित कामरति लाजहिं बनत न उपमा देत ॥
एक दिवस पिय राम सहित प्रिया निज महलमें।
पौढ़ रत्न प्रजंक लालन सुखसागर सुखद ॥
प्यारी लगि पिय अंक पोढ़ि अति अहलाद मन।
मुख छबि अतिसुख देत,युगल मगन मुखचंदलष।
कबहुकहित बतियां करत बढ़त मंजु रसपुन्ज।
किय सपथ तोहि कहो हिय निजकी सुनु प्यारी।
अस न अपनपो मोहिं जैसे प्रिय तुम लगत हो ॥
मिलौ कोटि ब्रह्मांडहु अस न मोहिं आनन्द।
होत जु तब मुख कमल को पान करत मकरंद ॥
श्रवण नयन मन तुम बसे और न कछु सुहात।
तेरे हित चितवनि उपर बारे सब सुख जात ॥
सबसु खबारी जात जबहि बोलहु मुसुकाई।
निरखत तब मुखकंज पलक परणे नहि भाई ॥
मेरे हिय आनन्द को तुमहि प्रिये निदान।
हौ जिय की जोवन जरी प्रानहु के प्रान ॥
प्रेम भरे पिय बचन सुनि प्रिया मधुर मुसुक्याय।
वारि विभूषण वचन पर लिये लाल उरलाय ॥
एहि विधि प्रेम ढ़िढाई प्रिया कहँ लीन्ह रिझाई।
प्यारी सब सुखदीन्ह लाल कहँ उर लपटाई ॥

।। श्रीसुनैना अम्बा के महलमें दोनों भाई का निवास ।।

दो०-पतनी जुत नृप जनक की कहिहैं प्रभु में प्रीत ।
राज बधू दुहिता निपुन, बरतै जिम रस रीत ।।

राम वास अपने गृह जानी । मुदित रहैं मैंथिल पति रानी ।।
चीनहिं विष्णु परन्तु छुपावहि । नित जामातभावसौ ध्यावहि
सुभग सरीर कमलदल लोचन । सुभग अनंत मदनमद मोचन
सुभ्रसु उरध पुंड्र विसाला । श्रवन सुकुण्डल डुलहि विसाला
ससि मुख विहग राजसम नासा । सुभरद अधर मनोहर हासा
लसै कंबु कंधर त्रय रेषै । दुति भृगुपद श्रीवत्स अलेषै ।।
पीन अंश भुज हृदय विराजै । नाभी रोम पांति सुभ साजै ।।
अरूकटि देश सुजंघ सुढारा । पिडुरी ललित गुलफ छविसारा

दो०-चरन अरुन राजीव सम, जनमन अलि विश्राम ।
नाना पट नाना भरन, रतनन मय अभिराम ।।

सुन्दर धनुष बाण कर लीनै । अनुज सहित बैंठे मुदभीनै ।।
रुप उपासक उत सब बाढ़े । सब सुबलादि सखाढ़िग ठांढ़े ।।
उत्तम दास छत्र सित धारै । ससिकर निकर सुचामर ढारे ।।
आयुध असि चर्मादिक वारे । बहु आखेट खिलावन वारे ।।
गंध प्रसून पान कर धारी । बीरी सेष ग्रहै जु बिचारी ।।
घड़ी जन्त्र धारै सविवेका । नृत्यगान में कुशल अनेका ।।
नाना मृगज हंस सुक मैंना । लिये पिकादि सुनावहि वैना ।।
सकल बिनोदन में प्रभु ज्ञाता । हंसत हंसावत कहि कछु बाता
उचित जथा आइस अनुसरहीं । रंग महिल कौ सोभित करहीं

द्रग अर्ध पुलिन करहि इम ध्याना। रहिमन ब्रह्मानन्द समाना
अनुचिंतहि चित मैं मति धामा। हय अमल आतमा रामा ॥
निरगुन विरजअलख अविनासी। स्वयंप्रकाश स्वछंदविलासी
निराकार लिप्त अनूप सरुपा। निर्विकार बहुगुन बहुरुपा ॥
सम सरवत्र विभूति विलासा। सदा येक रस आनन्द रासा ॥
आदिन मध्य अंत नहि पाईय। निगमन अजोर गाइय ॥
दो०-स्वईच्छत कोटि अनन्त के, रचन ब्रह्मांड समर्थ।
तत्व संघटन चित करैं, सत्ता मात्र पुमर्थ ॥
सो०-सीरकेत कुसकेतु, पुत्रि सपुत्र कलत्र कन।
अपनी प्रियन समेत,सेवहि तन मन बचनकर।
दो०-भोजन को बुलवावही, निपुन सुनयना रानि।
मुदित जिमावै अनुज जुत,अन्न मधुर निजपानि।
रम्य सनिग्ध छः रस विधिचारा। व्यंजन विसद अनेक प्रकारा
नाना स्नाद कलित जिनमाहीं। रुचि अनुसार पवावत जाही
राम परम सौंदर्ज निधाना। करहि अपुन रुपामृत पाना ॥
बैठी तहँ बहु महिप कुमारी। रुपवान बड़ नव वय वारी ॥
मोहित ह्वै छबि नैनन आनी। गान करै कलकोकिलबानी ॥
रानी सरल बहुत हटकावै। नागर चहइ सुगारिनि गावै ॥
तिनमैं मिली वोर की हेरन। बरजै भूम सुता बहु बेरन ॥
हरयै तिन प्रति सपथ बखानौ। चंचल बड़ी परंतन मानौ ॥
दो०-प्रनय कोप मूठिन हनैं हमै लगावहु नाउ।
हम बिन जो मन मैं चहौ, करवौ करहु चवाउ ॥

सकुच दसा वह प्रभु शृंगारी । लै हिय कौ है दृगन निहारी ।।
पुरुष सूक्ति आदिक श्रुतिकेरी । रिचा रिषिनमुष सुनतघनेरी
राम ब्रह्म रघुवंश बढ़ावन । गनै तैसी कबहु सुहावन ।।
गारी नृप दुहि तन की गई । जैसी अधिक लगी मनभाई ।।
पीन आतम सुख सहित सदाही । भये मोहि गुन सुषित महाही
जग व्यवहार कुशल लखि रानी । प्रभु सुभाव तैं बहुतसिहानी
पावन कमला सलिल पिवाये । पौछे अंचल वदन सुहाये ।।
भरी लवंग ये लादि सुगंधन । बीरी विरच दई विववंधन ।।
दो०-अनुकम्पा नित नव करै, वातसल्य तिन जान ।
कबहू धरसिर अंक मैं, सोइ रहै भगवान ।।
जग न परहि यहभावबिचारी । निरखै छबिथिरतन सुकुमारी
लगै तेज निध स्यामल गोरे । चित्त निकट जुवतिन के चोरे ।
कहैं हृदय मैं ये रघुनाथा । नौ नै लागत होइ सिय साथा ।।
व्यजन सजुक्ति भूप तिय लीना । लगी करन मृदुपवन प्रवीना
दिब्य दृष्टि दरसै हरि होई । अहो तत्व तैं चिंतहि सोई ।।
गौर वरन लछमन मृदुगाता । साक्षात ते शेष विष्याता ।।
ये पुन राम नील मनि स्यामा । तेसे सुष सायी अभिरामा ।।
मम परजंक अक मह आई । नीके लागत सयन अरुसांई ।।
दो०-जे आश्रय सब विश्व के, विश्वाधार विराज ।
मुहि आश्रय पदवी दयै, धन्य भाग मम आज ।।
इम अनुदिन लडल्यावत माही । सुख मैं जात समझ नहिंजाही
बैठारे अंकहिं महिपाला । देखै एक दिन सुछवि बिसाला ।।

दक्षिन भाग उरमिला सीता । बैठी सुन्दर शील पुनीता ।।
निकट सुचक्षु धर्म मैं चारिनि । लसै अर्ध आसन अधिकारिनि
अपने गौरव के सुप्रमाना । तिन सौ कोमल बचन बखाना ।।
प्रियजू मैं तप तीरथ कीने । व्रत जप जजन दान बहु दीने ।।
नियम संयमादिक विधि ठाई । दया धर्म नय विनय मिताई ।
हरि गुरु भक्तीजोगविधिजागा । सबविषयन मह रहेउविरागा
इम अपने भागहि तिहिकाला । भये प्रसंसत बुध महिपाला ।।
उत्तम आतम बोध प्रवीने । आशिष पुत्र भाव बहु दीने ।।
जोग सुभोगन परिपोषहिं । मैंथिल इन्द्र हृदय अति तोषहिं ।।
जो सुख ब्रह्मानन्द पिछाने । रुपानन्द मध्य सो जाने ।।
प्रिये रहे रघुवंश विभूषन । रमैं रमावहि जुवति अदूषन ।।
निमकुख जा निमकुल नवनारी । अतिसय हर्ष समेत निहारी।
कवहूं सिद्धि रिद्धि सह राजै । बचन बिनोद करत छबि छाजै
रुप माधुरी अमल पिवावही । प्रीति भावते तिनग्रह जाबही ।
दो०-तहँ असनादि अनेकू विधि, पावै बहु सनमान ।
विविध व्यंग भाषन सुनै, कहै परम रसषान ।।
सानुज कबहुँ कबहुँ अकेले । कबहु इकंत कबहुँ बड़े मेले ।।
विविध विलास क्रियनमुद दैही । हरिन द्रगिन के मन हरलैही
कुशल उरमिला की जू सहेली । रुप प्रभा निधि वसेन बेली ।।
करकै सिय सिय पति की काना । जैवहि अकेले लहइ सुजाना
मुदतैनिज स्वामिनिहि प्रसादन । करहिभलैलछ्मनप्रतिपादन
भोगी राज रुप साक्षाता । रंग निलयरस के बड़ ज्ञाता ।।

बंछहि जे जे हित नव जोषा। करहिं तथा विधि तिन संतोषा
बिहरै रुचि अनुसार अलेषै। अग्रज अग्रस का मन देखै ।।
दो०-सिय अनुजाकुल सीलनिधि, मरिजादा की धाम।
तिहि समाज बैठहि नही, मिलै जहाँ सियराम ।।
रिद्धिसिद्धि लौ करत विरामा। लहै तोष बड राम अकामा।
रचि विविध उत्तन सरसाती। जैबौ करी प्रिया प्रति पाती।
तिनके आसय सुमिर गुसाहीं। उपालंभ कौ मन सकुचाही ।।
रिद्धिसील लक्ष्मीनिधि नारी। व्रिहसत करत कटाक्ष उचारी
भो श्रीरमन सर्व सुख धामा। राम तुम्हार नाम अभिरामा ।।
जिन बड़भागिन के श्रुतपरही। तिनके मन आकर्षन करही।
सकलरसन को निलयबिचारा। सुमरत रसिक उपासिनप्यारा
महामाधुरज आसय माही। आरसिक जिनहि लगै प्रियनाही
दो०-क्रीडा मैं बर्तत प्रभो, विदित बुधन रमु धातु।
ते सुबरन तब नाम मैं, कहत सुनत रस दातु ।।
आगे जिनजिन जपेउ सुभाइन। ते तुम मै रमि भइस पराइन
जे अब जपहि जहा मनलाई। तिनहि वही आराम दिखाई ।।
रमा वैभवविषयनमह त्यागा। अनुदिन रमत तुमहि बड़भागा
जपहै जे पुनभोर सबासा। रमहैं तुम मह दृढ़ विस्वासा ।।
नाम रावरे मह सुखकारी। परम रमावन सक्ति निहारी ।।
मन रमनीय नाम तब जैसे। तनु रमनीय विराजहि तैसे ।।
कोटि गंधरव गर्व विमोचन। लजै तेज लखि कोटि विरोचन।
कोटि काम ते मोहन रूपा। कोटि चन्द्र लावन्य अनूपा ।।

छ०–धन प्रान सर्वस सवन के नवरस कंदयक मूर्ति हौ।
वर प्रभु सिंगार उपासियन शृंगार रस की पूर्ती हौ।
निमनाथ निलय विवाह मै बहु जोषिता मोहित करी।
ते आज लौ तब पुनः दरसन के सुअभिलाषन भरी ।।
मोहन वपुष तुमार निहारै। को जेनहि कुलकान विसारै ।।
छवि माधुर्ज अलौकिक जानी। थिरद्रग पुरुष विलोकहिज्ञानी
सहसा प्रसूतिय दुहितन टेरी। कहैं लेहु सुन्दर मनि हेरी ।।
मृगया मैं बपु परषत हँता। मोहै सब मृग जल जंता ।।
दरसन ते नहि चित्त अघाती। भो गोस परस कौं सुख चाही।
दो०-बृद्धि विरक्त अकाम मुनि, विपिन बसै तजधाम।
देख परम अभिराम छबि, रमन चहैं ह्वै बाम ।।
हम कामिनि नातौ पुन ऐसे। हँसे हँसावहि चाहइ जैसे ।।
रुप सम दमन मीन हमारा। विचरत चहियनत्याग किहुवारा
मीन केतु तै तब छबि नौनी। मोहित भइ कौन अनहौनी ।।
अनहोनी तुमहू पर करहू। जो नेहिन कौ नेह विसरहूं ।।
बय मैं प्रौढ़न ननद हमारी। बालपन लौ हम संग बिहारी ।।
प्रथम गमन मैं बस कर लीनै। नहि जानिय असका सुखदीनै।
रही उहाँ तब छबि अनुरागी। वेहू शुवस भई अस लागी ।।
सौ यह परसपर प्रेम अदूषन। दंपतिन को परम विभूषन ।।
दो०-हमहि परेषौ होत यह, रूप मोहनी डार।
तरसाई दरसनन कौं, चिर लौ कह सुप्रकार ।।
पातिनि मैं जसमति हम माही। लिखत रहो बहु विनतमहाही

देखत मृदुल निठरता लीनी । कतहु न सो अंगीकृत कीनी ।।
चतुराई के उत्तर नीके । रहे लिखावत हौ सुचि हीके ।।
जे अपनी जिन कौ बल राखै । करते हिय पुरौ जिन भाखै ।।
तिन वे जो तुम मैं हम प्रीता । कही न होवहि होत पुतीता ।।
तुम में मिल जो तुम कहि दीने । दये सुलिख स्वारथ महभीने
हम निह काम परायन रहई । बिमल चित्त दरसन तब चहई
लयौन बोलन आपहु आये । सुनैन निज प्रिय होत पराये ।।

दो०-निमकुल की जाई हती, बदल भई रबि गोत ।
परषन हारो कह करै, कसर दाम मह होत ।।

अवधि रहत मह सो सुखसारा । चलत न हतेउ उपाय हमारा
अमित जन्म करनी जह जागी । आये बहुत भले बड़भागी ।।
तिरहूतपति तिरहूतपति रानी । बड उपकार कियो हमजानी
तिनके लिखे भये मनभाये । अवधि अधीश्वर ने पठवाये ।।
अब करवौ में हमरी निपुनाई । रहिहो तिम राखहि रघुराई।
बिमल भावना सौ सन मानहि । द्रग द्वारन हो भीतर आनहि
देव रचित मन मन्दिर माही । पौढ़ावहि द्वद पंकज पाही ।।
अंतह करन करन सौचाहे । संवाहई .पद श्री संवाहे ।।
छ०-पति जान बुधि प्रधान तत्व विधान पूजन अनुसरे ।
महि तत्व सौ करगंध लेपन सुमन भुज भूषित करे ।
जल तत्व षटरस चारविधि नैवेद्य विरचि पबावहीं ।
कर आरती सिषितत्व सौंदर्ज लखि सुख पावहीं ।।

सो०-मंद मंद भगवान, ढोरहि मारुत ब्यजन वर ।
अस्तूति करहि सुसान, नभ सौ जयजय शब्दकर ।
दो०-नित्य आत्मा राम विभु, रास रसिक श्रीरंग ।
अनि सचित्त की बृति सौ रमहै हम तुम संग ।।
जा मैं हमहि लाज नहि त्रासा । नहि कोउकर सकि उपहास ।
इतने हंमह रुप रसाला । अनत गये चाहउ किहूकाला ।।
तौ सुप्रेम बंधन सौ बाधै । सरस समाधि कुठरियन धांधै ।।
फेरहि लोचन पलक कपारा । जैहौ फेर कहौ किहि वारा ।।
व्यंग सुप्रेम सुधारस सानी । सुनी विचित्र सिद्धि की बानी ।
व्यवहारिक बातन मह ज्ञाता । बोले राम रसिक मुसक्याता ।
सिद्धि सरस संभाषन माही । दुतिय अपुन ते कोविद नाही ।
जाकौ संग सुकृत तै होई । बोले बसकर पाबहि सोई ।।
दो०-देती विविध उलाहनौं, कहि कहि भाव अगाध ।
कत ब्यापहु मम संग सौ, औरन मह अपराध ।।
मो मैं होइ भावना जैसे । बनै कहत कहि लीजहि तैसे ।।
अपुन अव्यंग लिखी कवपाती । गहिरे आसय सुनत सुहाती ।
सदा प्रियन के मैं आधीना । राखहि ज्यौतिम रहहु प्रवीना ।
अहो प्रधान बुद्धि सो पावन । कहौ सुभग पूजन कर वावन ।।
निजते निज अनुरागिनि केरी । राखहु वान बृति जह मेरी ।।
सत्य भावना मह भो वाला । मो तैं भिनन कोनहु काला ।।
मैं निज चित अनुवर्तन कहँऊ । सकल काज मै तुम कह चहऊँ
मेरी कृपा विभूति तुम्हारी । जग में सकल प्रानियन प्यारी ।

दो०-विमल तुम्हारे गुनन कौ, अनुभोगी मइ आहुँ ।
इत आवहु तुम विनन ही, उततुम बिन नहि जाहु ।
गये लिखावन जानकिहि, आये ते निरधार ।
पति के चित्त मोहित किये, वर देवर जू हमार ।।

सम दरसी तुम पूरनकामा । विदित सहोदर सब रस धामा ।।
मिलहिन अनमिल साथजु कीने । जो जस तैसिन चाहिय दीने
नृपति कुमारन सो पहु सोई । सम संजोग कहै सब कोई ।।
रविकुल कंन्यन की हम नाथा । जानै गुप्त प्रगट सब गाथा ।।
सकुचहु तुम सब लखहि सयाने । नहि कीरतिजो सहजबखाने
इम परिहास बचन विधि नाना । कहे सुनै श्रीराम सुजाना ।।
अतुलित मोद परसपर लयऊ । तनु कौ भान प्रेम ते गायऊ ।।
जुत येलादि स्वर्न सम पीरी । सिद्धि सुकर विरची वर वीरी ।
भृकुटि मोरि चल द्रगन चलाई । दई सुघूंघट में मुसक्याई ।।
सुन्दर सरस नेह मह सानी । कही बहुर कोमल सम बानी ।।

सों०-ऐसे वाक विलास, रसिक राम नितह करहि ।
करै सुप्रेम बिलास, जैसौ जब समयो लखत ।।

निरत राम रस चरित्र भवानीं । पूछी हसि रमनहि मृदुबानी
भागवान दशरथ नृप नन्दन । गाये परम पुरुष बुध बृन्दन ।।
जनक भवन वसिरूप विसाला । अनुवरतेकिहि भांति कृपाला
सिय संबंध जोग मह ज्ञानी । मन प्रसन्नता किहि विधि मानी

दो०-सवके सब नाते लागै, राघव मै सब काल ।
सब मै सब नातेन की, मानन करै कृपाल ।।

क्षीर सिन्धु में जिम श्रीसाथा। बास करहिं संतत श्रीनाथा ।।
जथा हिमालय में कल्यानी। मै तुम जुत निवसहु मृदुसानी ।।
तथा राम लीनै प्रिय सीता। बसे ससुर आलयअति प्रीता ।।
तन सम्बध जिते जग आही। मुख्य सुतिया पुरुष तिनमाही ।।
तिनके उभय पक्ष मह नाता। होत परसपर अगनित भाता ।।
ताते प्रिय सब कह ससुरारा। प्रगट सनातन जह व्यवहारा ।।
द्विधा रामलीला सुभकारी। इक वास्तविय द्वितीय व्यवहारी
समय समय बरते प्रभु दोई। जानै जिनहि अनुग्रह होई ।।
दो०-मिथिलावासी दिवस कौ, छन जानै छवि देख।
बिन देखे छन एक को, वितवै जुग सम लेख ।।
तेज अमित रबि सौतन धारे। कालादिक भ्रूभंग निहारे ।।
बसहि न बैकुँठहि भगवाना। नहि जोगिनि के हृदय सुजाना
जह जस अमल भक्तजन गावै। वास करत तह बड़सुख पावै।
गुन अनुरक्त जान मिथिला को। बसे कृपाकर पति सीता के।
बाल वधू तिरहूत पुरवासिनि। विपुलग्रहस्त सुतां मृदुहासिनि
जौवन रुपवती बड भागी। राम चरित्रंन में अनुरागी ।।
दरसन कोनृपमन्दिरआवहि। वाक बिलास सुरसिक रमावहि
सिय प्रसन्नता हित सुभशीला। करै विविधव्यवहारिक लीला
दो०-नव धन सुन्दर अनुदिवस, सुन्दर सब सुख लेही।
आवत ढिगपुर सुन्दरिनि, सुन्दर आदर देही ।।
बैठारहिं ललित कर पासा। बोलहि बचन करत मृदुहास ।।
चर थावर जग चीनन वारे। सबके हृदय करन उजयारे ।।

कोपु न पुत्रवती छवि वाना । भये न जिनके कौन निदाना ।।
कोकिहिविधिनिजपतिहिपियारी । कोसुकोककोविदनिरधारी
को प्रोषित पतिका सीमंतिनि । को पतिनिकरवतीगुन वतिनि
को वल्लभ बस कर प्रवीना । कौन सुरत रसमह को लीना ।
अपनी बृति कहत कुल बाला । लाज करै सबरै सव काला ।।
केचित धृष्ट होइ पुन ऐसी । कहैं असंसय पुछहूं जैसी ।।
तिहि समाज सब विधि की सोहैं । रुचिर बिलासनमेंमनमोहैं।
औरन को औरहु वाचालै । कहन लगी सरसे दृग धाले ।।
नृप केमया भाजन न व्याही । नेह परम निमि नंदनि माही ।।
जे तब ब्याह समय में भूपा । दइ स्वयंबर बिरचि अनूपा ।।
चतुर बरन की बय महनीकी । भई बधू तब अवधिपुरी की ।
दुहुँ कुल नाम बताबत बारा । कहैं सुकौन सुभाव तुम्हारा ।।
जनवाई प्रगटहु रस ज्ञातन । थकौ कहा सुबिना इन बातन ।
इक नव बधू सुनैना चलाई । कहन लगी कर अग्र ढिढाई ।।
भये न किनके सुत जुवषानौ । वय किशोर की हम सब जानौ
रहैं सुषित सिसुता सुखमाहीं । अबै हमैं सुत सोहत नाही ।।
हेतु न होवे कौ नव :नागर । पूछहु तुम कर व्यंग उजागर ।।

दो०,अमित कोट ब्रह्मांड में, रचना अनुदिन होई ।
इहि पद नख उच्चिचष्ट की, महिमा लेखहु सोई।

हौ लो केन्द्र सुवन श्रीमाना । बड़े भये इहि जोग सुजाना ।।
भुवन सुतासम त्रिभुवन माही । गुन अधिका हम देखहिताही।

सुर नर बंसनमेंछबि वंतिनि । नहि समकौ समझहिसीमंतिनि
विद्या ते बरने गुन चहई । उपमा कौ कितहु नहि लहई ॥
पुरी अजुध्या नाथ तुमारी । कहत रहे सुभजग नर नारी ॥
जिहि सौ शुभ जौ लो नहि आई तौलौ कहिवे मात्र कहाई ॥
अब सीता पद कमल समाना । परे उहां कल्यान निधाना ॥
तिन चिन्हन चिन्हितबिधिकीन्ही । निश्चयहित मुद्राकरदीन्ही
दो०-पूरन भई समृद्धि सौ, सहित उत्सवानन्द ।
करे तिरस्कृत स्वर्गके, जथा अर्थ सुखबृन्द ।
निसिदिन सबहि मोदमह बीते । भई अधिक बैकुँठ पुरीते ॥
जगमें गृह स्वामिनि कौ होई । जहाँ रहैं तहँ शोभित होई ॥
मिली वधू रबि बंसिन जैसी । कौने मिलहि सुलक्षन ऐसी ॥
सत्य कहैं लिय नेउ प्रवीना । बंस तुमार अलंकृत कीना ॥
जह निमिकुल अंभोनिधि केरी । चन्द्रकला जग करन उजेरी।
गगन सद्रस आकार तुमारा । होय प्रकास मान संसारा ॥
प्रथम रची जब भूमि विधाता । रहि दरिद्र ग्रसित विख्याता ।
सीतहू कृपा सुधा बरषाई । करके धन सम्पन्न जिवाई ॥
दो०-सुर पुर नरपुर नागपुर, राखै इहि की आस ।
पूर रहौ सब विश्व में, अतुलित रुचिर विलास ॥
भये अपुन सब भांति सभागे । सीताराम कहावन लागे ॥
बैठन लगे हमार सभा में । हीन भाव बरतहु तुम तामें ॥
ससुर भये जोगी बड ज्ञानी । सासैं सुनयनादि महारानी ॥
विदित सवन इनहू के नाता । कहैं सबंधु जनक जामाता ॥

लक्ष्मीनिधि आदिक श्रीमाना । जे जे राजकुमार प्रधाना ।।
भये सकल सारे ईहि पाछै । भय अपुन वहिनेऊ आछै ।।
रिद्धि सिद्धि आदिक वपु नौनी । बन्धुजनककुल की गजगोनी
इहि के जोग भई सहराजै । ननदेउ मानहि तुम काजै ।।
सो०-कौशल्या के लाल, कहत रहे सब अवध जन ।
प्रभुता परम बिसाल, पाई तुमईहि वंस ते ।।
दो०-धनुष नही हौ तौ इहां, करते पन नहि भूप ।
नृप मंडल में कौन विधि, होते विदित अनूप ।
क्रीडा चपल रहे लरकाई । सक्तिवान तुम भइ सहाई ।।
कोकहि सकि तब सुकृत बढ़ाई । रमनी त्रिपुर सुन्दरी पाई ।।
श्रीपति बिन ऐसी वर नारी । पाइन सकि कोऊ संसारी ।।
जो उन सौ प्रारब्ध तुमारो । तौ किन मृदुल हृदय महधारौ।
ये मन्दिर बैकुन्ठ समाना । रमवे उचित नित्य विधि नाना ।।
अंतहपुर ते प्रथक विराजे । सदा सुरत सामग्रिनि साजे ।।
क्रीडा के उद्यान सुपासा । संतत करवे जोग विलासा ।।
कुसमित सर तरु सघन मध्याई । आवति त्रिबिधसमीर सुहाई
दो०-मृग विहंग अलितियन संग, करै बिहार सुछन्द ।
लखिय लतन को लपिट वौ, रघुकुल केरव चन्द ।
नहि निकामता जौं अनुसरही । तौ हमसबकी वंछित करही ।।
रमिहि जान किहि राख सुपासा । होयअवधिसुखकोविश्वासा
दो०-सागर है तिन वचन कौ, राम सकल रस ऐन ।
सुनहि प्रेम मदमत्त ह्वै, हेरे निरख मुख नैन ।।

नित प्रति अमित नरेस कुमारी । अतुलित जौवन रुपसंभारी
सिय प्रसन्नता ते रूचि मानी । राघव लौ अनुमोदहि आनी ।।
गंध तमोल सुमनमय दामा । देहि तिनहि फलमिष्ट ललामा
तुष्ट जुरूप अनूप निहारे । सो कि लाभ में तोष बिचारे ।।
मधु ते मधुर बपुष मधुराई । पियत राम की चितन अघाई ।
सीता सी बड़ भागिनि कोई । जानै भुवन कितहु नहि होई ।।
दम्पति कौ माधुर्ज बिसाला । बनौ अखंड रहै सब काला ।।
जुवतिनि के चित दृढ़ अनुरागे । गृह के काज उचितसबत्यागे
बिविध बिनोद क्रियन में माती । छन लौ जातगने दिन राती

दो०-असन सुनयना हाथ ते, कर इक दिन भगवान ।
ससुर सदन में मृदु सयन, पौढ़े ये कत जान ।।

जैसे मातु सेज किहु काला । पौढ़ रहत ते अवधि कृपाला ।।
रहे सुत्यौ पर प्रेम समोये । इच्छा ते सुख ही मह सोये ।।
पुर्व ग्रहन ढूंढत सुद छाई । राज सुता बहुती तहँ आई ।।
निंद्रावस लखि समझिउ चहई । कैसे सावधान ये रहई ।।
मिल चलके हर ये सुप्रवीनौ । आभूषण पर आयुध लीनौ ।।
कितहू गूढ़ ठौर घर आई । कोउ घोर महावर लयाई ।।
पाँइत बैठ सुढ़ीट सुभावा । लगत जथा तिहि भाँति लगावा
अंगुरी मृदुल मृदु पद छविवाना । मृदुललगावन मैंनहिजाना

दो०-करन चहे अंजन सहित, जल जग निरंजन नैन ।
तब लग परे जग सीलनिधि, परमप्रभा के ऐन ।।

हती जतन परथितजु सिराने । दृग खोलत चंचल न दिखाने ।
कज्जल कलित तर्जिनी जोई । डारी पौछ विदित नहि होई ।
लैकै ब्यंजन सुभाव गंभीरा । लगी मंद विधिकरन समीरा ।
बोली भले सयनवस होंऊ । आयो निकट न जानहु कोऊ ।।
करै रम्य दरसन की आशा । कब की हम बैठी तब पासा ।।
और हरिन दृग मृदुल सरीरा । भजी सुख जुत भये मंजीरा ।।
थित ह्वै दूर मैंन मतवारी । हंसन लगी दै दै करतारी ।।
कहैं विनोद वती वर बानी । कौन गुनन भाषहि चितज्ञानी ।।
परषी राम रही ढ़िग जेती । हैं परिहास निरत सब तेती ।।
गनही कर पावधरी सरलाई । दरसै आँखिन माहि ढ़िठाई ।।
छ०—कहि राम भो वर काम तुमरे अंग कोमलता भरे ।
ये कटिन कर्म परन्तु तुम पर जात कहु किहि विधिकरे ।
यह ख्यात बुधवर आचरन मह हृदय की पहिचान ही ।
नहि द्रव्य किहुके सदन में अनुमान सौ हम जान ही ।।
चिंता कौ जिन ल्याउ सुजाना । ससुर तुमार महाधनवाना ।।
तुमहि पुत्र अपने अब जानत । प्यारे प्रानन के सम मानत ।।
तिनते अनमोले सुखदाई । सुनत कृपाल दैहि कढ़वाई ।।
कहं करनै ममता कर रामा । विलसहु वांछित वस्तु ललामा
हम जनमी राजन कुलमाही । सम के राजन के ग्रह व्याही ।।
भोगहि नित सम्पति अलेखी । नहि चल च्याहि वस्तु परदेखी
अपनी बहिनि समान दुरंगिनि । जिन जानहुजुभईमुनिसंगिनि
दुहिता स्वयं वराविन जेती । होती पित आधीन सुतेती ।।

छत्री सुता विप्रन घर जाई। कहि ये कौन सुजाति कहाई ।।

दो०-हतो नृप जो जगत में, सुचि रवि वंस समान ।
नृप कलभाष सुपाद लौ, बनौ रहो सुप्रमान ।।
को जानत माता पिता, करत सुकिय उतपन्न ।
होउ खिन्न नहि चित्त में, हौ अदोस बपु धन्न ।।

विदित धरै दर धीरवर जानी । सीरकेतु तुम कौ बर मानी ।।
त्रिपुर अनूप रुप महभारी । अपनी प्रान समान कुमारी ।।
इई ब्याह विधि सौ कर दाना । ताकौ ग्रहन कियो तुम पाना
अवनहि रही नूनता कोऊ । उत्तम तै उत्तम जग दोऊ ।।
रीझ मनहि भाषो रघुराई । जनहु बहुत बचन निपुनाई ।।

दो०-प्रथमहि हम जानी नहीं, बसत चोर इहि टाम ।
तौ कह अपनी वस्तु कौ, राखन लेते भाम ।।

भाषत ही इम राम कृपाला । बातन तृप्ति होंइ नहि बाला ।।
निर्भय लोकलाज नहि आने । बोली ब्यंग बाक रससाने ।।
हौ अनन्य जन प्रिय भगवाना । बली बलिन मैं चरित निधाना
नारिनि के पुरुषन के नाथा । वल ते देखत हंइक साथा ।।
चोरत चित करके चतुराई । कौने यह विध तुमहि पढ़ाई ।।
जुवति ग्रह स्तिनिकीसुबहोरी । किय ग्रह कर्म क्रियनकीचोरी
लोक लाज निन्दा हर लीनी । कीनी बंधुन में हित हीनी ।।

दो०-दृष्टि मात्र जमदग्नि सुत, दीने जरीं बनाइ ।
समयक ईश्वर की बहुर, लिय ईसता चुराइ ।।

तुम में इन्द्रजाल बहु पाये । कौन इन्द्रजाली सुपढ़ाये ।।
सिल ते जडन वस्तु निरधारी । तिहिते करी मनोरम नारी ।।
छन में प्रहुँचाई पति पाही । कहाँ चमत्कृत पद रज माही ।।
खण्ड पर सूकोदंड बडेरौ । मेरु समान सार जिहि केरौ ।।
सब अवनीस गर्व को गंजन । रावनादि कर पावे न भजन ।।
लेत करन मह टूट सुगयऊ । भट समूह में वड जस भयऊ ।।
ऐसे कहि सैनन में कहई । नृप पतिनी ढ़िग ही ग्रह अहई ।।
आइ जांहि तौ बनहि न आली । धर द्विजैन जहाँ प्रनाली ।।
दो०-बड़ी निपुन येकैत ही, वातन रही लगाइ ।
धरी जथा विधि बस्तु सब, येकन दृष्टि बराइ।
भई प्रसन्न आन प्रभु पासा । करत कटाक्ष कहे मृदु भासा ।।
तुमही चोर साहु तुम आहु । मिथ्या अपजस दीजत काहू ।।
मद विहवल हैं नैन तुमारे । नहि नीकै निज निकट निहारे ।
जे देखहु आयुध पट भूषन । धरे इहाँ कोकर सकि दूषन ।।
कहती इम तिनसौ श्रीमाना । बोले करत मंद मुसक्याना ।।
नारी मैं भारी भामिनी । कलि मैं अरु काली महकामिनी ।
आदि पुरुष जिहि अंड बनाया । थापित करै सर्व निज माया ।
तुम सौ को बातन मह जीतहि । तुमरे कर्म देखमन भीतहि ।
दो०-अंतर चहैं न हास में, करत राम के संग ।
पुन पुन औझहि प्रेमते, मोहित करी अनंग ।।
विविध धृषता की तिनबानी । कैसहु सुनि सुनयना रानी ।।
चिंतीय दुहिता अभिरामा । वयमद करन न देहि विरामा ।।

उचितन सुनहि कबहु महिपाला। नहिप्रसन्न होवहिइहिचाला
निज ढिग ते दासिहि पटवाई। बोल लई कछु व्याज बनाई ॥
जनकनंदिनी सील निधाना। जासु पिता अतुलित श्रीमाना।
छनछन प्रति पटभूषण भाये पहिरहि जेतन लगहि मुहाये ॥
लोकरीति लज्जा कह लीने। चिर लौ राम दरस बिनु कीने।
बिना मिलै घनश्याम बिसाला। सुखकर गनत कौनहुकाला।
सो०-नये नये शृंगार, करवावहि चातुर्ज कर।
मति सौ समय निहार, ल्वाइ चलहि श्रीरंग लौ।
दो०-ठठकत पग मग में धरत, करत मातृ जन भीती।
सहचारिनि सम रुपिका, बोधत जाँहि सप्रीति ॥
भयन लडैंती जिय मह आनौ। अर्धराति सब सोवत जानौ ॥
श्रीपति ग्रह ते जनक तुमारे। तेहु सुनयना भवन सिधारे ॥
राजकाज करके सब भ्राता। गये राउन को तब भ्रता ॥
कर कर दासी दास प्रनामा। गये सुचित ह्वै निजनिज धामा
आवागमन रहा अवनाही। चलिये प्रिय पति लौ मुदमाही।
रंगभवन भीतर पहुचाई। निज निज थलन रहैं बिरमाई ॥
ब्रह्म मुहूरत लखि वैदेही। जदपि न त्यागन चहत सनेही ॥
तदपि मातृ गृह सकुचन थोरी। आवैद्वारि निजसयन किशोरी
दो०-कछु दिन ते जह नित्यक्रम, बाँधौ सुखद सषीन।
जिहि तिहि विधि सिय राम कौं, देहि मिलाइ प्रवीन।

॥ सिद्धिजी के साथ चलना राम ॥

एक दिवस निमिजा बड़भागा। गई सिद्धि ग्रहवसे अनुरागा।

संग उर मिलानित सुखकारीं। सहोदरी प्रानन लौ प्यारी ॥
निपुन सषिनि दासिनि कौ जाला। सोहेसेवन निरत बिसाला
लक्ष्मीनिधि की तिय सु प्रवीना। आदर बड़उ जथाविधिदीना
नाना बचन बिनोदन माही। अस्त होत रबि जानेउ नाही ॥
स्वार सुन्दरिनि विनय कराई। प्यारी हरि मदिर ते आई ॥
गवन सुपाक मंदिरन कीजै। महा प्रसाद सीस धर लीजै ॥
उभय ननंदन सहित सुभ्रांता। पाई विरचि तियनकी पांता ॥
दो०-मुख सुगंध वीरा विविध, भोजन करै सप्रीति।
अंग राग सौरभ सुभग, दये परस्पर रीति ॥
चलि आपुन पहुचावन काजै। विचभवन राघव के राजै ॥
चलहिन सिया बरहु गहिहाथा। ल्वाई गइ जह श्रीरघुनाथा।
बोलि हंसि ईक रतन हमारौ। जौ तुम नीकि विधि उरधारौ
तौ हम तुमहि देहि छन येहीं। वह चिंता मनि सम मुददेही ॥
निकट राखनिसि परखेंहु सोई। तजहुन कबहु सुखद जौहोई।
सुन इम गुढ़ उक्ति मयबानी। विहसी रसिकवर रामबखानी।
तुमरौ दयौं जन्मप्रति लेहू। महि रतनाग्र भोगता मैंहू ॥
लसै लाल ते सिय उतकंठा। भई कामते हिय उतकंठा ॥
छ०-पहुचाय रंग निकेत महँ, सखिन जुत मुरकै चहै।
कर लाज भयकौ अग्रसिय कढ़ि वस्त्र करदौहन गहै ॥
कहि सिद्धि हम नहि जात लछमन मंदिर में रहै।
नहि भेटवहु वासरन ते तह जाय कछु बात कहै ॥
करि प्रबोध सिद्धि मतिमाना। गई रहै लछुमन जाहँ थाना।

सो०-वैठारी तिनके पास, एक मुहरत लौ सुबुध ।
तुमछित वाक विलस, करहिन हमसौं सीलनिधि ।।
दो०-तब लगि इहां विलविये, हमरे कहे प्रविन ।
आवहु बहुर परसंनहिय, युत सुभगादि सषिन ।।

।। शयन महल ।।

चहुँदिशि मनिमय महल तहँ, मध्य सुकुँज बिशाल ।
पदमराग खम्भावली, गजमुत्ता को जाल ।।
विविध रंग की चाँदनी, परदे बने विचित्र ।
विछे बिछौना मखमली, उदय चित्र शशिमित्र ।।
लच्छे लठकत ललित अति, तहँ कंचन पर्यंक ।
अति कोमल पयकेन सम, विछे वसन तेहि अंक ।।
क्रियो सैन तहँ लाल सिय, मेवासुख अतिलेत ।
रसिक मंजरी सुघर अति, युग पद जलज सुहेत ।।
मदन यंत्र बाजत मधुर मधुर मधुर सुरगाय ।
सुनत सुनत सियलाल को दृगन नीद रही छाय ।।
कियो अलीगन सैन सब निज निज सुखद निवास ।
वहु अलि छाई क्षोम पर निरखति निशा प्रकास ।।

।। अष्टयाम ।।

सेस चारि घटिका निसि जानी । मंगल सजहि थार सुआनी ।
मदनकला दम्पति रूपनिहारी । भरहि दृगनमहँ करबलिहारी
पद्म गन्धा सूरुपिनि हेली । गावै सरस रागगीत नवेली ।।
प्रात माङ्गलिक वस्तु सोहाई । सुषमा तहँ दरसावत आई ।।

दो०-सुचि अभिनयसो सुरति सखिमोहै लखि दम्पती चित्ता।
करवावत सुइच्छा सविधि सुचित कैंक्रत नित्ता ॥
शान्ति रूपिनि रहि ढ़िग माही। दुहुन दन्तधावन करवावही।

॥ छप्पय ॥

अग्निकोण में परम ललित एक कुन्ज सोहाई।
बैठे तहँ प्यारिन समेत लालन रघुराई ॥
सहचरि जल दतुइन ले आइ सब बदन धोआई।
दिव्य वसन मुख पोछि कछुक अहलाद बढ़ाई ॥
नाना सुरभि सुनामिनि आली। करहि सौज सब रचिहाली।
स्नान निकुँज स्वच्छ सोभनी। अन्हवावत तनदरस विलयनी
अंग सुगन्धन मीड़िके निरखहिं बलिजाई। नहवावत सुखदाई
युग चौकी पै बैठाई नहवावत सुखदाई।
दोउके अंग पोछत भई सो सुख बरनि न जाई।

दो०-बहुरि तहाँ अशनान करि, गये कलेवा कुन्ज।
सो दक्षिण दिशि राजहीं, खटरस व्यंजन पुन्ज ॥
भोजन करि प्रमुदित भये, गये कुन्ज शृंगार।
सो नैरित्य विराजहीं, कंजन मणि आगार ॥

॥ छप्यप ॥

कीन्ही तहाँ सिंगार पिया प्यारी मनभाई।
नखशिख मणि रचना अनूप छवि वरणि न जाई।
पश्चिम दिशि शृंगार आरति कुन्ज सोहावन।
तहाँ गये रघुवर किशोर बहुकाम लजावन ॥

बैठे मोतिन तखत पर लाल लाड़िली अति छवि।
भूषण वसन अनूप सब झलकत सो जनुशशि रबि ॥
दरपन दइ मुख देखहीं युगल मगन निज रूप में ।
सहचरि सब मोहित भई युगल स्वरुप अनूप में ॥
आरति लई उतारि सहचरी मोद बढ़ाई ।
सकल प्रिया मव हर्षमहा उरमें न समाई ॥
भूषण नखशिख मणिन जराई। अंग-२ रचि सखिन बनाई ।
सोह नवल तन नूतन भूषण । नखशिष सब श्रृंगार अदूखण।
कंचुकि अंग अनुकुल पेन्हाई । सकल बसनमहँ अतर लगाई ॥
बीरी ललित खवाई बहोरी। सखिअन मनमहँ प्रीति न थोरी
राजिव नयननि अन्जन सोहे। सकल सहचरिन के मनमोहे ॥

॥ सिंगार कुन्ज ॥

चहुँदिशि घर सिंगार मध्य सिंगार करावन ।
तहाँ बिछी वर फरस अरुण रंग अतिसोहावन ॥
सिय कहँ लै सब बहिन समेता। गई सहचरि श्रृंगार निकेता
सिय की सकल सखीं परवीनी। करण लगी सिंगार नवीनी ॥
अङ्ग सकल शुभ गंध लगाई । कमला बिमलसलिल अन्हवाइ
वसन नवीन महाँ छविरासी। पहिराई अति प्रेम सुदासी ॥

॥ सभा कुन्ज ॥

गये सभा वायव्य कोण तहँ बैठें जाई ।
सकल प्रियन की भीर महल अदभुत छबिछाई ।

बैठी सब नृप लाडिली पिय संग मन मोहहीं ।
रसिकलाल प्यारीनवल नखशिख अदभुत सोहहीं ।

उत्तरदिशि भोजन गृह सोहै । वरणे छविसो कवि असकोहै ।
आसन भोजन दिव्य सोहाई । प्रियन संग बैठे रघुराई ।।
आइ भोजन थार सोहावन । षटरस भरी ललित अतिपावन
पावत सब मन हर्ष बढ़ाई । व्यंजन अमित स्वाद मनभाई ।।
हाँस बिलास होत बहुरंगा । सबके मन अनुराग अभंगा ।।
भोजन करि अचमनपुनि किन्ही । बीरी ललित सहचरीदीन्ही
चले शयन की कुन्ज सोहावन । सोई सान कोण मनभावन ।।
सेज्जा विविध रंग तहँ सोहे । सब पर उपवरहन मनमोहे ।।
तहँ प्रीतम प्यारिनमिलिगयऊ । बिमल सेजपर शोभितभयऊ
करि पुनि सयन उठे रंग भीने । लाडिली अंश लालभुज दीने।
मुख प्रछालि कछु मेवा खाई । अलिगण करमुख दीन्हधोवाई
पानअतर दूसर सखिदीन्हा । कछु पियलई कछुप्यारिनलीन्हा

।। केलि कुन्ज ।।

दो०-प्रथम आपनी महल सब, देखी मन चित्त लाई ।
सकल महल अदभुत लसे, शोभा वरणिन जाई ।
सबके मन अभिलाष लखि, पिय प्यारी रुचिपाल ।
अमित रूप धरि अलिन संग, करन लगे रसख्याल ।।
काम सदन बहुरूप धरि, लगे बिहरने लाल ।
अमित रूप धरि सखिन तन,प्रविश कीन्ह सियलाल ।

बंगला अष्ट सुमन कर सुन्दर, सुभग तड़ाग सोपानरी ।
प्रथमहिं बैठि मधुर फल पावहिं,गावत अलिगन गानरी
कीर पढ़ावहिं कौतुक निरखहिं, कतहुँसो झूलन लागरी ।
खेलहिं चौपर मरम बचन पुनि, बुझवहिं मन अनुराग री ।
चलत फुहारे विविध भाँति के, खेलहिं पुनि रस फाग री ।
पुनिकुंजन 'रसराज' सुयहि विधि निरखहिं जेहि बड़भागरी

॥ छप्पय ॥

चौसर घर सतरंज नई वत्तिस रंग दोहै ।
लोलवोरणि स्याम प्रिया दिशिपीत बनो है।
लाल बोर जौह लाल को रूप सोहावन ।
नेहकली तहँ वो बोजीर पिय जयति करावन ।
प्रिया बोर जो साह हैं सीता रूप अनूप हैं ।
प्रेमकली ढिग राजही सोई ओजीर को रूप है ।
अपर नर्द सवकी सरूप निमिवंश कुमारी ।
दोउ दिशि शोभा करे महाछबि अतुलित भारी ।
पुनि चहुँदिशि सब कुंअरि लसे नखशिख मनहरणी ।
खेलत प्रीतम प्रिया महाचबि जायन बरणी ।
होत अमित कौतुक तहाँ अतिशोभा तनु छाई है ।
श्रीसुखमा निज चालते सिय की जीति कराई है ।

॥ रास कुन्ज ॥

दो०-अमित हास दौदिशि भई, सबके मन अतिमोद ।
राजकुअर नृप कुंअरि संग, करत अनेक बिनोद ।

पुनि प्रभु गये कौतुकागारा। जहँ अनंत खेल बिसतारा ।।
स्बौत पांडुरो धुरस पीता। श्याम अरुण ध्रुम रक्त पुनीता।
पिगलन बरनौ मणि अपारा। तेहि नवमणि के विविधप्रकारा।
दो०-यह सब लिखे विविध रंग, अङ्ग उपङ्ग बनाई।
खेलवावहिं सरहज विहसी, रसिक राम रघुराई।
सप्त उर्ध अरु अद्धं में जहँ लगि नृत्य समाज।
तिन में नटति जो नायक तेहि के रुप अरुराज ।।
निरखत रसिक मणि, रामलला सुख गेह।
नारि नवलदेखावहीं, पिय कहँ सहित सनेह ।।
कहुँ होरी की नकल बहु, खेलत नर अरु नारि।
तहँ अबिर अवरख बिमल, उड़त अनेक प्रकारि।
कतहु ब्याह रचनालिखि, मंडप विविध सँवारि।
कहुँ कोहवर रचनालिखि, यूथ यूथ वर नारि ।।
दो०-खंड अनेकन वने तहँ, नौरंग मनिन सँबारी।
तहँ कौतुक सब देखिये, करमें कल को धारी।
कोउ खंड में जायके, कल फेरिये सुदाव।
निकसे कृत्रिम नायिका, नृत्य करै बहुभाव ।।
पुनि दूसर कल फेरिके, उदय होय सारीतार।
यहि विधि कोतुक अमित, को वरनि न पावै पार।
दो०-झुलन को प्रीतम प्रिया आये कुन्ज मंझार।
कुन्जेस्वरि सनमान करि, सजवायो दरबार ।।

हिलि मिलि झुलत डोल दोउ अलि हिय हरने लाल ।
लसत युगल गल एकही, सुसम कुसुम मय माल ॥

॥ छन्द ॥

नृत्यगान की सलाह तहँ आपुस माही ।
लाई नृत्य सिंगार सहचरी जोइ जोइ चाही ॥
सब कुअरिन पहिराई वसन महँ अतर लगाई ।
बीरी दै मुखचंद रंजि पुनि मुकुर दिखाई ॥
लागी साज मीलावने सातों स्वर मंडल छई ।
नृत्यगान करने लगी परमानन्द सुखमय भई ॥
भई परम आनन्द देह सुधि सकल गवाँई ।
होडा होढ़ी नरति सिया दूलह सहित ॥
युगल अनोठी तान लेति गावति मृदु गीत ।
नाना गति ते नृत्यहि गावहि राग नइ नई ।
सब कुअरि एहि भाँति ते विविध गति नृतत भई ।
कोई अनुठी तान लेति सब भाँति संवारी ।
याम एक एहि भाँति ते नृत्यगान सुखअति भई ।
सब कुँअरी निमि वंश की, लालन रूपहिं निहारि ।
रास श्रृंगार वनाइके, सब विधि भई तयारि ॥
लालन हूं श्रृंगार निज, रची महाछवि देत ।
महल बहुल जगमग भई, शोभा केर निकेत ॥
जन्त्रकार सहचरि सकल, आईं सजि निज रूप ।
जन्त्र बजावत मन हरति, गावति राग अनूप ॥

युग युग प्यारिन मध्य में लसत लाल छवि अयत।
नृत्यत मुद्राकार हैं मोहत नयनन सयत।।
कर कर धरि नृत्यत युगल नूपुर बजत उदार।
मध्य सिया संग नृत्यही, स्याम रसिक सुकुमार।।
छप्पय-व्यारु कुँज की सखी एक आई तेहि काला।
लखि सीता बर को अनूप छवि रस मतवाला।।
दई जनाय प्यारी तयार पिय भोजन कीजे।
प्यारिन के संग आइ लाल मोकहँ सुख दीजे।।
उठे लाड़िली लाल तब भोजन के गृह में गये।
सकल प्रियन के संग में बैठि मुदित प्रफुलित भये।।१।
आवन लगी थार रतन मणि जरित सोहाई।
षट्रस व्यंजन भरी पूप पूरी मन भाई।।
दधि मिश्री मेवन की खीर बरबीर ले आई।
भरी कटोरन धरी लाल प्यारिन ढिग जाई।।
जल की भाजन मणि जरे धरे सकल ढिग सोहहीं।
पावत पिय प्यारिन सहित काम रति मन मोहहीं।।२।
भोजन कर अंचवन कराई दई पान सहेली।
चले सैन की कुंज लाल सीता अलबेली।।

षत्रृ विहार

ग्रीषम कुँज में पुनि गये, स्याम राम सुख पाई।
हौज अनेकन रीति के देखी, मन चित लाई।।
कल फेरतें अमित जल, कमलाही को आवा।

पुनि फोहार अनेक विधि देखि सबक्कि भाव ।।
एक दिवस में एहि विधि, देखि ऋतु कुँज ।
शिशिर कुँज निशि सैन भइ, जहँ सुख रस पुँज ।।
पौढ़ा अपनि सह चरिन, लई सुनयना टेरी ।
सुनि आयसु अति मुदित मन, जुरि आई सब नेरी ।।
मृदु कहि सवहि बुझाय, सिय को षट ऋतु कुंज ।
सकल दिखावहु हर्षि हिय, स्याम राम सुख पुँज ।।
जेठ असाढ़ ऐसे गई, करत अनेक विलास ।
पुर भर में आनन्द महा, करणिन जाय हुलास ।।
आई सावन मास जब, झुलत युगल हिंडोला ।
कुँज कुँज प्रति झूलना वनि मणिमय अनमोल ।।
महल निकुँज में पिय राम सिय संग सोहा ।
गौर स्यामल अंग छवि लखि रति पति मन मोहा ।।
उठे लालन संग प्यारी, चले झुलन धाम ।
सह चरित्र की भीर चहुँदिशि, सकल नारि ललाम ।।

।। ऋतु बिहार ।।

चंद्राननि चहुँओर लिय फुल गेंदा ललित ।
मध्य किशोरी किशोर फूल गेद खेलन लगे ।
विबिध फुल को हार पिय प्यारी पेन्हे दोऊ ।
सजित तन रतिमार सकल फूलन के सजे ।
नख शिख भूषण फूल फुले खड़े सनेह में ।
निरखि नयनअलि भूल सकल प्रियन के सुखरस ।

फूलन खेल अनेक कला अमित तेहि खेल में ।
करि करि सकल अनुठी हास सकल खेलही ।
चलिये शीघ्र कछु खाइये, व्यंजन ललित अनूप ।
चले चतुर भ्राता विहसि, मंगल मोद सरूप ।।
बहुरि अर्धदय फेरि पट, चलि लिवाय निकेत ।
करत दुलार अनेक विधि बनत न उपमादेत ।।
पग धोवाय दासी मुदित बैठे सब राजकुमार ।
परसन लागी सरहज, सकल षटरस चार प्रकार ।।
एक-२ रस में अमृत विधि,व्यंजन बहु सुस्वाद ।
जेवत राघव रसिकमणि, गारी होत मृदुनाद ।।
लावति व्यंजन मधुर अली, करि-२ मृदु मुसुकान ।
बजत चरण कर मधुर भूषण रसमय सान ।।
परसत शौभित करकमल कंचन मनिमय थार ।
लेहु लाल आले सरसवनी, ब्यंजन मसालेदार ।।
तब बोले सीतारमन, छविमय मृदु मुसुकाय ।
लेत सियावर रसभरे, देत जो नागरी नारी ।।
मुख मेंलत वर्णन करत प्रीति रीति अनुसारी ।
मन दीन्हे तिन सब दियो, देहु जो तुमहि सोहाय ।।
तब सिद्धा लाई दही, मिश्री तामहँ रसमय डारी ।
कछु परसति कछु हस्तमँह देत कपोलन प्यारी ।।
यहि विधि हास्य विलास युत पावत राजकुमार ।
निरखत मुख की माधुरी सब हिय हर्ष अपार ।

पीवत वारीसो छबि नजायवखानी । देखि-२हरषि महरानी।
पुनि बोली सिद्धा कर जोरी । वाणी मधुर अमिय रसबोरी ।।
लेहु लाल तरकारी औरी । कहहुतो अबहि लाउ गर्म कचौरी
जो रुचि होय सो माँगहुँ प्यारे । रघुनन्दन तेहिमुखहि निहारे
मंद विहँसि माँगी सो पाई । तेहि छन को सुख बरनि न जाई
भोजन भई श्याम मन भाये । मधुर स्वरन सखी गारी गाये ।
दो०-अचवन समय निहारिके सहचरि भई सचेत ।
जलझारी स्ववर्ण की भरिलई प्रीति समेत ।।

॥ झुलन बिहार ॥

सकल कुअँर अचवाय के वीरी .ललित खवाय ।
बहुरि कुंवर सब कहँ देई,कुँवर कुअँरिन ढिग पहुँचाय ।
वैठे श्याम अनुज सहित महाँमोद मन माही ।
सरहज सब बैठी तहाँ शोभा वरनिन जाही ।।
बाते रसमय होत वहु सुनि दुलहिन मुसकाही ।
सरहज ननदोई वचन सुनिरति काम लजाही ।।
सुभ मुहूर्त आई जबै दुलहा दुलही समेत ।
सरहज रुख लखि चलत भे झूलन सुखद निकेत
सब सखी कहँ गान करही । जन्त्र वदत सो वरनि न जाही ।।
हास विलास अमित बहुरंगा । होतजात सरहज सब संगा ।।
पहुचे जबही हिंडोल घरमाही । रघुनन्दन मनसुखन समाही ।
लखि रचना तेहि अतिहि मनोहर । बोले रामकुंअरको मनहर
झूलहुँ सबही झुलावहु मोही । सिद्धा कहि हमार मत ओही ।।

रघुनन्दन सुनि अतिसुख पाई । सरहज बीरी ललित खवाई ॥
ताहि महल में कुन्ज अनेका । रचना सकल एक ते एका ॥
प्रति कुन्जन हिंडोल सुठि सौहैं । रचना सकल कामरति मोहैं।
चारि कुन्ज में चारो भाई । निज दुलहिन संग आनन्द भाई ।
दूलहन कहँ दुलहिन समेता । बैठारे हिंडोल अति हेता ॥
लगी झुलावन गावन गीता । अतिसुख लहेउ रामअरु सीता ।
जन्त्र वजत विशेष सुखदाई । सखियन गान करै मनलाई ॥
विविध हास सरहज सब करही । आनन्द उमगि-२उरभरही ।
दुलहिन घूंघट में मुसकाही । सो समाज सुख बरणिन जाही
जाल रन्धन रानी सब देखी । जीवन जन्म सुफल करि लेखी ।

दो०-बहु बिनोद झूलत महल भई अति परम उदार ।
सबहि मगन सुख सिंधु में सव हिय हर्ष अपार ॥
आई कुर्जहिंडोर बैठे सखि खवाई पान ।
बजन लगे जन्त्र विधि ते होत सुमन हरगान॥
नागरि सब उमंग भरि भरि लै अनोठितान ।
पिय प्यारी तहँ रिझावति हरति रति-२ कौ मन ॥

सारी सरहज के साथ नृत्यगान हास्य रास परिकर्ण

बैठे सिद्धि सदन कछु राजे । सेवत सखिगन चहुँदिशि भ्राजे ।

दो०-नवघन सुन्दर अनु दिवस, सुन्दर सब सुख लेही ।
आवत ढिगपुर सुन्दरिनि, सुन्दर आदर देहीं ॥
वैठारहि निजपास वोलावहि वचन करहि मृदुहाँस ।

सखियन लालन को बुझाई विधि में बैठाई ।
मसनँदत किया अति अनूप छवि वरणिन जाई ॥
पुनि कुंअरिन बैठायउ पिय समीप सादर मुदित ।
कोई वाये कोउ दाहिने जनुबहु शशिधन ढिगउदित
छत्र सकल कुंअरि कुमार ढ़िग सखि लै टाढ़ी ।
चमरढार सब खड़ी भई अदभुत छबि बाढ़ी ॥
अपर सखी सब यथाभाव सेवा लिये सोहे ।
लली लाल छबि सिंधु सकल परिकर मनमोहे ॥

॥ रास बिहार ॥

लक्ष्मीनिधि की प्रिया सकल शोभा गुणखानी ।
रघुनन्दन को मुख निहारि बोली मृदु बानी ॥
सुनहु लाल आनंद धाम सुखधाम बिहारी ।
ह्वै अज्ञातो सखी नाँचि मन हरहिं ते हारी ।
रघुनन्दन बोले मधुरतुम नांचहु तो अतिभली ।
तथ पूरण सुखपावई मन हमार सुनिहू लली।
सिद्धा कही मुसुकाइ नाँचिहो तुमहि नचाई ।
जौ तुम्ह नाँचहु लाल महासुख वरणि न जाई ॥
लाल कही हम नचब ननद तुम्हरी जब नाँचे ।
तब तो अति सुख होय कोई रस रीति न बाँचे ।
जंत्रकार अगणित सखी जोसिय प्यारी की कृपा ।
बाल संग ते सँग रही आई सब हर्षित हिया ॥

सकल जंत्र सम कीन्ह येक स्वर बाजन लागे ।
बाढ़ी स्वरन अलाप सकल प्रमुदित मन जागे ।।
सिद्धा कहि इक सखी महल की सदर दुआरी ।
दै कपाट चलिआउ अबहिं नहिं कोऊ नारी ।।
षट वसु षोडश सहचरी अरु सरहज सब रहगई ।
सब विधि साज सवाँरि के नृत्यरु गाना रंभभई ।।

।। सातो सरहज को गान ।।

सुनहु रसिकमणि रामदुलारे हम सब तुम पर बारी ।
देखत तब मुख कंज माधुरी नयन कंज छबि भारी ।
अधर अरुण पर मुक्ता झलके दलके हृदय हमारी ।
बोलनि मधुर हँसनि छबिसुन्दर अदभुतलाल तुम्हारी
उर मणिमाल पदिक की शोभा लषत नषत शशि हारे ।
सिंह कटी पर किंकनि चमके पद राजीव ते हारे ।
नख अवलींमें लली सब मोंहित जावक अतिहिं सोहाई ।
प्रियाशरण मनहरण लाल तुम मंजु महा छबि छाई ।।

।। महारास ।।

दो०-सरहज की अभिलाष लखि, उठे लाल चितचोर ।
कुंवरि उठि प्रमुदित बदन, नटन लगी कर मोर ।।
होड़ा होंड़ी नृत्यही, सब कुंअरिन मिलि लाल ।
बहु सुख रस अनुभव भई, उमड़्यो आनन्द माल ।।

।। श्री लाल जी को गान ।।

चंचल दृग रतनारी प्यारी तेरी मेरो चित्त हरी ।

विहँसनि नटनि आँगुरी मोरनि झलकनि भूषण अंगजरी ।।
लचकनि कटि अस ग्रीव मनोहर नटनि तन विमन सोहै ।
चमकनि ठमकनि रमकनि की छबि रति मनहार बनो है ।।
सुख सागरि नागरि सुकुमारी, अंग—२ बर टोना ।
प्रियाशरण तब छबि समता की नागरि भयउ न होना ।।

लाड़ित अलबेलीं राज दुलारी ।
सुकुमारी मनहारी प्यारी कमल नयन कजरारी ।।
छवि भारी मन आनन्द कारी मेरी प्राण अधारी ।
प्रियाशरण चिकनारी अलकै अलकै बेसर वारी ।।

।। श्रीकुँवरिन को गान ।।

पिय छबि मौंपै वरणिन जाई ।
क्रीट मुकुट मीनाकृत कुण्डल, सुन्दर अलक सोहाई ।
नासामणि झूलत अधरन पर, अरुण अधर राजत सुखदाई ।
चमकत दशन तड़ित द्यु ति लाजत, विहँसनि अतिछबि छाई।
केशर तिलक बिन्दुयुत झलकत, भृकुटि वंक मदन धनुमाई ।।
कजरारे नयनन की चितवनि, कोटिन काम लजाई ।।
राजकुमार सकल गुणसागर, बोलनि में मधुराई ।
प्रियाशरण मनभावन पिय को लखि बिनु मोल बिकाई ।।

।। छप्पय ।।

महारास भई छवि समुन्द उमड़ी सुखदाई ।
सबकी आस पूरी भई सबकी मन भाई ।।

पुनि बैठे रघुवीर लाल बैठी कुंअरी सब।
बहुरि आइ मनलाज, छपी घूघट दुलहिनितब।
हँसन लगी सरहज सकल बहुविधि लाल हँसाइ के।
मन वाँछित सुख लीन्ह सब परमानन्द अघाइ के ॥

दुलहा दुलहिन की होली

दो०-अति सप्रेम रघुलाल को रानी अजिर बोलाइ।
सुनत शासु अज्ञा प्रबल, सब कुमार तहँ आइ ॥
संग आये रघुवंश के कुंवर सकल गुणखान।
सहबाला सब राम के, प्यारे प्राण समान ॥
सब कुंअरौटा येक दिशि, सब कुंअरी एक बोर।
होन लगी मंगल महा, रति रति पति चितचोर ॥
पुर नारी सब महल के, कोठा पर चढ़ि जाय।
चतुर दिसा बैठति भई, खिरकी दइ खोलाय ॥
होरी धूम मची महरानी महल मझार।
राम लखन अरु भरत शत्रुहन चारो राजकुमार ॥
श्रीसीता उर्मिला आदि सब राजकुंअरि छबिसार।
अमित सखिनयुत राजित सुन्दरी शोभा अमित अपार।
उत रघुवंसी कुंअर संग शोभित शोभा शील उदार।
इति निमिकुल कन्या सब ठाढ़ी रंग भरे पिचकार ॥
उड़त अबिर कुमकुमा भरि भरि राजकुमारि कुमार।
मारत दोउ दिशि जय जय उचरत अदभुत होतबहार।

भोडल ढाल दोउ दिशि सबकर अउत कुमकुमा भार ।
चाल चपल दोउ दिशि अति सुन्दर नुपुर की झनकार ।।
प्रेम मगन तन बसन भिजि रहि टूटत मुक्ता हार ।
सब महली नयनन भरी देषति कुँअरिन केर विहार ।।
आँगन भीर भीर पुनि बाहर रंग के परत फुहार ।
चलत दमकला गुप्त प्रगट बहु कोइ न मानत हार ।।
वहु सखि अटाछटा बिद्युत जिमि बरखत रंग सुधार।
ग्राम बधु सब जहँतहँ नृत्यति वहुविधिमणि आगार ।।
नभते सुमन झरि देव लगायो अति हित बारहि बार ।
देव बधु सब नाचति गावति नभ गृहि राजदुआर ।।
होरी विविध खेलि कुँअरि सब सुखदइ राजदुलार ।
प्रियाशरण किमि शोभा वरणै लागत अगम अपार ।।

दो०-एहि विधि होरी सुख अमित, भइ नृप अजिर उदार ।
कुँअरि कुअर मिलि परस्पर, कीन्ही बिविध बिहार ।।
राजकुंअरि अस्नान करि, भूषण बसन संवारि ।
माता ढ़िग ठाढ़ी भई, जननी मुदित निहारि ।।
जनइ महल सुख देखि के, बाहर बैठे आय ।
पुत्र अरु जे जामात सव ढिग बैंठे हर्षाय ।।

राम प्रथम मन कीरति चीनी। गोप सुतादि जू संग्रह कीनी ।
नववियोगमहतेसबकामिनि। व्याकुल अधिक रहैंदिनजामिनि
एकन दुष एकन सुष जोई। भेद सपत्नि निकै तब होई ।।
सबकौ सम संताप बिचारी। दयौ सुमत्सर भाव बिसारी ।।

अभिलाषदि दसा दस जेती । इक विन संतत वर्तहि तेती ॥
गुन निधान के गुन अभिरामा । सुमिरत रहइ मिलिवसुजामा
चितहि प्रियहि नेह अधिकाई। को अस हित तुब निवेदहिजाई

गोपकुमारी की परिकर्ण

दृग कञ्जलकरुनाजल धोरी । मसिकिय तबकिहुँ वैसकिशोरी
दो०-जटावध्ध बेनी भई, ताहि लेषिनी केइ ।
लिखी विरह पत्री ललित, सबकौ संमत लेइ ॥
विधि सौ सहित आवरन कीनी । इष्ट नाम मुद्रा करदीनी ॥
पठहि राम गुन ढिग सुकवाला । कहा होउतुमसखि इहिकाला
सहवासिनि सव बृत्तिहि जानौ । पत्री लै मिथिलाहि पयानौ ।
ये कत मैं प्रान सनेही देहू । धर्म चारिनी धर्महि लेहु ॥
चली चंचु दावि हरषाई । राघव दरस लाभ तुर जाई ॥
किय प्रनाम देखत जगत्राता । दई सयन मंदिर मह जाता ॥
प्रभु सरवज्ञ तुरत पहिचानी । राख रत्न पंजर सनमानी ॥

॥ छन्द ॥

स्वस्ती मान दिनकुल अवतंस भुवन अधार है ।
उद्यान प्रेम अनूप सौ हम सवन भुषन कार है ।
प्रतिबिबं प्रांनन के नयन विश्रम श्रुति अधिदैवहै ।
अगार बचन के सुचित हृदय कोश सदैव है ।
श्री के हरि शिव ज्यौ सिवाके ईन्द्र ज्यौ इन्द्रानि के ।
तुम तो हमारे नाथ लीजहु प्रनति अपनी जान के ।

ह्वै चले षिन हर्षिकगन सब सुखद दूष दाइक भये।
कमते हमारे प्रान चाहते पयान कौ तुम ढ़िग अये।
जो किंकरी पद कंज की कहचित्त नाहि बिचारिये।
थिर भये रसभोग में किहि हेतु कृपहि विसारिये।
जबलौ पुरी मह आइ निज आनंद महा रमाइहौ।
तब प्राप्ति अवला सर्व हम तिनके न पाइहौ।
नहि स्वर्ग हम हियरत सुभ कै वल्यहु नहि आदरे।
तब पाद पदमा आये बिना इच्छान अज सुषकी करें।
तुम पुर्वते निरहेतु किन भाजन अनुग्रह किंकरी।
अति कँपहि संसय ते हिय कुलदोष ते कह पर हरी।
अवधेश सुत स्वामी जथा मिथिलेश जातिम स्वामिनी।
हम पाव सर्व सविस्व में जु करै रहौ अनुगामिनी।
दो०-जे अपनी तिनके अपुन लिषिऊ विचार।
विसरहु नहि देषहु सपद सुषकर सभा तुमार ॥
सुकी गइ जब लै तिन पासा। गनी सकल जीवन की आसा।
कबहू वह पत्री जू सोहाई। सीताधरी सेज पर पाई॥
वाची सकल सुभाव सुनैनी। कीन्ही मनन बुद्धि निज पैनी।
जान परत आसै ते ऐसे। प्रिय प्रति लिखहि प्रियतमा जैसे॥
बहु पतनी पति सेइहि माही। मैं जानहु दूजी तिय नाही॥
हाथ जोर मधुसम मृदुवानी। वोली रंच अनष महसानी॥
केवल रसबर्धन हित सोई। प्रियन मान लघु भूषन होई॥
जह प्रसाद को लिपि सुविशाला। आई कह ते कहव कृपाला।

दो०-निकट भोग सज्जा उपर, भामिनि के छवि देत ।
यहि ओर पत्री निते, राखै प्यार समेत ॥
नेहिनि की सुधि भूलिय नाही । जैबो कबहू हैतिन पाही ॥
जो वे वसहि अवधपुर माही । तौ हम उपालम्भ इक दैही ॥
सकल विलास विभूति दिखाई । रहैं उन्हें किहि ठौर छिपाई ।
परिनय ते पहिलिहु सुभसीला । सुनत रहीतुमरी सब लीला ।
पूछी नहि द्रढ़ करन प्रतीती । अपुन समर्थ कहैं करि प्रीति ॥
बोलि तब जैसो भ्रम धरहू । सो न वे यह निश्चय करहू ॥
वड़े बड़िन कौ आगम जानी । करै बड़े मंगल मुद मानी ॥
जो कछु सतकृत की विधि होई । करै रूप लाइक सब सोई ॥
दो०-बास हेत मंदिरन की, रचना करै नवीन ।
परिच्र्या हित संग्रहै, अनुचर वर्ग प्रवीन ॥
॥ श्री प्रिया प्रीतमजु ॥
सानुज मैं नृप कौ अतिप्यारा । अगताहूँ तिनकीन बिचारा ॥
कबहूं भानुकुल मंडन वारी । आवहि पुत्रवधू अति प्यारी ॥
तिनके हितबहुविभव बिलासा । जो रहुसब जोरत कुलआसा
जो विभूति पितु संग्रह कीनीं । देखि तुमहि तुमरी करिदीनी।
तिनहि निवेदन करि मैं वाला । आनी बहु तिय रूप बिसाला
केवल करन सुतव सेवकाई । तुम स्वामिनि संतत सुखदाई ।
दासी निज चरनन की जानी । करत रहव सासन कल्यानी ॥
यह सुविनय पत्री उन केरी । तब सिय कहेउ मंद हँसि हेरी ॥

दो०-श्री के हरि सिव गौरि कै, इन्द्रशची कै आहि।
तिमि हमरे तुमनाथ इमि,लिखहि किंकरी नाहि।
सुकृत अमित जस भवननि आवै। रावर अंग संगतब पावै ॥
लगती होइ सुहृदय प्रियासी। अनुचित कहिये तिन्हहिजोदासी
कौन लाजभय अद्य प्रभु मानौ। राजस धर्म सनातन जानौ ॥
जिनते नृप तनकौसुख लेखहि। तिनकौफेरि कुल अकुलनदेखि
तुम राजाधिराज बसुद्धाता। पुरुषन मैं उत्तम बिख्याता ॥
कीजत मम संकोच बृथाही। उत्तम तियवस होवहि नाही ॥
मुख्य नीति राजन कह येही। रहै सहज निज कारज नेही ॥
तुम उत्तम नायक श्रीमाना। उत्तम चरित्तन के सुनिधाना ॥

॥ छन्द ॥

मै उत्तमानिमि नन्दिनी अपराध नहिं चित मौ नहि धरौ।
जो तुमहि प्रिय-२ मोहि सौ ततसुखिनि तब सुख अनुसरौ।
इति विनय करत परंत अब उत चलत सबहि मिलायवी।
किहि देस की कस रूपगुन कह कौन कुल सुवतायवी ॥
सो०-ध्वजा रुपिनि सीय, परम पतिब्रत धर्म की।
भई अनख जो हिय मेटी बचन विलास मह।
दो०-सदा प्रसन्न सुखी प्रियहि, करन सुअधिक प्रसन्न।
रचना सो बोले मधर, रसपति विधि सम्पन्न ॥
भो रासेश्वरि प्रान हमारी। मो सुभाव की जानन वारी ॥
सकल गुननकी विधि अभिरामा। जोग प्रकृति पूरहुमनकामा
तुमते परम प्रभा मैं लहऊ। कौमहुँ काल पृथक नहि रहऊ।

मम तुमार सम्बन्ध प्रधाना । वर्तमान महँ सब कर जाना ।।
जाहि जौन आश्रय सुखकारा । मिलहि ताहि निहचै संसारा
बुद्धि निधान अनृत जौ ऐसे । रमनी रमन भये तौ कैसे ।।
त्रिपुर मोहनी सुन्दरताई । करलीनो वसमोहि रमाई ।।
अखिल जन्म सौ प्रिये अनूपा । विरमौ इहि शृंगार सरुपा ।।
दो०-मेरे तुम महँ वर्तहीन चौंबीस अवतार ।
तनगुन रूप सुभाव सौ, हौ सब की अधार ।।
।। सखिन सेवारता प्रीतम राजकिशोरी ।।
सो०-निज सर्वस अभिराम कीने मैं अर्पन तुमहि ।
संतत भो वर वाम तब आधीन सुबृत्ति मम ।
दो०-सुनि प्रिय बचन सुप्रेम ते भौ स्वर भंग सिहाय ।
लीनै मुदित लगाय उर भुज वल्लिन लपटाय ।।
कौनहु दिवससखिनिमहँ सीता । प्रिय गुनवर्नन करहि सप्रीता
वाक बिलास करत कहि कोई । आदर बढ़ेउ मानमहँ होई ।।
पियकौ प्यारकिये बिनमाना । तिपन अन्य विधिजायन जाना
सुनि जहँ रुचि मैं हू मन ल्याऊ। प्रिय मैं पर औगुन नहिं पाऊ
ज्यौ तमौ दसा सुवहहु बनाई । लैहु धनुष सो भृकुटि चढ़ाई ।।
तुमहि निवार रंग गृह आनी । सयन छोड़ि बैठेहु चुपठानी ।।
हृदय लालसा कब प्रिय आवैं । कौन रीति सौं मोहि मनावै ।
रस निधान आवत गृह माही । देखि दूरिते मृदु मुसक्याही ।।
दो०-अनसीखे दृग लागि रिसि जुरत नहि हँस दैहि ।
तब उठाय प्रभु फूल सौ लाइ हृदय सौ लैहि ।।

मो मै प्रेम करत वे जैसे । करत होइ सब के प्रिय ऐसे ।।
सुभगा कहि तुम सौ किहि भागा । देखौ हम राघव अनुरागा
सिरस कुसुम केजीतन हारे । तते चरन अति मृदुल तुमारे ।।
आवत तुमहि लखे जब सोई । कठिन पुहुमि ते संकित होई ।।
पुनिस्वमंत तब विधि यह करही । दृष्टि ललित पदमह भरही
नील कंज पत्रन की श्रैनी । मनहुँ विछावत मग सुख दैनी ।।
तुम स्वाधीन भर्तिका अहऊ । लहत रहै रस जस जब चहऊ ।
दासहु इमिबस नहिं दृग दीनै । अर्ध कटाक्षन मैं जिमि कीने ।
दो०-सर्वस उन अर्पन करौ, चित तुम लीन चुराई ।
तौऊ तुम बिन भावत और न रंचहु सुहाई ।।
प्यार प्रेममद भो मृदु हासिनि । लिय बाँधि निजमय पातिनि
होत एक बन्धन यह दीना । सब अंग बाधत ह्वैन अधीना ।।
सहज अरुन पद जावक सोहै । जनु प्रिय रंग मन मोहै ।।
मनि मंजीर रतिन वरधारै । मनहुँ वसीकर मंत्र उचारै ।।
भरे अतन रस जंघ विराजै । स्तंभ कि पीन प्रेम गृह काजै ।।
लसै सिंह गुरु से कटिश्रौनी । त्रिवलि गौतमी सी छबि नौनी
सुरन सहित काँची तरमाहीं । पर्वस प्रियमन को अन्हवाही ।
कहु जौ नाभि कूप महआवत । बिचरमीन लौं कढ़न न भावत

।। श्रीसीतारामजी एक तत्व वर्णन ।।

लगे बिना मन को किहु भाता । होइन श्रेय कहैं श्रुतिज्ञाता ।।
दूथ बिन रमवौ बनहिन केहु । चिते द्वितिय होय अब मैंहु ।।
रमनि रुप अपुन ते होई । रमत भयौ अपुनुहू प्रभु सोई ।।

जल वीची लौ भिन्न जानौ। उभय विभाग प्रेम को मानौ ।।
तिन विश्वेस मध्य जो रागा। ताहि भक्ति भांषत बड़भागा ।।
तब जन तुम में द्वैतन माने। वेद कहै बुधहु सव जाने ।।
होइ रामते भिन्नन सीता। सिय ते भिन्नन राम प्रतीता ।।
दोनो नित्य दो रुपहि धारे। आहि येकही तत्व विचारे ।।
राम मन्त्र मेंथित बैदेही। सिय मन्त्र में राम सहेही ।।
वरन रुप जह राम बिहारी। सब्द रुप तह जनकदुलारी ।।
जहाँ शब्द बपु रामहिं माने। अर्थ रुपिनी तह सिय जाने ।।
जथवाग सिय होइ नव वानी। अर्थ रुप तब राम प्रमानी ।।
जल में लहर लहर में नीरा। त्यौ तुम प्रभु दुवभाव गंभीरा
दो०-सब हेतुन के हेत हुव, सब तत्वन के तत्व।
संतत गुन ते रुप ते, विलसै तव एकत्व ।।
जथा अयोध्या नित्यहौ कहै तथा मिथिलाहि।
सकल सगुन ऐश्वर्य सौ भेदवाहि नहि याहि ।।
कहँहु अयोध्या तुल्य तिमि मिथिला कौं परमान।
कौन देस किहि नागरी, कबते करहु बखान ।।
निमकुल भुपन की रजधानी। सुनत रहौ चितते कल्यानी ।।
कैसे तुल्य तीरथ माही। गनना भइस कहब हम पाही ।।
मिथिला नाम कौन विधिपावा। भौकिम महिमें अतुलमहाना
बोली चरनन के सिर नाई। कहाईती हम में निपुनाई ।।
।। सखि की वारता राजकुमार से ।।
आयेहते जब लगईत नाही। गौरववड़ौ कहौ किन माही ।।

रहै अवध मह सरयू तीरा । फिरवौ करे लिये सिसु भीरा ॥
यहि महि नैंतुमहि चढ़ाये । विदित जनक जामात कहाये ॥
पाई लोक सुन्दरी नृपबाला । भये सुविख्यात गुनित बिसाला
दो०-जन्मभूमि जह सिय की, महा सुषन के हेतु ।
सुनहु श्रवन पावन करन चितदै रघुकुल केतु ।
राज्य रतन राजन मह नामी । भये जनक ज्ञानी इहि स्वामी
जहा निमिवंश प्रकाशनवारी । दई भूमिने जिनहि कुमारी ॥
भागवान तुम दशरथ नन्दन । ताहि विवाह भये जगवंदन ॥
चिरते विदित पुरीं यह आगर । सिया जन्मते बहुत उजागर।
सो०-सिय को अराधन कीन महाराज मिथिलेशन ।
प्रगटी श्रीसिय सुवर दयेऊ, बनी रहै सदा बृद्धिकुल ।
पुरी कौशलानाथ तुम्हारी । कहत रहे सुभ जग नर नारी ।
जिहि सौं सुभ जौलौं नहिआई । तौलौ कहि वे मात्र कहाई ॥
अब सीता पद कमल समाना । परे उहाँ कल्यान निधाना ॥
निसिदिन सबहि मोद महबीतै । भई अधिक बैकुंठ पुरीतै ॥
जगमें गृह स्वामिनि को होई । जहाँ रहै तहँ शोभित होई ॥
मिलिबंधू रबिबंशिन जैसी । कौंने मिलहि सुलक्षन ऐसी ॥
जहा निमिकुल अंभोनिधि केरी । चन्द्रकला जगकरत उजेरी
सत्य कहौं रघुवंश प्रबीना । वंश तुम्हार अलंकृत कींना ॥
सींतहु कृपा सुधा बर्षाई । करकै धन्य संपन्न सुखदाई ॥
दो०-सुर पुर नरपुर नागपुर, राखै इहि कीं सब आस ।
पूर रहौ सब विश्व में, अतुलित रुचिर विलास ॥

दो०-ताहि निकासन काम किय, रोम पाटि रस दोण।
चिढ़त अमृत के कुँभ से, देखि उरज दुहुँ और ॥
सोहैं कल्प लतासी वाहै। देहि प्रियहि जो जो रस चाहै ॥
देखत कंबु कंठ त्रय रेखै। पाई त्रिपुर विभूति सू लेखै ॥
मुखवर सरद चन्द्र ते नीकौं। करै चकोर तुल्य मन पीकौं ॥
खंजन कंजन के मद गंजन। दृग तब अंजन जुत मनरंजन ॥
भृकुटि कनक लखि धनुष समाना। रीझहिं क्षत्रीवंस प्रधाना।
भाल भूमि सौभाग विसाला। चहै न ओट हौंन किहुकाला ॥
कृष्ण सुकेसिनि केस तुमारे। सदाचित्त आकर्षन वारे ॥
प्रियमन मृगहि विनोदन वानी। हासपासिसि करहु कल्यानी।
सकल अंग संगिनि तब साटी। अवगाहत सब रति परिपाटी।
विजय होइ तिहि भाग बड़ाई। रहत प्रसंसत नित रघुराई ॥
छ०-गुन लहिय प्रतिष्ठिता, तुम गुनन की सुनिधान हौ।
सब भाँति धर्म विधान पट, श्रीमान परम सुजान हौं।
जगलोकनाथ प्रिया न विन सौंभाग्य को अस पावहीं।
सुभ हेतु त्रयपुर सुन्दरी जहँ कीर्ति उत्तम गावहीं ॥
सो०-इमि सुभगादि प्रवीन, वरनत संभाषन करत।
रुचिर प्रवीन नवीन, वरनत सीता राम गुन ॥

॥ श्रीप्रिया प्रीतमजू को बारता ॥

भोग भवन बैठे इक काला। बोले सियसन राम कृपाला ॥
प्रिय अवध नायक पठवाये। हम तब रूप लोभ इत आये ॥
सखि मंडल जुत तुम सुप्रवीना। निनप्रति अकथनीय मुददीना

पुत्र कलत्र कुटुम्व समेता । निमि नृप प्यार करै पुनिएता ।।
ताहि प्रसंसन कौ मति नाही । मन अभिलाष न इत ते जाही ।
येहू पिता धर्म ते ख्याता । वे साक्षात जन्म के दाता ।।
मो ऊपरईश्वर सुबिचारी । मैं मुभ हित अनुसासन कारी ।।
तिन पद दरसनको अभिरामा । चितअकुलात रहत बसुजामा

दो०-जननी कौशिल्यादि मम, बातसल्य की गेह ।
तिनके अन्तहकरन कौ, सोखत होइ सनेह ।।

राजकाज मृगयादि विहारन । कौनहु भ्रत्यवर्ग हित कारन ।।
कबहु बिलम्ब मिलतमहँ होई । गनैकल्प समते छन सोई ।।
लिखी प्रीति पत्री जिमि आई । ते तुम कौ बसनेह सुनाई ।।
जद्यपि सुद्ध होइ सब माता । लौक विरुद्ध करै नहि ज्ञाता ।।
मैं जो आतमा राम अनूपा । जानै जोग कुशल निमिभूपा ।।
निर्मल बृत्ति सुध्पावत रहई । ब्रह्मानन्द अखंडित लहई ।।
निकट सुचक्षु नाम रमनी के । दैन चछु इन्द्रिहिं सुख नीके ।।
मोहि बुलावहि नित्य सुजाना अवलोकहिं प्रियप्रान समाना
मैं बिचार कीन सुन प्यारी । सादर निकट जाहु जिहिवारी ।
अवध गमन को विनय सुहाई । करब पिता को प्रेम सुनाई ।।
तुमहित लिखे पत्र वहूं आवहिं । भली होइ जौ संग पठावहिं ।

दो०-करि सम्मत इमि राम जव, गये दरस सुख दैन ।
थित ह्वै कछु प्रस्ताव सौ, कहे मनोहर वैन ।।

तात लिखी पत्री ते आई । करत भये बहुदिन पहुनाई ।।
मित्र बंधु सबहु हितकारी । हेरत आवन वाट तुम्हारी ।।

महाराज ते लै सुनि देशू । आबहुँ सानुज कौशल देशू ॥
तिहिते करिदायहिं पठवाइये । नहि वियोग चिंता चितलाइये
पुनि राउर इच्छा अनुसारा । रहिहैं मिलन होत बहुबारा ॥
सील भनित सुनि राघव केरी । उदित भये उत्तर कह हेरी ॥
ताही समय अवध पति पाँती । जो मन को अतिलगत सुहाती
आइ निकट सहचरिन हाथा । बाँचव लगैसु लै निमि नाथा ।
सो०-पत्र प्रसस्ति प्रकार, समुझि विविध आसय सहित ।
भरि आए तिहि बारि, प्रेम वारि वारिज नयन ॥
दो०-बोले राम कुमार प्रति, सुनहुँ वत्स सुखदान ।
तृप्ति लहैं तब दरसते, कहि यन ते मतिवान ॥
जथा पंक्ति रथ कौ तुम प्यारे । तथा सहज मुद करन हमारे।
उनसे भाग्यवान पर नाही । देखत रहहिं जो निकट सदाही।
यह हम कृपा निजहुँ की मानै । अहोभाग ये नैन सिरानै ॥
मन जों तुम यह रहत समाना । केवल सो जानत भगवाना ॥
यह जो पत्र अवधते आवा । ताहूं महँ तुम कहँ बुलवावा ॥
दरस तुम्हार सर्वहिं सुखदाता । तरसै कौसल्यादिक माता ।
हेज करहिं ऐसे प्रियमानी । होइ जथा सुरभी नवव्यानी ॥
बाहिर भीतर की अनुसासन । साधत हमकहँ क्षेम प्रकाशन
दो०-पठवावै हम अवधि कौ, दुतिय आगमन पत्र ।
सानुज भरत सुआवही, जैबौ सुखद एकत्र ॥
अपुन अवधपुर कौ जनि जाइय । सुखमें राजकिसोरन ल्याइय
प्रिय जजमान कहैं मुनि नाइक । करवाई मंगलविधि लाइक

असंख्यात तिहि संग सुहाई । लई राजलक्ष्मी मुनिराई ।।
गये अवध सुनि अवध भुवाला । आये अग्र लैन तिहि काला ।
करी भलें स्वागत विधिनाना । ब्रह्मनीक सब धर्म निधाना ।।
श्रीउपकरन अनंत सुभाता । पठयउ श्रीमिथिलापति ज्ञाता ।
देसन के अधिनाथ बिहारी । मोहित भये अभूत बिचारी ।।
तहँ बशिष्ठ अधिकार समेता । लै सुपत्र खोलेउ उपनेता ।।
करन मध्य करिकै बिस्तारा । बाँचेउ मनहु श्रवत मधुधारा ।।

सो०-कौशल राज समाज, सुनि इमि भयेउ प्रसन्नमन ।
मिथिला दरसन काज, भौ उछाह सबके बहुरि ।

दो०-नृपहूं मन चाहै चलन, सुमिरि जनक की प्रीति ।
थिरता ल्यावै ससुझि पुनि, देसकाल वयनीति ।।

वर उपदेस गुरुन दिय सोऊ । पठबहु भरत शत्रुहन दोऊ ।।
सावधान सब सचिव बुलाये । सेनृप सकल सेज सजि आये ।।
वहु कुल राजकुमार अनंता । गंधर्वन से बपु छविवंता ।।
कौशलेस ते लहि वड़माना । सजल धरे अतुलित श्रीमाना ।
गजहय रथ पत्तिन सोभाई । सुचि सेनय सब चमू दिखाई ।।
ध्वज पताक मंगलमय वाजिन । सोभितहोइ जितैतित राजिन
पितुवय सानुज भरत प्रवीने । भये मगन उछित दुति लीने ।
अंतहपुर महँ सुतन बुलावा । विधि पूरव प्रस्थान करावा ।।

दो०-लाये दधि अक्षत तिलक, पहिरे सुमनस दाम ।
सिंह पौर से बढ़त ही, लागे अति अभिराम ।।

वंदन करि बैठत भयउ, अपुन सारथी थान ।
हाँकत हय पुलकित बदन, करत चलेउ बतरान ।।
सिमिटिसिन्धुलौअगिनितवहिनी ।हुवक्रमतेमिथिलापथग्रहिनी
सुखहीं सुख करतहि निवासा । पहुँची शुभ दिन सहितहुलासा
सानुज लक्ष्मीनिधि अनुरागे । आये तहँ लेवै कहँ आगे ।।
बड़ शोभा तिहि समय सुदेखी । दृष्टि परहिं छत्रालि असेषी ।
बाद्य दुंदुभी प्रमुख सुहावन । दुहुतन बजहिं प्रमोद बढ़ावन ।।
मिलौ बडिन को चाहिये जैसे । मिले भरत लक्ष्मीनिधि ऐसे ।
भाषन करत सप्रेम सुजाना । गये लिवाय परम सुभथाना ।।
सबहि जथोचित वास करावा । मनरंजन साहित्य पठावा ।।
दो०-आये प्रमुदित भेट कहँ हालहु भूप विदेह ।
भरत निकट में सुमुख सौ,स्वागत भई सनेह ।
आये भले बिहँसि नृपभाषा । रही भूप दरसन अभिलाषा ।।
आवहिं कब हम उतनहिं जाइय । बड़े पुन्य सौ दरसन पाइय।
अपुन बृद्ध नव वय सब नारी । रहे भोगपुर की रखवारी ।।
हुव रामादि पुत्र जिनमाही । अव अप्रतीति करत भल नाही
इहि विधि प्रेम विनोद निहारी । भयौ सभा लोगन मुदभारी
गये बिदेह नेह महँ धामा । पहुँचे तबलग लखन श्रीरामा ।।
छं०—श्रीराम सानुज भरत सानुज कौ परस्पर भेटिये ।
आनन्द धन मैं बिरहभव संताप ततछन मेटिये ।।
सब अवध के समुदाय सो नितनिमि निकेतन जावहीं ।
विधि चार अमृत समान षटरस असन सुन्दर पावहीं ।

सो०-निपुन सुनयना रानि, वलि लेवै कर आरतिनि।
कबहू अपने पानि भोजन करवावै सरूचि ।।
दो०-सुभगा हँसि कहि सिद्धि सौ, आये भरत सुजान।
करत रही जिनकी सुरत, वातन में प्रियमान ।।
तिन सौ करन सुवाक बिलासा। सादर बुलवाये निज पासा।
नाना मुद स्वागत महदीना। बोली चंचल दृगन प्रवीना ।।
देखत तब भ्राता छबिवंता। राखै तहाँ तृप्त परंता ।।
राखहुँ तुमहुँ अतृप्ति अगारी। रुचै न पूरन होइ हमारी ।।
दरसनहू चिरलौ नहिं देहू। परदेसिन को कौन सनेहू ।।
भरत कहावै निपुन महाहीं। विमुख रहै तौ संसय नाहीं ।।
हम सनमुख लेहिं तुमारौ। करै नाम ते अर्थ न न्यारौ ।।
रस अधीस सासन निर्बहई। अनुभोगन में तुम कहँ चहई ।।
दो०-बहु विधि रसमय बलन वर, समय समय अनुसार।
कहत रहै प्रति मिलन महँ, लहत रहैं सुख सार ।।
निज प्रियानप्रतिकरहिंजोलीला। प्रगट सुहोन देहिं नहिसीला
रुप असीम सीम सौ सोहैं। सब जुवती गन के मन मोहै ।।
सुन्दर मास फालगुन पाई। अवलन हुवरस सौ प्रबलाई ।।
जेवत मैं गारी वहु गावै। नाना रंग बनाय भिजावै ।।
भरै रक्त चूरन की झोली। बाँधे फिरहिं खेलन कहँ टोली।
लपटी तनसारी रंग भीजी। प्रगटे दुति सु मदन की भीजी ।।
चहई सुकहि परम बाचालै। बंक चितनिवान सी घालै ।।
चारहुँ रघुनन्दन रस धामा। करै यथोचित पूरन कामा ।।

॥ छप्पय ॥

नखशिख भूषन फूले खड़े सनेह मे ।
फूलन खेल अनेक कला अमित तेहि खेल में ।
करि करि सकल विवेक हासकला युत खेलें ।
उड़ी अमित अतर अबीर प्रिया पिय के हाथ से ।
भिजि गयी अंग पुनि चीर अबरख उड़ी सुहावनी ।
पिचकारी रंग साज चहुदिशि सहचरी लिये ।
अरु दमकला अमित कमल मुखी के कर कमल ।
कहूअबरख की ढेर लिये प्रिया सब छबी भरी ।
भरी कुकुमा गुलाल लाल लिये मारत सकल ।
भरि भरि मूठी अबीर सिय लपेटत लाल मुख ।
परसत मंजु शरीर लाल लपटि सिय अंग में ।
पिचकारी चहुँओर छुटी लाल निदेश ते ।
दइ सकल रंगबोर खेल परसपर होय रस ।
रंग भरी होरी खेल लाल प्रिया एक मत भई ।
सहचरि सो करि मेल भूषन बसन उतार दई ।
पहिरे अनूठी चीर मनि भूषन अंग अंग में ।
प्रियन रंगे रघुबीर आय विराजे निकुंज में ।

दो०-सबके सब नातैं लगै, राघव मैं सबकाल ।
सब मै सब नातेन की, मान करै कृपाल ॥

क्षीर सिंधु में जिम श्रीसाथा । वास करहिं संतत श्रीनाथा ॥
जथा हिमालय में कल्यानी । मैं तुम युत निवसहु मुदसानी ॥

तथा राम लीने प्रिय सीता। वसे ससुर पुर आलय अतिप्रीता
तन सम्बध जिते जग आही। मुख्य सुतिया पुरुषतिन माही ॥
तिनके उभय पक्ष मह नाता। होत परस्पर अगनित भाता ॥
ताते प्रिय सब कहँ ससुरारी। प्रगट सनातन जह व्यवहारी।
दिधा रामलीला सुभकारी। इक वास्तविय द्वितीय व्यवहारी
समैं समैं बरतै प्रभु दोई। जाने जिनहि अनुग्रह होई ॥
दो०-मुदजु बहिरतर सुरत, लेति प्रिय के साथ।
अमित गुनौ तेहितै गनौ,तब दरसन ते नाथ।

॥ श्रीमिथिला जी की वर्णन ॥

सो०-सुमिरत मिथिला नाम, हटत अविधा कठकर।
भूमितिलक अभिराम,जहँ प्रगटि सिय लाड़िली।
ध्यान धरत मनमोद, कांचन वन कमला सरित।
नित्य विलास विनोद, भूमि सकलमणि कांचनी।
जहाँ बसते निमिवंश वर, सदा एकरस रूप।
उचित अवस्था देखिये, लीला कलित अनुप।
सीरध्वज नृपराज वर, जनकराय जेहि नाम।
भये बिदेही नेहवस, मुरति निरखत श्याम।
भक्ति रतन राग्य नुगा, रति वात्सल्य ललाम।
सम्प्रद ज्ञान सुबरन में, युत विराग छबिधाम।
मंच रंग यह रतन में, सोईहै निज रूप।
अपनो अपनो लखि परयो,प्रगट करयो जब भूप।
श्रीसीता हरी राघव रानी। बसे सुभक्त मिथिलापुर जानी।

करत प्रात मंगल तिहि ठामा। लैवै को दरदसन अभिरामा।
दो०-पुन्य कर्म ये तेनकौ, भव में जो फल होइ।
इमि मिथिला के दरसते, भक्तजन पावहि सोइ।
होइ इतै फल जो प्रिय सुलभ सकल सब कष्ट।
मिथिला सेवन तें फल पावहि सुलभ सपष्ट॥
यहिमिथिलाकौवास विसाला। बिना भाग नहिमिलतकृपाला
धन्य धन्य वे मनुज सुनीती। परम जत्न कर वसहि प्रतीती॥

मिथिला निवासिन के साथ लीला

दो०-रामहु लखि ललि ससुरपुर, सेवा प्रीति सुभाव।
भुले सुधि बुधि अवध की, मिथिलावास उराव॥
बालक तरुण बृद्धा नर नारी। निज निज गृहकाज बिसारी॥
औरन शिक्षा करहि सिहाई। यह छवि बिभव सुकृत तैपाई।
जहाँ कहु विहरत सुधि पावही। दरसन बड़े लाभ गुन आवही।
थिति करि लेहु हृदय दृग द्वारन। रक्षहुहर्षि पलक प्रतिहारन
विधि ने परम अनुग्रह कीन्हा। जन्म हमार इहाँ जो दीन्हा॥
षटऋतु भाँतिभाँतिकी लीला। जनकललि रघुवर सुखशीला
होबहितहँविविध भाँतिकेकेली। सहितसखिनअरुसियाअलबेली
नृत्यगान बहु सखिगन गावही। सेवहि सिया रमन मुद भरही
नृत्यकला बहु भाँतिन केरी। करि करि रिझवही सियवरहेरी
दो०-रघुनन्दन कबहु प्रेम वस, बनसी मधुर बजाय।
करहि गान अतिमधुर सुर, सुनि सबहि मोहाय।
कहैकोउ ये कमलातटबिहारी। एककहै एहैमिथिलासुखकारी

सो रस जानत मिथिलावासी। पागे रहत नित आनन्द रासी
दो०-यहि प्रकार मनमोद भारी, सिया दुलहा करहि बिहार।
रस बरषत नित जनकपुर, रसिकन सुख दतार ॥
यहि विधि प्रेम प्रमोद भरी, जात दिवस अरु रैन।
देखि युगल सुमाधुरी, बढ़त हृदय अति चैन ॥
सहित सुनैना तिरहुत राऊ। सेवहिं सियावर सुचि भाऊ ॥
जेहिविधिसुखिश्याम अरुश्यामा। सोई करहिनृपतनमनकामा
सिद्धि कुँवरीलक्ष्मीनिधिभावा। अमित अगाधअकथकरिगावा
कबहु कमला जलकरै बिहारा। कंचन विपिन रास बिसतारा
कबहुँ सिद्धि लै निजकर वीणा। गीत सुनावति प्रेम प्रवीना।
कबहुँ सासु ढ़िग ससु सकासा। बैठहि राम हृदय रसवासा ॥
सभा सदनकवहुबिमलातीरा। बिहरहिभ्रातनसहित रघुबीरा
कबहु श्यामाभाम संगखेलत खेला। सुन्दरभाव प्रेम हिय मेला
श्याम भाम दुनहुँ नृपवारे। इक एकन पर सब निज हारे ॥
सुनहि श्याम मुख सुन्दर गीता। बाद्य वजत उपजावत प्रीता
कबहुँ राम मुख सुन्दर गावन। चहत सुनन कुँअर मतिआयन
दो०-प्रेम विवश रसिकेश्वर, कर ले बीनान।
मोहन राग सुनावही, मोहत मन सुखदेन।
सुनत कुँअर होवहिं रस मंगना। प्रेम प्रवाह बढ़ै नित मंगना।
विहरहि कबहु रामवर वागा। सहित भ्रात मिथिलारसपागा

श्रीमिथिलाजी में राजकुमार के नाना विहार

कबहु झुलन कहुँ हरषि बसंता। उत्सव होत हेतु सियकंता ॥

षटऋतु उत्सव जे सुभगाये। मिथिला होवै परम सुहाये ।।
परमैं कान्तिक सुन्दर सेवा। प्रीति सने कर सखिन सुधेवा ।।
मिथिलावस सिय दुलह उदारा। करत मनोहर चरितअपारा
कुँअरि संग रघुवर रससाने। रहहिं प्रमुदित सुखहिं समाने।
कुँअर राम की प्रीति सुपेखी। जनकलली हिय हर्ष बिशेखी।
अपनेहु घर अति भैया नेहु। भाभी मातु पिता रस गेहु ।।
देखि सनी आनंद सुरूपा। रहति मंगन मनभाव अनूपा ।।
लखि लखि दुलह रुप हरषती। रहति रसीं रस पुलकितछाती
यहि प्रकार सिय रघुवर रामा। मिथिलावास करै सुखधामा

दो०-अकथअगाध अगम्यवर,चरित सुनहि पूरे मनकामा।
राम कृपा कोउ रसिक वर, अनुभव कर हियधामा।
यहि प्रकार सिय रामनित, मिथिला करत बिहार।
निरखि निरखि मैंथिल सदा, मनमें मोद अपार।

जे निमिवंशी सहज उदारा। मंत्रीकुल गुरु विप्र सुदारा ।।
प्रेम विवस चह रामहि लावन। भवन अपन करन सुपावन।
सादर जाहिं राम तिन धामा। करहिंग्रहण शुचिभाव ललामा
देखि देखि मिथिला नारि नर। शोचत इते अइहै सियावर ।।
कबहुँ लालसा हमरिहु पुरी। कहत न बनै भाव हिय पुरी ।।
सिया दुलह गरुत लखि लोगु। कहि न सकति आवन योगु ।।
लखि सतभाव एक दिन रामा। धारे अमित रूप अभिरामा।
एकहि साथ गये सब केरे। लखन काहु मर्म हिय हेरे ।।

दो०-मन आशा पुरित किये, दिय अमित सुख जाय ।
भाव ग्रहन सिय नाथकरि, आपन लियो बनाय ।
मिथिला बिहरहि राम कृपाला । प्रेम विवशभक्तनप्रतिपाला
मिथिला भाग्यबिभवसुखसाजा।कहि न सकहि वणिअहिराजा
मानत जाहि राम ससुरारी । नित्या गिनत नैहर सिय प्यारी
मिथिला सकल प्राण समप्यारे । सिया दुलह कहँ करे सुखारे।
रामहु पगे जासु वर प्रीति । छन वियोग नहि सहै अजिती ।।

।। समाप्त ।।

❁ श्रीमिथिला विलास ❁

।। सवैया ।।

मिथिलापुर ते चहुँ फेर लसै,
षट् कोस पै रङ्ग उद्यान सोहाई ।
फाटिक भीति बनी चहुँ फेर में,
कूट कि राज रही सम छाई ।।
द्वार कपाट चहूँ दिसि राजत,
तामधि वन चौबीस सुभाई ।
पूर्व दिसा क्रम ते लखु सो सब,
सूरकिशोर सुचित्त चढ़ाई ।।
सन्तान पटीर अशोक मालूर,
रसाल उद्यान पुन्नाग बने हैं ।
प्लक्ष वृन्दावन अर्जुन विल्व,
कदम्ब सुरम्य पलाश घने हैं ।।

पारिजात श्रृंगार सुमालति,
केतकि मधु माध्वीक गने हैं।
सूरकिशोर तमाल सुकञ्चन,
त्यौं कचनार सुहात मने हैं॥
पिप्पल जम्बु तथा वट को वन,
चौविसहू में महाछबि छाजी।
क्षमा रङ्ग की रचना मनि मण्डित
मञ्जु लतान की कुँज सुभ्राजी॥
वापी सरोवर कंज विकासित,
वारि सुधा इव मिष्ट सुसाजी।
फूलि रहे कुमुदालि अनेकन,
रङ्ग के सूरकिशोर सुराजी॥
मत्त द्विरेफ सुगूंजत तापै,
अनेक विहंग सुकूजत सोहैं।
जाति अनेक लगे तरु सुन्दर,
रङ्ग अनेक की पाँति विमोहैं॥
ना अति ह्रस्व न दीरघ हैं सम,
सोहत निस्तल छत्र समोहै।
नव तरु पत्र सुकोमल सूर,
किशोर लसै फल भार झुको हैं॥
वृक्ष अलौकिक कञ्चन के,
सम नीलमनी सम पत्र लस्यौ हैं।

फूलि रहे फटिकेन्द्र मनीवर,
सोहत गुच्छन स्वच्छ गस्यो हैं।
विद्रुम के सम लागि रहे फल,
चन्द्रमनी वरवेदि खच्यो हैं॥
पिरोज मनि तकि यौं पर सूर,
किशोर सुकेकिन पंक्ति नच्यो हैं॥
विद्रुम के सम सोहत कोऊ,
चिन्तामनि फूल सुमुक्तनतूले।
वायुमनी सम कोऊ हरे,
दति श्वेत मनी फल फूल अमूले।
कोऊ पिरोज से नील मनी,
फल पंकज रागमनी गुछ फूले।
धूम्रमनी सम पंक्ति लसै कोउ,
सूरकिशोर मनी फल फूले॥
चन्द्रमनी सम दीपत हैं कोउ,
शक्र मनी फल फूल सुदीपैं।
भानुमनी सम कोउ प्रकासत,
ज्वालमनी सम कोउ समीपैं॥
कौस्तुभ से कोउ दीपन हैं तरु,
चिन्तामनी वसु कोउ लसीपैं।
कोउ लसे मनि मानहुँ गारुड़,
सूरकिशोर सुभानु सजींपै॥

कोउ बसन्त मनी कोउ रत्न से,
त्यों नभतार से राजत हैं।
मेघमनी सम कोउ हैं श्यामल,
दाममनी फल भ्राजत हैं॥
चारन मुक्ति से कोउ मनोहर,
कोलमनी कोउ साजत हैं।
पाटल रत्न से कोउ प्रकासत,
सूरकिशोर सुभ्राजत हैं॥
लाल सुमेचक मिश्रित रत्न से,
कोउ सुमानिक से अति रूरे।
पाण्डुर रत्न से कोउ विराजत,
कोउ कपीशमनी छबि पूरे॥
अद्भुत कोउ सुअम्बर रत्न से,
तार से सम्पति अंस बहूरे।
विज्जुमनी सम कोउ लसैं तरु,
सूरकिशोर कोऊ सम सूरे॥
कोउ विचित्रमनी इव सोहत,
वारिमनी इव कोउ सुसोहैं।
हैं यहि भाँति अनेकन रंग,
मनी सम बृक्ष कही सक को हैं॥
लता बहु जाति अनेकन रंग,
सुमुक्तमनी फल फूल विमोहैं।

बृक्षन बृक्ष प्रतान वितान से, सूरकिशोर छबी चित पोहैं ।
पुंजन कुँज अली गन गुंज, भङ्कार दिशान सुपूरि रही हैं ।।
चातक, मोर,चकोर, कपोत,पिकादि विहंग की खान लही हैं ।
रँग विरँग मही परकास, अनेकन रत्न सुराली सही हैं ।
बापिका, कुण्ड, कसार प्रही बहु, सूरकिशोर सुघाट चही हैं ।।
कुँजमनी मय बने मृदु बीचहिं, बीच लसन्त अनन्त जगो हैं ।
कानन काँति अभूत विलोकि कै, मानहु सूर अनन्त उगो हैं ।
रत्न अनेकन वेदि बनी, तिमिकारी अनेकन रंग लगो हैं ।
अकार अनेक बने तेहि सूरकिशोर घनि प्रभा चौंध दृगो हैं ।
शीतल मन्द सुगन्ध वयार, अनंग सुज्वाल बढ़ावन हारी ।
बसन्त नरेश विराजत हैं तहाँ, कानन राज विहंग प्रजारी ।।
हर्म्य चतुर्विध चारु सुकुँज, लतान प्रतान वितान अपारी ।
रत्न वितर्दि सपीठ बने जनु, सूरकिशोर घने रंग न्यारी ।।
रंग विरंग के बृक्ष लसै तरु, के तल पुष्प पराग मृदू हैं ।
मानो विछौने सुवीछि रहे वहु, बृक्षन छाहँ सुछत्र यजू हैं ।।
चीड़ तरुगन चामर से वरु, रम्भ सुरी जनु खासु लसू हैं ।
बृक्ष अनेक सजे जनु फौज से, सूरकिशोर वै भीर समूहैं ।।
कुंजमनी मय लता द्रुम गुल्मक, संकुलता तल वेदि बनी हैं ।
त्यों हि द्विरेफन-माल विगुंजत,मानो विपंचि की खानि झनीहैं
नृत्यत मोर सुकोकिल गावत, झिल्लिन खानि नुपूर ध्वनी हैं।
पारावत मानो मृदङ्ग बजावत, सूरकिशोर अनन्द घनी हैं ।।
रंग विपीन के मध्य विराजत, अष्ट गिरी दिशि चारहु माँही।

रम्य पटीर विपीन विराजत, विद्रुम शैल उमंग धिकाहीं ॥
वैडूर्य गिरी पुन्नाग उद्यान में, त्यों पुखराज छबी सरमाहीं ।
विद्रुम अरु बैडूर्य विनिर्मित, सूरकिशोर ये प्राचि दिशाहीं ।
मध्य बृन्दावन सोह निलाचल,बन्न कदम्ब में श्रीरजताचल ।
नीलमनी अरु रूप विनिर्मित,याम्य दिशा युग सोहत भा भल।
नैपत्थ्याचल नैपत्थ्य विपीन में,बसन्त गिरी जु मधूवन भाकल
पश्चिम नील रु पीत सुरत्नन, निर्मित सूरकिशोर उजासल ।
कञ्चन कानन मध्य सजीवन, शैल सुहावन चारु लसो हैं ।
पद्म विपीनमें मध्य पद्माचल,उदीचि दिशा अतिज्योति जगोहैं
खच्यो है चन्द्रोपल शैल सजीवन, पंकज राग पद्माचल जो हैं।
सूरकिशोर उजोर चहूँ दिशि, अष्टहु अद्रि के कूट उचो हैं ।
चारो दिशा महँ आठहु पर्वत, तुंग छबी अति छाय रही हैं ।
हर्म्य अपार बने मनि खंचित, गोपुर कुंजन ओप लही हैं ॥
रङ्ग विरंग मनी गन आकर, नीर सुनिर्झर घोष सही हैं ।
कन्दर, खोह, गुहा सुविराजत, सूरकिशोर तम जोह नहीं हैं।
वारि के मध्य बने गृह संकुल, हाटक खंचित वारि मनी हैं।
रत्न सोपान तरंगिनि भ्राजत, हर्म्य नगान्तर रम्य बनी हैं।
सूरकिशोर पिधान भा सोहत, मोहत जोहत दीन मनी हैं ।
भूधर रत्न में सौरभ छूट, मयूषन की तर तेज घनी हैं ॥
गुल्म लता, तरु जाति वहू, संकीर्न लगे सम पंक्ति लसी हैं ।
सदा त्रैसम्पति मुक्त मनी मय, डार सबै परसै जु मले हैं ।
नीलमनी सम गुच्छ लसैं, वैडूर्य प्रवाल कहूँ गुछली हैं ।

अनेकन रङ्ग लसैं यहि भाँति,
सुहावन सूरकिशोर अनी है ॥
रङ्ग विरंग विहंग कुरंगम,
भूषित अंग सुरंग करैं ।
दौरत हैं सुनि शव्द अतंक,
कला एक खान दिशान भरैं ॥
यूथ अनेकन रंग शाखामृग,
श्वेत, सुलाल, असीत हरैं ।
खात सबैं फल मिष्ट सुधा सम,
मोदमें सूरकिशोर परैं ॥
रङ्ग विपीन में राजत हैं बहु,
संकुल देव रु देवि अनेका ।
रत्न खचीत बने वहु देवल,
चित्रित जाल सचित्र वनेका ॥
मन्दिर खास तहाँ रंगदेविको,
सेवैं सदा सुरजा अहि जेका ।
सूरकिशोर सियापद कंज कि,
होन चहैं सब चेरि असेका ॥

॥ कवित्त ॥

बद्रीवन मध्य राजैं शिलानाथ महादेव,
सेवैं सुर, गन्धर्व, किन्नर सुरेस के ।
विल्ववन मध्य वसैं जहाँ कल्यानेश्वर जू,
करम उद्यान माँहि गिरिजा विशेष के ॥

ललित नैपथ्य वन बसैं जालेश्वर शिव,
युग्म पत्र मध्य वन निबसैं क्षीरेश के।
सोहत अशोक बन मध्य नरसिंह महा,
ते किशोरसूर पूज्य मैथिल नरेश के॥

॥ सवैया ॥

मिथिला पुर ते षट् कोस लसै उत-
राधिप और जहाँ वनु है।
शिवके करको नृपके पण को,
प्रभुके करको परस्यौ धनु है॥
कलि काल ग्रसे धसिहैं धरनी,
निरखो अबहीं जिनको पनु है।
कह सूरकिशोर लगैं कछु ऐसो,
मनो सियारामहि को तनु है॥
पाप—अगार अपार भरे,
नरजन्म अनेकन संचित हारी।
सुकृत भाजन होत तेही छिन,
जेहि मिथिला–सर नैन निहारी॥
मज्जन, पान रु वास करे,
परदक्षिन कै नित आनन्द भारी।
व्योम के वासी प्रशंसा करैं,
तेहि सूरकिशोर य भाग्य अपारी॥

रङ्ग उद्यान महाछबि सागर,
वरणत पार लहै नहिं बानी ।
शेष, महेश, गणेश, पुरन्दर,
लोकप विष्णु, विधी मुनि ज्ञानी ॥
श्रीमिथिलामँह वास करैं सब,
अर्चन, बन्दन ध्यानहि ठानी ।
सूरकिशोर मुमुक्षुन के हित,
ध्यान के हेतु कछूक बखानी ॥
फाटिक निर्मित दुर्ग सुदुर्गम,
नीलमनी मय दूसर भ्राजैं ।
तीसर बज्रमनी मय अंचित,
वंसछदा वर तुर्य विराजैं ॥
पंचम कंचन, षष्ट प्रवाल सु,
सप्तम मानिक मय दुति साजै ।
सूरकिशोर ता मध्य विराजत,
भानुमनी नृप दुर्ग सुराजै ॥
दुर्गम दुर्ग प्रती परिखा बनि,
रत्नविनिर्मित घाट निसेनी ।
श्री कमला जल पूरित तामधि,
मन्द प्रवाह गँभीर लसेनी ॥
फूलि रहे जलजात सुगंजत,
कूजत हैं अलि कुक्कुट-श्रेनी ।

शीतल मन्द सुगन्ध बयार सु,
सूरकिशोर वहै सुख देनी ॥
सारीफलाकृति अन्दर आपन,
राजि सराफ वनीक वटूरी।
कोटिन इन्द्रन से व्यवसाइ,
वसे मधि कोश महारय भूरी ॥
वर्ण सुचार वसै चहु में,
निवसै सुप्रजा सर दुर्गलों रूरी।
षष्ठम में नृप वास करै वहु,
देश के सूरकिशोर सुजूरी ॥

॥ कवित्त ॥

राजदुर्ग मध्य लसै, कृत्रिम उद्यान चारु,
सफल सफूल पत्र, मृदुल सुस्निग्ध हैं।
तहाँ शैल कृत्रिम हैं, प्राच्य क्रम ते विलोकि,
शृंगाराद्रि औ चित्राद्रि, मध्वाद्री अमीध हैं ॥
चन्द्राद्री सिमन्ताद्री औ, प्रवराद्रि सुवर्णाद्रि,
हिमाद्रि ये अष्ठम, उतंग भासनीध हैं।
स्वच्छा चित्रा रंगा, गन्धा सुधारत्ना,
लीला हिमा सूर, किशोर मनीध हैं ॥

॥ सवैया ॥

सप्त सुकक्ष विनिर्मित रत्नन, मध्य विभाग विशाल सुहाई।
हर्म्य मनोहर दोइ तहाँ लस, कुम्भ ध्वजा वहु रङ्गन लाई।
प्राचि दिशा सिरकेतु विराजत, पश्चिम ओर कुशध्वज गाई।

सूरकिशोर जे दर्श करैं अघ, जन्म अनेकन संचित जाई ॥
क०—निमि वंशी महराज अमीध ह्लस्व रोमाजु,
घरनी है तीनि ताके वेदन बखानी हैं।
जेठी शुभजाया जेहि पुत्र दुइ किशोरसूर,
सीरकेतु कुशकेतु लोक सब जानी है ॥
घरनी है दूजी सदा ताके शत्रुजीत यश-
शाली अरिमर्दन रिपुतापन आनी है ॥
तीजी रानी सर्वदा जू ताके महिमङ्गल औ,
वलाकर तेजशाली महावीर्य मानी है ॥

॥ सवैया ॥

श्रीसिरकेतु के भौन के दक्षिण, मन्दिर एक विशाल विराजै।
चौकन चौक प्रती चहुँ चौघड़ि, भेरी सनाई मृदङ्ग सुबाजै।
कोटिन रक्षक वीर लसैं तहँ, कञ्चन दण्ड लिये कर भ्राजै।
सूरकिशोर तहाँ शत्रुजीत जू, राजत सम्पति-सिन्धु अपाजै॥
फाटिक विद्रुम मानिक मरकत, वज्र सिमन्त पिरोज मनी है
ताकर निर्मित कक्ष सुसप्तम, सौव अनेकन चित्रबनी हैं ॥
मध्य विभाग बने वसु हर्म्यं, सुगोख झरोख वितान तनी है।
भूमि विचित्र सुमध्य मनोहर, मण्डप सूर किशोर भनी है।
आठहु मौन के मध्य विराजत, भू अविकार विशाल सुहाई।
फाटिक सेवित भूमि मनोहर, मध्य में मण्डप नाह अथाई ॥
रंग विरंग पिधान वितान, सुयूप-अली नवरङ्ग निकाई।
सूरकिशोर अभूत बने सब, अंग खचे नव रतनन भाई ॥

पूरब सौध बने युग सुन्दर, कञ्चन विद्रुम चारु लसो है।
शत्रु सुजीत तहां नृप राजत, त्यों यशशालि तहाँ निवसों है।
दक्षिन भानुमनी युग मन्दिर, जाहि निहारिकै भानु विमोहै।
सूर किशोर तहां अरिमर्दन, श्री रिपुतापन जू विलसों हैं ।।
पश्चिम फाटिक हेम विनिर्मित, थात वितान पिधान तने।
महिमंगल और वलाकर जू, सु तहां निवसै सुख-सिन्धु घने।
उत्तर कौस्तुभ रुक्म सुमन्दिर, भास महा सब भांति बने।
तेज सुशालि लसै बसु बन्धु, महावल सूरकिशोर भने ।।
श्रीसिरकेतु के भौन ते पश्चिम,साल अगार सु उच्च विराजै।
कक्ष विशाल सुसात लसै तेहि, चिन्तामनी खचि भूमि सुभ्राजै
गोख झरोख की राजि रही लसि, द्वारन कुम्भ ध्वजा बहुराजै
लक्ष्मीनिधि को वर बास मनोहर, राजत सूरकिशोर तहां जै
सीरध्वज मन्दिर उत्तर के दिशि, मन्दिर एक विचित्र विराजै
गोपुर गोपुर चौघड़ि बाजत, शृंगन में रवि-चन्द्र सु भ्राजै ।।
छत्र कँगूरन पै सुविहँगम, बात—प्रसंग सुगुञ्जत राजै।
हय गज यान पदाति हैं संकुल, सूरकिशोर महा धन साजै ।।
चन्द्रमनी बैडूर्य पिरोज रु, कौस्तुभ कंचन जू प्रवरा हैं।
सिन्धु सुकक्ष मनोहर निर्मित, हर्म्य सुमण्डप द्वारि वरा है ।।
शालिध्वजा शुभ वास तहां तिन,शीलवती तिय कीर्ति वरा हैं
तासु सुता प्रिय चन्द्रकला, सुछवी निधि सूरकिशोर सरा हैं ।।
सौध विशाल सुपूर्व दिशा इक, सप्त सुकक्ष सुरंग मनी हैं।
खण्ड बने बहु रङ्ग विचित्र, सुकृत्रिम वृक्षलता कमनी हैं ।।

मध्य सुचौक विशाल खची मनि, मध्य स्यमन्त की वेदि बनीहैं
तापर शंभु-कोदण्ड विराजत, सूरकिशोर प्रभा अवनी हैं ।।
अग्नि दिशा शतानन्द विराजत, नैर्ऋत कोण सुहर्म्य सुहावै ।
वायु दिशा वसु मन्त्रिन के गृह, देवन थान इशान सुभावै ।।
रत्न अनेकन कञ्चन मन्दिर, हैं सर-वापी प्रभा अति छावै ।
सूरकिशोर ये मुख्य प्रवान हैं, देवल संहिता में सब गावै ।
श्रीमिथिला पूरब के दिशि, वेग प्रवाह वही कमला हैं ।
रत्नन घाट विचित्र सुवैठक, तीरन सद्मन की सगला हैं ।।
मुनि अरु सिद्ध तहां वहु योगि, वसै समधी तप, योग रला हैं ।
वर्ण सुचारि तहां नर, मज्जत, सूरकिशोर सुमंजु जला हैं ।।
प्रेम की वारि सिया दृग ते चलि, अम्भ-प्रवाह सोई महि चारो
मंजुलता विधु-अंशुहि निन्दत, त्यों दर कुन्द हिमोपल सारो ।
मिष्ट सुधा इव स्वच्छ समुक्त से, पद्म प्रफुल्लित भौर गुजारो
पुण्य सरीन सोई कमला सिधि, सूरकिशोर श्रुती वद सारो ।।
श्री मिथिला पुर मन्दिर-मन्दिर, श्रीकमला बहु धार वही है ।
द्वारन पै फुलवाई लसै कहुं, त्यों सर वापी सुकुण्ड लही हैं ।।
ऊर्ध्वकला वल ताहुं चटै जल, भीतर चौक सुचारु चही है ।
श्री कमला विन नाहिं कहूं जल, देखिय सूरकिशोर सही है ।।

दूलह श्रीरघुवंश–विभूषन,
दुलहिन श्री मिथिलेश लली है ।
कञ्चन मौर सुचारु लसै सिर,
खचै मनि मुक्त सुज्योति रली है ।।

कारे घने घुंघुराले लसे कच,
श्रुति कुण्डल तम–तोम दली है।
राजत हैं मनि मण्डप में दोउ,
सूरकिशोर लखि जात बली है॥
नृप के गृह बाल–विहार करै,
सियकी पद रेनु जहां लहिये।
मुनि बृन्द उपासक राम विवाह,
सोई नित ठौर हिये गहिये॥
कह सूरकिशोर विचारि यही,
हिम–आतप औ वरसो सहिये।
चुरवो चबिकै फलवो भखिकै,
मिथिला महँ बांधि कुटी रहिये॥
पुरातन पूरण पुण्य सुथान,
पुरी सोइ वेद पुराण विशेखी।
सुर ग्रुनि संगम साठि हजार,
अस्नान किये फल वास निमेखी॥
उद्योतन प्रेमकी सूरकिशोर,
उपासक सन्तन की भुवि पेखी।
कहा बहु काल जिये जगमें,
धिग जीवन जो मिथिला नहि देखी॥
निवही तिहुँ लोक में सूरकिशोर,
विजय रनमें निमि के कुल की।

यश जोइ लग्यो सन्दीप लौ कान,
कथा कमनीय रसातल की ॥
मिथिला वसि राम सहाय चहै,
तौ उपासक कौन कहै भल की ।
जिनके कुल वीच सपूत नहीं,
करैं आस दमादन के वल की ॥
उभै कुल दीपति भामिनि जानकि,
लोकहुँ वेद कि लोकन मेटी ।
भरी सुख संपति औधपुरी,
रजधानी सबै लछनासों लपेटी ॥
करैं मिथिला चित सूरकिशोर,
सनेह की वात न जात समेटी ।
कोटिन सुख जो होई ससुरारि,
तो बाप को भौन न भूलत वेटी ॥
सप्त सहस्त्र किये बध भूसुर,
भ्रून हत्या शत लक्ष विशेखी ॥
धेनु किये बध पान किये मद,
और अनेकन को कर लेखी ॥
जन्म अनेक दहैं अघ संचित,
जो मिथिला कहुं नैनन देखी ।
सूरकिशोर ते पुण्य के सागर,
जे मिथिला कर वास निमेखी ॥

मिथिला सर्वतः पुण्या सर्वाकारेण शोभिता ।
तस्यां निवासिनां पुण्यं मया वक्तुं न शक्यते ।
धन्यास्ते ये प्रयत्नेन निवसन्ति महामुने ।
मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।
देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते ।।

।। सवैया ।।

कलि काल बड़ो दल साजि चढ़ो,
सब वेद पुरान भये शिथिला ।
साधु कि ठौर असाधु बसे,
सुथिला जेहि ठौर भये कथिला ।।
वरणाश्रम धर्म विचार गये,
द्विज, तीरथ देव भये निथिला ।
रहि और न ठौर कछू जग में,
तब सूरकिशोर तकी मिथिला ।।
मिथिला कलि-काल ग्रसी सगरी,
तब जानकि जू झट दै उघरी ।
सत्संग विलास कथा चरचा,
नित आनन्द मंगल होत झरी ।।
अन सों धन सीं पट-भूषन सों,
सुख-सम्पति मन्दिर आनि धरी ।
कह सूरकिशोर कृपा सिय की,
इक वारहिं बात सबै सुधरी ।।

॥ कवित्त ॥

दुस्तर संसार रोग जन्म औ मरन सोग,
नाना तर दु:ख भोग दीन अति जीय है।
श्रुतिहू पुरानहू में कही सोइ छूटबे की,
अमित उपायन को कलि सों अहीय हैं॥
मति विकलानी तहाँ और न उपाय आनी,
सद् ग्रन्थ भनी सो उपाय इकबीय है।
सब आश परिहरि मिथिला में वास करि,
सन्तत किशोरसूर भजियत सीय हैं॥

❀ श्रीजानकी मधुर षोडशी ❀

चिकुरा: कुटिला: सघना मधुरा: श्रवणे मधुरे मणिपुष्पयुते।
अलिकं मधुरं शशिविन्दुयुतं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम्॥
भृकुटी मधुरे स्मरचापनिभे पृथुनेत्रयुगं सदयं मधुरम्।
सुनसं शुकतुण्डपरं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम्॥
ललितं मुकुर--प्रतिमं मधुरं सुकपोलयुगं दशना मधुरा:।
अधरो मधुरश्चिबुकं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम्॥
कलकम्बुगलो मधुरोऽसयुगं मधुरं करपद्मयुगं मधुरम्।
करजं मधुरं हृदयं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम्॥
उदरं मधुरं त्रिवली मधुरा मधुरा सुकटी रशनोल्लसिता।
मधुरे जघने घुटिके मधुरे मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम्॥
चरणाम्बुरुहं युगलं मधुरं शुकवृन्दगतं प्रपदं मधुरम्।
पदजं तिमिरैकहरं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम्॥

विमलं मृदुलं वसनं मधुरं मधुरं मधुरं सकलाभरणम् ।
कमनं शिशु–संहननं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
मधुरं मधुरं गमनं मधुरं मधुरं मधुरम् स्खलनं मधुरम् ।
मधुरम् भ्रमणं कलनं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।
अयनं मधुरं चयनं मधुरं शयनं मधुरं श्रयणं मधुरम् ।
अशनं मधुरं हसनं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
स्वनितं मधुरं श्वसितं मधुरं विहितं मधुरं निहितं मधुरम् ।
प्रथितं मधुरं क्वणितं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
मृगितं मधुरम् विदितं मधुरम् गलितं मधुरम् वलितं मधुरम् ।
श्रुतिगं मधुरम् मुखगं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
मधुरं मधुरम् चरितं मधुरम् मधुरम् मधुरम् भणितं मधुरम् ।
मधुरं मधुरं मिलनं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
श्रवणं मधुरं स्मरणं मधुरं कथनं मधुरं मननं मधुरम् ।
वरणं मधुरं भरणं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
प्रणता मधुराः प्रणतिर्मधुरा प्रणयो मधुरः करुणा मधुरा ।
सरणिर्मधुरा ग्रहणं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
निगमो मधुरः प्रकृतिर्मधुरा जयनं मधुरं रटनं मधुरम् ।
महितं मधुरं रसितं मधुरम् मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
जनको मधुरो जननी मधुरा मधुरा अनुजा अनुगा मधुराः ।
सुकुलं मधुरं नगरं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।

।। कवित्त ।।

देश विदेश अनुप पूर्व उत्तर दिशि तिरहुति ।
रसा ऊर्वराभूमि सकल सम्पत्ति बस वुती ।।
भूमि भाल जियजानु तिलक रचना मिथिला है ।
वर्णत महिमा जासु शेष शारद शिथिला है ।।

देश सुहावन पावन वेद बखानिय ।
भूमि तिलक सम तिरहुति त्रिभुवन जानिय ।।
जगत जलधि तिरहुति कमल, जनकनगर मकरंद ।
प्रेमलता सिय गन्ध शुचि, भ्रमर सु रघुकुल चन्द ।।
तहँ बस नगर जनकपुर परम उजागर ।
कहिसक एक सीता लच्छि जहँ प्रगटी सुखसागर ।।
जग में तीरथधाम बहु अवध समान न एक ।
मिथिला सरिस न अवध सो जानहिं विमल विवेक ।।
जानहि विमल विवेक यहाँ नहिं हठ के कामा ।

परब्रह्म श्रीराम भये लखि चकित ललामा ।।
सिय विभूति ऐश्वर्य, अकथ गुण महिमा जगमें ।
'प्रेमलता' यह रहस गुप्त अति प्रगट न जगमें ।।
मिथिलासी मिथिला सियसी सिय राम से कहते हैं ।
समता जोगन अपरदेव त्रय जिन्हकी पदरज चहते हैं ।।
नमो नमो श्रीजानकी, नमो जनकपुर धाम ।
धनुष तोड़ि दुलहा बने, जहाँ परात्पर राम ।।

मेरे मिथिला देश में धारयो दुलह वेष ।
याते यहि उपासना, चाहिए हमें हमेश ।।
श्रीमिथिला महिमा अकल, निगमा गमहुं न अन्त ।
सो मैं वरणौ कवन विधि, वरणि न सकै अनन्त ।।
दो०-मिथिला मंगल मोदप्रद, नव दुलह चितचोर ।
जनकदुलारी सहित नित, राजत अवध किशोर ।।
धन्य महल सियालाल की, कनकभवन रसधाम ।
विरहत सिय रघुलाल जहाँ, संग अमितवर वाम ।।
सो०-को कहि सकहि प्रभाव, शोभा सीता महल की ।
सुखमा अवधि स्वभाव, सियालाल विलसत जहाँ ।।
अमित महल आदर्शमणी, रचित अली जहाँ सोह ।
रघुवर नित्य विलाश सिय, लखि रतिमन मथमोह ।।
कांचन वन विपिन चरित्र शुभ, सुखप्रद नित्य नवीन ।
सजहि विमल अलिगन नव रसिकन मन सुमीन ।।
चरित विमल निमिवंश वर, पुरी विपिन वर आल ।
विहरत नित्य अखंड जहाँ, रसिक सियावर लाल ।।

।। श्री ह्रस्वरोम महाराज जी का विवाह ।।

वारहलाख्ये कौवेर्य्यां देशे वृन्दारको नृपः ।
वंश्योऽर्क भास्वरस्तस्य जाज्याया वल्लभोऽभवत् ।।
वलायतवलोन्नाथौ तस्य पुत्रौ बभूवतुः ।
शुभजायाऽभवत्पुत्री ह्रस्वरोम्णे तु साऽर्पिता ।।

पूर्व-उत्तर कोणमें बारहल नामके देशमें एक श्रीवृन्दारकजी नाम के राजा हुये हैं, उनके वंश में श्रीअर्कभास्वर महाराज हुये, जिनकी महारानी श्रीजाज्याजी हुई और उनके श्रीवलायतजी श्रीपलोन्नायजी ये दो पुत्र और श्रीशुभजाया नामकी पुत्री हुई, जो श्रीह्रस्वरोमा महाराज को बिवाही गयीं।

तस्याः पुत्रौ महाभागौ सीरध्वजकुशध्वजौ।
पौत्र्यश्चरूपशालिन्यो भूमिजाद्या मनोहराः॥

उन्हीं श्रीशुभजाया महारानी के श्रीसीरध्वज महाराज, श्रीकुशध्वज महाराज ये दो पुत्र हुये श्रीकिशोरीजी आदि मनोहर परम रूपवती पुत्रों की पुत्रियाँ हुई।

पूर्वदक्षिणके कोणे विकाशाया महीपतेः।
श्रीभूरिमेधसः पुत्रौ सुमालः कुण्डलस्तथा॥

पूर्व और दक्षिण के कोण में एक विकाशा नाम की पुरी थी वहाँ के राजा श्रीभूरिमेधा महाराज हुये, उनके श्रीसुमालजी व श्रीकुण्डलजी नाम के दो पुत्र हुये।

सुनेत्राकान्तिमत्यौ च सुधाग्रायां बभूवतुः।
अर्पिते सादरं तेन श्रीमत्सीरध्वजाय ते॥

श्रीभूरिमेधा महाराज की श्रीसुधाग्रा महारानी से श्री शुनयना जी, श्रीकान्तिमतीजी ये दो पुत्रियाँ हुईं। उन दोनों को श्रीभूरिमेधा महाराज ने श्री सीरध्वज महाराज के लिये अर्पण कर दिये।

भूरिमेधोऽनुजः श्रीमान् ज्ञानमेधाः प्रतापवान् ।
गुणाग्रायां तु तत्पत्न्यां जातौ श्रीवीरकान्तकौ ।।

श्रीभूरिमेधा महाराजके छोटे भाई श्रीज्ञानमेधा महाराज बड़े प्रतापी हुये, उनकी गुणाग्रा महाराणी से, श्रीवीर, श्रीकान्त, ये दो पुत्र हुये ।

सुदर्शनासुभद्राख्ये तथा तस्यां बभूवतुः ।
बिवाहिते उभे पुत्र्यौ श्रीमद्दर्भध्वजेन ते ।।

तथा उन्हीं महाराणीजी से श्रीसुदर्शनाजी, श्रीसुभद्राजी ये दो पुत्रियाँ हुईं । उन दोनों का विवाह श्रीकुशध्वज-महाराज के साथ सम्पन्न हुआ ।

❁ श्रीकिशोरी जू की ननिहाल ❁

अगिनि कोनमें पुरी विकासा । उभयभ्रात नृपकरत निवासा ।
नाम भूरि मेधा जिय जानो । ज्ञान सु मेधा अपर बखानो ।।
श्रीसुधाग्रा प्रिय पटरानी । भूरि सु मेधा की जिय जानी ।।
तिन की पुत्री श्री सुनयना । अम्बा कान्ति मती पुनी भैना ।।
उभय पुत्र पुनि परम सयाने । कुंडल श्री सुमाल जिय जाने ।।
श्रीगुनग्रा दूसरि रानी । ज्ञान सु मेधा की गुण खानी ।।
सुदर्शना सुभद्रा । दोऊ सरस सकल गुण सिध्या ।।
वीर कान्ति युग पुत्र मनोहर । मामा चतुर जानु ये सुन्दर ।।
श्रीसिरध्वज नृप की जगजानी । श्री सुनयना प्रिय पटरानी ।।
कांँति मती पुनि सुभग सयानी । पतिसेवा रतिमन क्रमबानी ।
दो०-चाचा श्रीकुश ध्वज्ज के, उभय भई पटरानि ।
सुदर्शना सुभद्रा, प्रिय परम सयानि ।।

उभय पुत्र प्रिय पाय नरेशू । भे कृत कृत कछु रहेउ न शेषू ।।
श्रीलक्ष्मीनिधि और गुनाकर । परमसुहृद दोउ सरस सुछविधर
सुनिधि निधानक पुनि दोउ भ्राता । कुसध्वज नृपसुत विख्याता
अब चहुँभाइनकी जहँ व्याहा । भयउ चरित सो सुनु अवगाहा
पुरी विडालीका दक्षिन देसू । श्रीधर निवसत तहाँ नरेसू ।।
तिय सु कांतिका परम सयानी । पुत्री चतुर सुनन्दा बानी ।।
सिध्या पुनि ऊषा छबिरासी । परम प्रीति रस रहस प्रकासी ।

दो०-उभय पुत्र श्रीकान्ति धर, श्रीयसोधर भ्रात ।
दोऊ नेह निधि सरस सुचि, भयउ भूवन विख्यात ।
श्रीसिध्या को ब्याह वर, भयो लक्ष्मीनिधि साथ ।
वाणी पुनि व्याही गई, कुँवर गुणाकर हाथ ।।
ऊषा सुनिधि सु संगवर, व्याह उछाह अनूप ।
श्रीनिधानक संग सुचि, नन्दा नित्य निरूप ।।

वसो किन राजावन जनके नगरिया सुख दैया ।
मुदु मुसुकाय हरोमन मेरो डारी नेह रसरिया ।।
रसिक रमन चितवन चितचोरन मारी नैन कटिया ।
यहिपुर विच बसाय जनकपुर निकट विदेह बखरिया ।।
सनमुख महल किशोरीजु के रुचि सुचि कनक अटरिया ।
विमल चाँदनी चौक चमन की सुतरु सुगंध डगरिया ।।
सदा बसंत समीर विविध तहँ बिचरहुँ मोद बजरिया ।
ललना ललकि मिलैनित लालहिं सीयसरिस प्रियसरिया ।

सवहि सनाथ करो राज वनरे अतिप्यारी ससुररिया ।
हास विलास विविध विधि विलसहु करो परसपररिया ॥
करहि कटाक्ष सुमुख मृगनैनी सरहज मारे नजरिया ।
मौन मुदित नित अवधनगर को भेजत रहियो खबरिया ॥

मनोहर मैथिजी जू को धाम ।
मन मोहत जो मोहन जू को मंगल–मोद निधान ।
विष्णु–विरञ्चि–रहत अरुझाये ललित लतन्ह वसुयाम ।
शुक–पिक बनि सुर-वनिता कूजत, सियको नाम ललाम ।
चौदह भुवन तीनि लोकन्ह के, पावन तीर्थ तमाम ।
'प्रेमनिधी' रज कण पर वारों, जय श्री मिथिला धाम ।

मिथिला नगरिया हमर, प्राण के अधार रे ।
मिथिला नगरिया तीनू, लोक के सिंगार रे ॥
मिथिला नगरिया पै, जीवन बलिहार रे ।
मिथिला नगरिया को, लाखों नमस्कार रे ॥
मिथिला की महिमा गावैं, देव सरदार रे ।
मिथिला निवासी संत–रसिक उदार रे ॥
मिथिला न छिन भर छोड़ें दुलहा सरकार रे ।
'प्रेमनिधी' मिथिला की बोलो जयजय कार रे ।